SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वार्षिक हिंदी पत्रिका- 2025

आशीर्वद

अंक-38

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय,
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
एवं
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
कर्नाटक, बेंगलूरु – 560 001

"आशीर्वाद"

वार्षिक हिंदी पत्रिका – 2025
अंक – 38

पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री विमलेंद्र आनंद पटवर्धन, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

श्री अशोक सिन्हा, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

श्री दीपक मैथ्यूज़, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

प्रकाशन परामर्शदात्री समिति

सुश्री आर मोनिका, निदेशक (प्रशासन), प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

श्री मोहन राव सी ए, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन/प्र.नि.लेप.(केंद्रीय)

संपादक

सुश्री अदितिका, सहायक निदेशक (राजभाषा), प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

संपादक मंडल

डॉ. वंदना एस, कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

श्री यश शर्मा, कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

विशेष आभार

ई. डी. पी. अनुभाग, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) तथा प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) के सदस्य

सहयोग

राजभाषा परिवार के सदस्यगण

नोट: इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं तथा संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वयं ज़िम्मेदार हैं ।

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि 'आशीर्वाद' पत्रिका का 38 वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। पूर्व अंक की भांति इस अंक में भी कार्यालय के कार्मिकों द्वारा पत्रिका के प्रकाशन में उनकी रचनाओं के रूप में सराहनीय योगदान दिया गया है। 'आशीर्वाद' पत्रिका का उद्देश्य हमेशा से ज्ञानवर्द्धक और सुरुचिपूर्ण रचनाओं के माध्यम से हिंदी भाषा को बढ़ावा देना रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार- प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का योगदान बहुत रहता है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में भी पाठकों को उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री पढ़ने को मिलेगी।

रचनाकारों के परिश्रम और इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों के योगदान के कारण ही यह पत्रिका प्रकाशित हो पाई है। 'आशीर्वाद' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई तथा पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

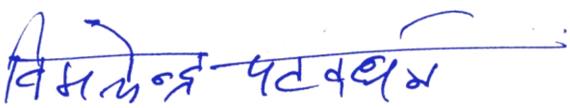

विमलेंद्र आनंद पटवर्धन

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

कार्यालयीन संयुक्त हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 38वें अंक का प्रकाशन हमारे लिए हर्ष और गर्व का विषय है। यह पत्रिका कार्यालयीन सदस्यों की रचनात्मकता का प्रतीक भी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में इस कार्यालय के कार्मिकों का योगदान प्रशंसनीय है।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु "आशीर्वाद" पत्रिका एक सशक्त मंच प्रदान करती है। आशा है कि इस कार्यालय के सभी कार्मिक स्नेहपूर्वक इस पत्रिका हेतु अपनी रुचि बनाए रखेंगे एवं राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रसार हेतु अपना योगदान पूर्व की भांति देते रहेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अशोक सिन्हा
प्रधान महालेखाकर (लेखापरीक्षा-II)
कर्नाटक, बेंगलूरु

संदेश

विभिन्न अवस्थाओं में से एक या अधिक के अनुभव करने की जो शक्ति मनुष्य में निहित होती है वह संवेदना कहलाती है। साहित्य के मूल में संवेदना ही कार्य करती है। जिस प्रकार संगीतकार अपनी अनुभूतियों को संगीत के माध्यम से व्यक्त करता है, जिस प्रकार एक चित्रकार अपने विचारों को चित्रों के द्वारा जन्म देता है उसी प्रकार एक साहित्यकार अपने अंतर्मन की भावनाओं को साहित्य के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करता है।

भाषा मनुष्य के विचारों को अभिव्यक्त करने का कार्य करती है। भाषा के माध्यम से जन्म लेने वाला सहित्य समाज का दर्पण कहलाता है क्योंकि साहित्य के द्वारा किसी भी समाज की विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान हमें प्राप्त होता है। वह मनुष्य को मनुष्य से, अतीत को वर्तमान से, शब्द को अर्थ से जोड़ने का कार्य करता है। रूप जैसा भी हो, विधा जो भी हो, संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए साहित्य से अधिक सशक्त दूसरा कोई माध्यम नहीं है।

"आशीर्वाद" इस दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास है। चाहे ये कृतियाँ वास्तविक हों या काल्पनिक, शब्दों में छुपे अर्थ को समझने में यदि पाठकगण सफल हुए तो वही हमारे लिए आपका 'आशीर्वाद' होगा।

पत्रिका के 38वें अंक के सफल प्रकाशन में सतत योगदान देने वाले राजभाषा कार्मिकों तथा आशीर्वाद को राह दिखाने वाले लेखक व पाठकगण को अंतहीन आभार......

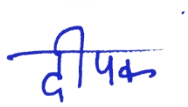

दीपक मैथ्यूज़

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)

बेंगलूरु

संदेश

किसी व्यक्ति के लिए अपनी भावनाओं, इच्छाओं, अनुभवों और विचारों को व्यक्त करने हेतु भाषा आवश्यक है। जब ये अभिव्यक्तियाँ भाषा के माध्यम से लिपिबद्ध होती हैं तो साहित्यिक कृतियाँ जन्म लेती हैं। सांस्कृतिक मूल्य, परंपराएँ, विश्वास भी भाषा के माध्यम से ही हस्तांतरित होते हैं। इस प्रकार, भाषा पीढ़ियों को जोड़ने का कार्य करती है। मनुष्य की आंतरिक भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाली इस ललित कला को साहित्य कहा जाता है। साहित्यिक सृजन एक चमत्कार है जो मानव आत्मा को आनंद और शांति प्रदान करता है। यह हमें एक समुदाय के अंग के रूप में जोड़ने और एकजुट करने का कार्य करता है।

जैसे-जैसे समाज के विकास की गति बढ़ी है, व्यस्तता से घिरे जीवन में, आंतरिक चिंतन और रचनात्मकता को दिशा देने के लिए समय निकालना और भी महत्वपूर्ण हो गया है। 'आशीर्वाद' उन विचारों का एक ऐसा ही प्रतिबिंब है जो लोगों ने अपने जीवन के कुछ रचनात्मक क्षणों में लिखे थे। मुझे आशा है कि यह पत्रिका हमें एक साथ लाएगी।

हमारे कार्यालय के सभी कर्मचारियों को धन्यवाद जिनकी अनुपस्थिति में यह कभी संभव नहीं होता। इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी लोगों को बधाई....

शुभकामनाओं सहित.......

आर. मोनिका

आर. मोनिका

निदेशक/प्रशासन

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

साहित्य मानव जीवन का अमूल्य हिस्सा है जो हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराता है। भूत, वर्तमान और भविष्य के साथ-साथ वह कला, संस्कृति आदि को भी दर्शाता है। समाज में मौजूद विविधताएं, जीवन-दृष्टियाँ उसमें संरक्षित होती हैं। समाज का दर्पण, समाज का प्रतिबिंब आदि होने के साथ-साथ वह समाज के दीपक के रूप में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी वस्तु-स्थिति का यथावत् चित्रण करना साहित्य नहीं है, बल्कि ये वे सृष्टियाँ होती हैं जिनमें कल्पनाएँ, संवेदनाएं तथा ज्ञान जैसे विषय सम्मिलित होते हैं। जैसे कि लेखक बालकृष्ण भट्ट ने कहा है- "साहित्य जन समूह के हृदय का विकास है।"

मेरे लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि 'आशीर्वाद' पत्रिका के 38वें अंक का संपादकीय लिखने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। पूर्व की भांति इस अंक में भी विविधता, कल्पना, जीवनानुभवों का सम्मिश्रण आपको दृष्टिगत होगा। राजभाषा के प्रति कार्यालय के सदस्यों की रुची के दर्पण रूपेण हम यह पत्रिका आपको समर्पित कर रहे हैं। 'आशीर्वाद' इस वर्ष में घटित विशेष कार्यक्रमों, प्रसंगों तथा उपलब्धियों को भी दर्शाती है जिन्हें कैमरा में कैद तस्वीरों के माध्यम से पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

मैं पत्रिका के माध्यम से सभी उच्चाधिकारियों, कार्यालय में तैनात राजभाषा कर्मियों तथा कार्यालय में पदस्थ उन सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपनी सृजनाओं तथा सतत सहयोग से 'आशीर्वाद' को काया प्रदान की। राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रति आप सभी का समर्पण निश्चित रूप से पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के प्रति इंगित करता है। हम संपूर्ण रूप से यह विश्वास करते हैं कि यह पत्रिका जीवन के अनेक इलाकों पर प्रकाश डालेगी।

अब प्रतीक्षा है आपके बहुमूल्य सुझावों व सकारात्मक मार्गदर्शन की..........

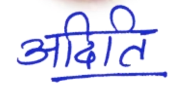

अदितिका

सहायक निदेशक (राजभाषा)

मुख पृष्ठ में वह पक्षी है जो बया बर्ड के नाम से जाना जाता है। यह हल्के पीले रंग की बया बुनकर प्रजाति का नन्हा सा पक्षी घास के छोटे-छोटे तिनकों और पत्तियों से बुनकर लालटेन की तरह लटकता बेहद ही खुबसूरत घोंसले का निर्माण करती है। इसी कुशलता के कारण इसे 'बुनकर पक्षी' या 'पक्षियों का इंजीनियर' भी कहा जाता है।

गियर: निकॉन डी7500+200-500 मिमी लेंस
स्थान: हेस्सरघट्टा चरागाह, बेंगलूरु

छायाकार का परिचय

श्री गिरजेश कुमार कोठीवाला, स.लेप.अ. जयपुर, राजस्थान से हैं तथा प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, कर्नाटक में कार्यरत हैं। उनका जीवन प्रकृति की खोज और उससे जुड़ाव के जुनून से प्रेरित है। उनका सपना भारत के सभी राष्ट्रीय उद्यानों और केन्या के मसाई मारा जैसे विदेशों के कुछ प्रतिष्ठित उद्यानों की यात्रा करना है। यात्रा के प्रति अपने प्रेम के साथ-साथ वे वन्यजीवों का गहरा सम्मान करते हैं। उनके इस चित्र ने राष्ट्रीय लेखापरीक्षा एवं लेखा अकादमी, शिमला द्वारा आयोजित प्रतियोगिता "अभिव्यक्ति" में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। उनको शुभकामनाएं।

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह

50

(1975-2025)

राजभाषा – भारतीयभाषाणां मैत्रीसूत्रम्

साबरमती आश्रम

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी

राजभाषा सम्मेलन, 2024 में अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना

राजभाषा हीरक जयंती के अवसर पर स्मारक डाक टिकट का विमोचन

‘आशीर्वाद’ 37वें संस्करण हेतु विभिन्न कार्यालयों से प्राप्त प्रशंसा पत्र जो हमारा मनोबल बढ़ाने का कार्य करते हैं।

सभी का तहे दिल से आभार

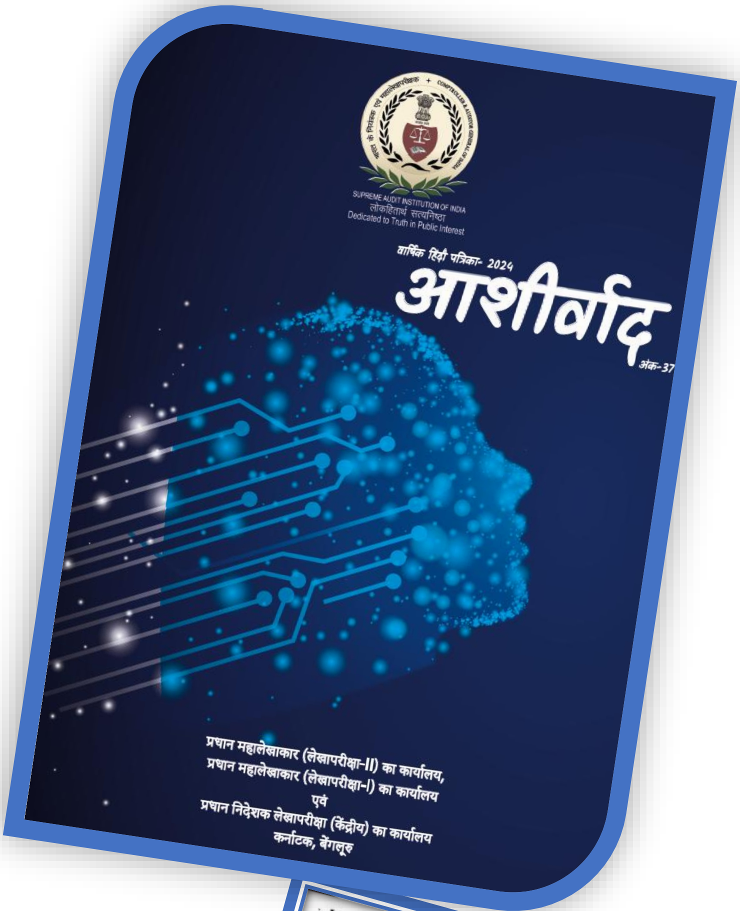

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	शीर्षक	विधा	लेखक	पृष्ठ सं.
1)	क्षितिज तथा गहरा होगा	कविता	अमित मोहन झा	1
2)	विनाश से नवनिर्माण तक	कहानी	मयंक कुमार मयंक	3
3)	मातृभाषा	कविता	संजीव चन्द्र पाठक	6
4)	गड़िया लोहार-भारत की घुमंतू प्रजाति	लेख	सोनाक्षी सक्सेना	7
5)	शिक्षा समृद्धि का संकेत	कविता	नीरज कुमार	10
	ऑडिट दिवस 2023			12
6)	युवाओं के लिए योग का महत्व	लेख	कुमार अभिषेक	15
7)	एक जिम्मेदार बेटा	लेख	अर्चना प्रजापति	20
8)	करने से पहले	कविता	रेजिना जॉर्ज	22
9)	धर्मस्थल (आस्था या पिकनिक स्थल)	लेख	साधना सिंह	24
10)	[illegible]	कविता	मयंक कुमार मयंक	26
	विभिन्न गतिविधियाँ 2023-24			28
11)	संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार	लेख	ओम कुमार [illegible]	31
12)	सच्चा मित्र	कहानी	सोनाक्षी सक्सेना	37
13)	क्या लिखूं	कविता	अमित मोहन झा	41
14)	मताधिकार	कविता	संजीव चन्द्र पाठक	42
15)	आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता	लेख	कुमार अभिषेक	44
	सांस्कृतिक कार्यक्रम 2023-24			46
16)	अनुशासन का महत्व	लेख	काजल	50
17)	मेरा गाँव उदास रहता है	कविता	देव प्रकाश गुप्ता	52
18)	[illegible]	कहानी	रेजिना जॉर्ज	56
19)	जंग में उमंग जिंदगी	कविता	आर संदीप सिंह	58
20)	[illegible]	कविता	अपर्णा कुमारी	60
21)	हिंदी पखवाड़ा 2023 की झलकियाँ			62
22)	हिंदी पखवाड़ा 2023 का परिणाम			65
23)	सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची			69

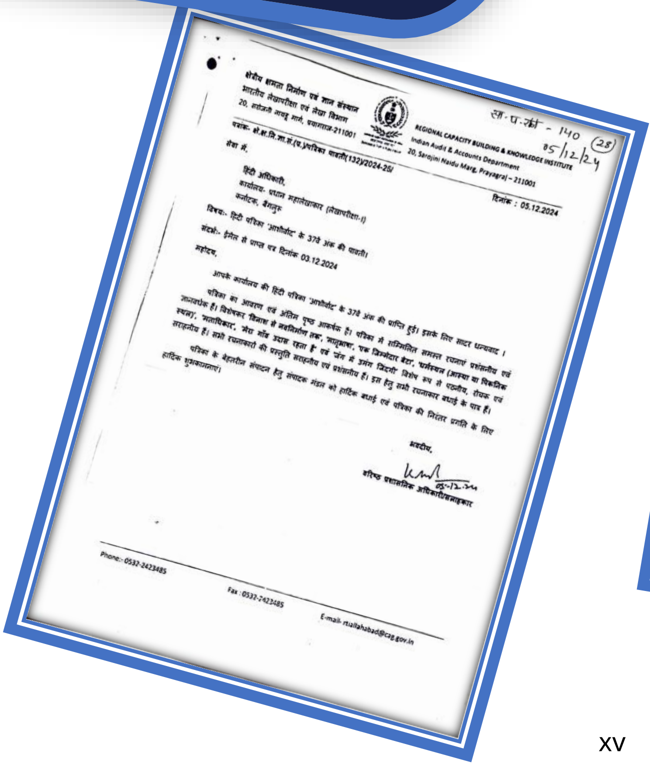

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

सा-प-रजी - 140 (28) 05/12/24

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प.)/पत्रिका पावती(132)/2024-25/

दिनांक : 05.12.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी,
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय:- हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 03.12.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की प्राप्ति हुई। इसके लिए सादर धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण एवं अंतिम पृष्ठ आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर 'विनाश से नवनिर्माण तक', 'मातृभाषा', 'एक जिम्मेदार बेटा', 'धर्मस्थल (आस्था या पिकनिक स्थल)', 'मताधिकार', 'मेरा गाँव उदास रहता है' एवं 'जंग में उमंग जिंदगी' विशेष रूप से पठनीय, रोचक एवं सराहनीय है। सभी रचनाकारों की प्रस्तुति सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। इस हेतु सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

05-12-24
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/प्रशासक

Phone: 0532-2423485 Fax : 0532-2423485 E-mail- rtiallahabad@cag.gov.in

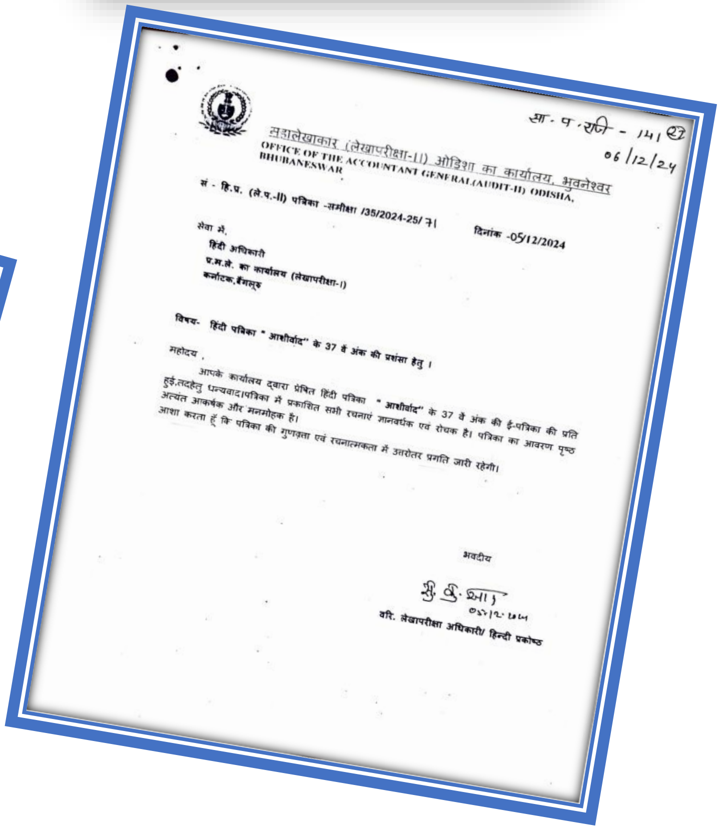

सा-प-रजी - 141 (27) 06/12/24

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) ओडिशा का कार्यालय, भुवनेश्वर
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL(AUDIT-II) ODISHA,
BHUBANESWAR

सं - हि.प्र. (ले.प.-II) पत्रिका -समीक्षा /35/2024-25/ 71

दिनांक -05/12/2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
प्र.म.ले. का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I)
कर्नाटक,बेंगलूरु

विषय- हिंदी पत्रिका " आशीर्वाद" के 37 वें अंक की प्रशंसा हेतु ।

महोदय ,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका " आशीर्वाद" के 37 वें अंक की ई-पत्रिका की प्रति हुई,तदहेतु धन्यवाद।पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोतर प्रगति जारी रहेगी।

भवदीय

05/12/2024
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिन्दी प्रकोष्ठ

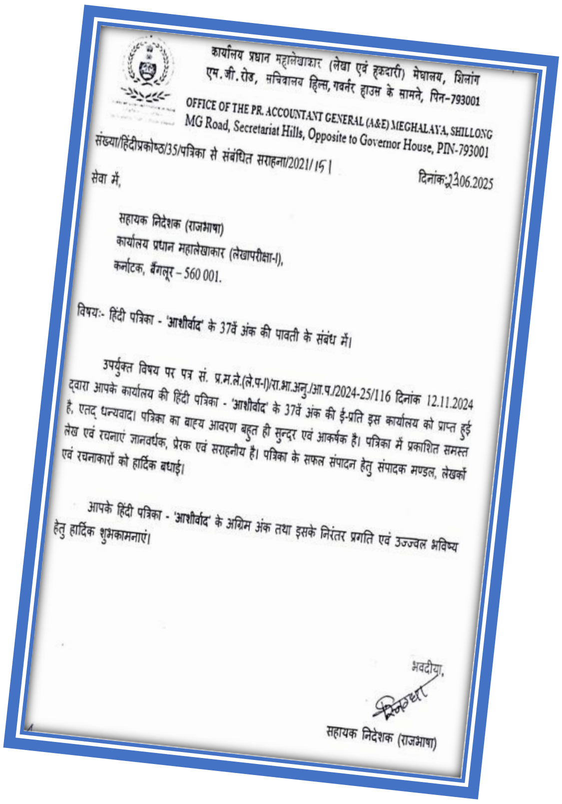
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग
एम.जी. रोड, सचिवालय हिल्स, गवर्नर हाउस के सामने, पिन-793001
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (A&E) MEGHALAYA, SHILLONG
MG Road, Secretariat Hills, Opposite to Governor House, PIN-793001

संख्या/हिंदीप्रकोष्ठ/35/पत्रिका से संबंधित सराहना/2021/15।

दिनांक: 23.06.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
कर्नाटक, बैंगलूर – 560 001.

विषय:- हिंदी पत्रिका - 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की पावती के संबंध में।

उपर्युक्त विषय पर पत्र सं. प्र.म.ले.(ले.प-I)/रा.भा.अनु./आ.प./2024-25/116 दिनांक 12.11.2024 द्वारा आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका - 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, एतद् धन्यवाद। पत्रिका का बाह्य आवरण बहुत ही सुन्दर एवं आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख एवं रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरक एवं सराहनीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल, लेखकों एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

आपके हिंदी पत्रिका - 'आशीर्वाद' के अग्रिम अंक तथा इसके निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

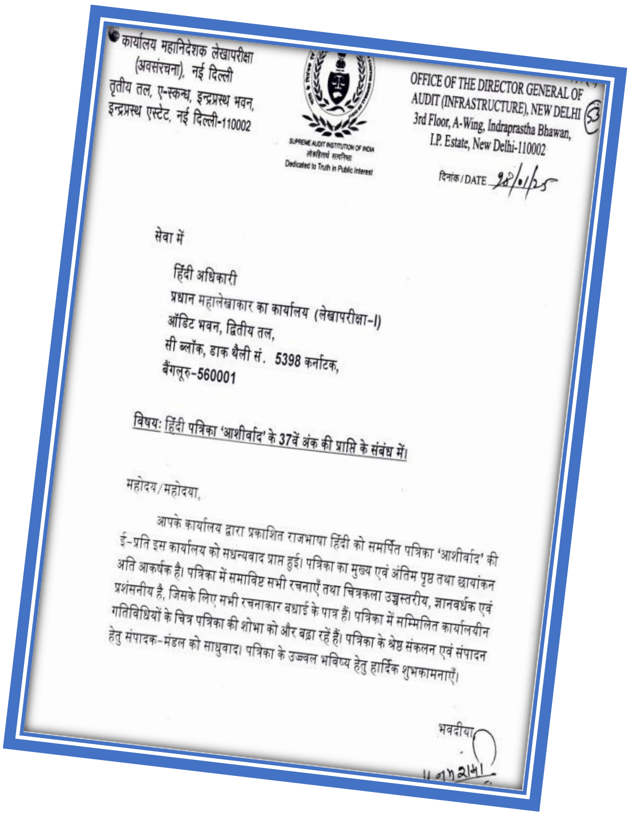
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(अवसंरचना), नई दिल्ली
तृतीय तल, ए-स्कन्ध, इन्द्रप्रस्थ भवन,
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (INFRASTRUCTURE), NEW DELHI
3rd Floor, A-Wing, Indraprastha Bhawan,
I.P. Estate, New Delhi-110002

दिनांक / DATE 28/01/25

सेवा में

हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I)
ऑडिट भवन, द्वितीय तल,
सी ब्लॉक, डाक थैली सं. 5398 कर्नाटक,
बैंगलूरु-560001

विषय: हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी को समर्पित पत्रिका 'आशीर्वाद' की ई-प्रति इस कार्यालय को सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका का मुख्य एवं अंतिम पृष्ठ तथा छायांकन अति आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ तथा चित्रकला उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय है, जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहे हैं। पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन एवं संपादन हेतु संपादक-मंडल को साधुवाद। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

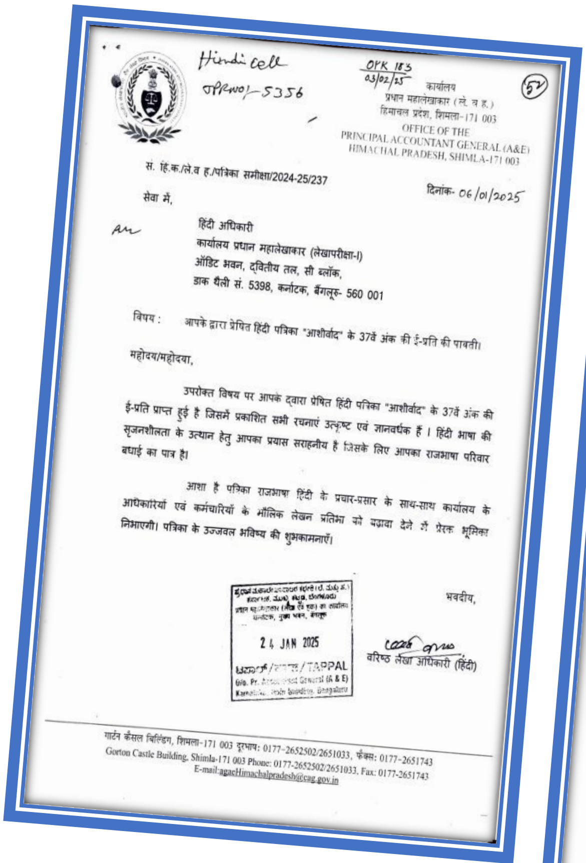
Hindi cell

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

सं. हिं.क./ले.व ह./पत्रिका समीक्षा/2024-25/237

दिनांक- 06/01/2025

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ऑडिट भवन, द्वितीय तल, सी ब्लॉक,
डाक थैली सं. 5398, कर्नाटक, बैंगलूरु- 560 001

विषय : आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की ई-प्रति की पावती।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

24 JAN 2025

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला-171 003 दूरभाष: 0177-2652502/2651033, फैक्स: 0177-2651743
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2652502/2651033, Fax: 0177-2651743
E-mail: agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

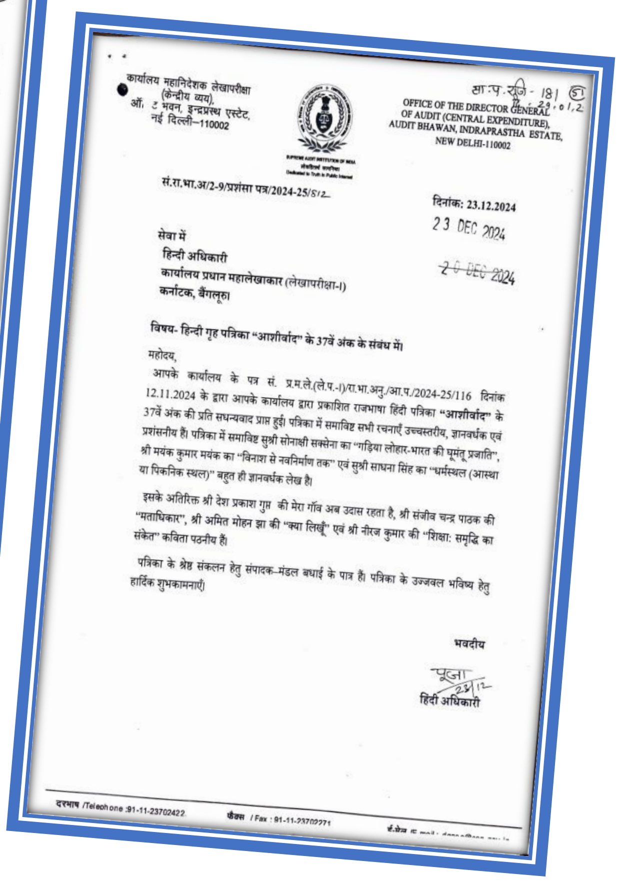
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
(केन्द्रीय व्यय),
ऑ. ट भवन, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट,
नई दिल्ली—110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL EXPENDITURE),
AUDIT BHAWAN, INDRAPRASTHA ESTATE,
NEW DELHI-110002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2024-25/812

दिनांक: 23.12.2024

सेवा में
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
कर्नाटक, बैंगलूरु।

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय के पत्र सं. प्र.म.ले.(ले.प.-I)/रा.भा.अनु./आ.प./2024-25/116 दिनांक 12.11.2024 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट सुश्री सोनाक्षी सक्सेना का "गड़िया लोहार-भारत की घूमंतू प्रजाति", श्री मयंक कुमार मयंक का "विनाश से नवनिर्माण तक" एवं सुश्री साधना सिंह का "धर्मस्थल (आस्था या पिकनिक स्थल)" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्री देश प्रकाश गुप्त की मेरा गॉव अब उदास रहता है, श्री संजीव चन्द्र पाठक की "मताधिकार", श्री अमित मोहन झा की "क्या लिखूँ" एवं श्री नीरज कुमार की "शिक्षा: समृद्धि का संकेत" कविता पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

दूरभाष /Telephone : 91-11-23702422 फैक्स / Fax : 91-11-23702271

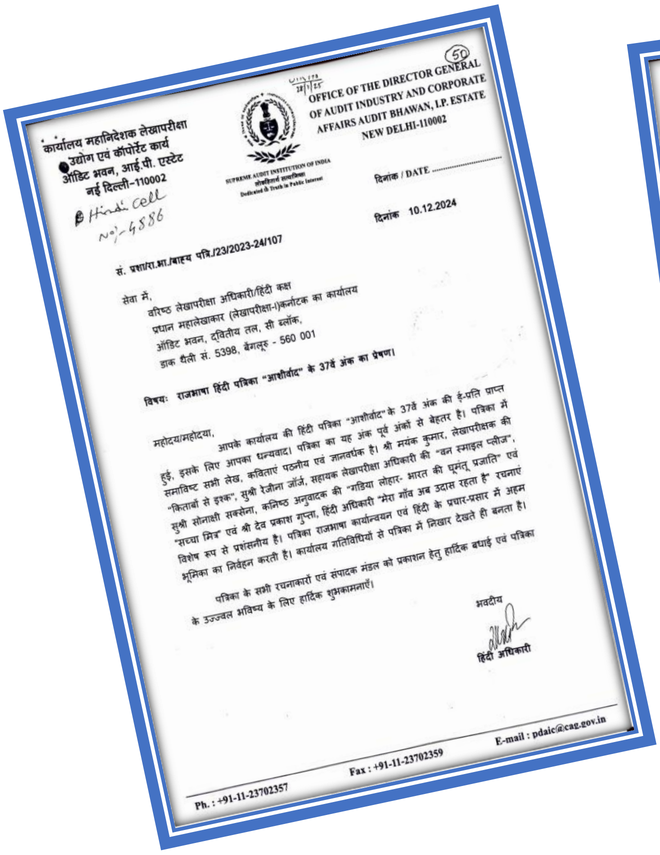

(50)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली–110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL
OF AUDIT INDUSTRY AND CORPORATE
AFFAIRS AUDIT BHAWAN, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110002

Hindi Cell
No.-4886

दिनांक / DATE ......

दिनांक 10.12.2024

सं. प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2023-24/107

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)कर्नाटक का कार्यालय
ऑडिट भवन, द्वितीय तल, सी ब्लॉक,
डाक थैली सं. 5398, बैंगलूरु - 560 001

विषयः राजभाषा हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए आपका धन्यवाद। पत्रिका का यह अंक पूर्व अंकों से बेहतर है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्री मयंक कुमार, लेखापरीक्षक की "किताबों से इश्क", सुश्री रेजीना जॉर्ज, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की "वन स्माइल प्लीज", सुश्री सोनाक्षी सक्सेना, कनिष्ठ अनुवादक की "गडिया लोहार- भारत की घूमंतू प्रजाति" एवं "सच्चा मित्र" एवं श्री देव प्रकाश गुप्ता, हिंदी अधिकारी "मेरा गाँव अब उदास रहता है" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका का निर्वहन करती है। कार्यालय गतिविधियों से पत्रिका में निखार देखते ही बनता है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

हिंदी अधिकारी

Ph. : +91-11-23702357 Fax : +91-11-23702359 E-mail : pdaic@cag.gov.in

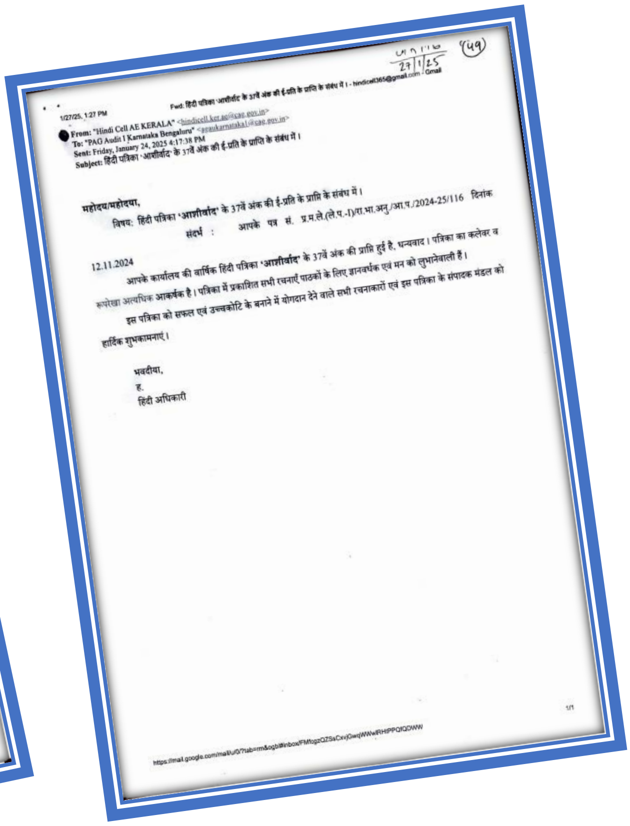

27/1/25 (49)

1/27/25, 1:27 PM Fwd: हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की ई-प्रति के प्राप्ति के संबंध में। - hindicell365@gmail.com - Gmail

From: "Hindi Cell AE KERALA" <hindicell.ker.ae@cag.gov.in>
To: "PAG Audit I Karnataka Bengaluru" <agaukarnataka1@cag.gov.in>
Sent: Friday, January 24, 2025 4:17:38 PM
Subject: हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की ई-प्रति के प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

विषय: हिंदी पत्रिका **'आशीर्वाद'** के 37वें अंक की ई-प्रति के प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ : आपके पत्र सं. प्र.म.ले.(ले.प.-I)/रा.भा.अनु./आ.प./2024-25/116 दिनांक 12.11.2024

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका **'आशीर्वाद'** के 37वें अंक की प्राप्ति हुई है, धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मन को लुभानेवाली हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि के बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,
ह.
हिंदी अधिकारी

https://mail.google.com/mail/u/0/?tab=rm&ogbl#inbox/FMfcgzQZSsCxvjGwqWWwlRHPPQtQDWW 1/1

OPR 175
27/1/25 (48)

महानिदेशक, लेखापरीक्षा(केंद्रीय) का कार्यालय, हैदराबाद
शाखा कार्यालय– उप निदेशक / सी आर ए, ओडिशा , भुवनेश्वर
Office of the Director General of Audit (Central), Hyderabad Branch Office: Dy. Director/CRA, Odisha, Bhubaneswar

पत्रांक- हिंदी प्रकोष्ठ/सी.आर.ए./राजभाषा/पत्रिका पावती/2023-24/02/05 दिनांक- 24/01/2025

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय(लेखापरीक्षा-I),
कर्नाटक, बैंगलूरू

विषय- कार्यालयीन हिंदी पत्रिका **"आशीर्वाद"** के 37वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका **"आशीर्वाद"** के 37वें अंक (ई-प्रति) की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका मे निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
24/01/2025
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी प्रकोष्ठ

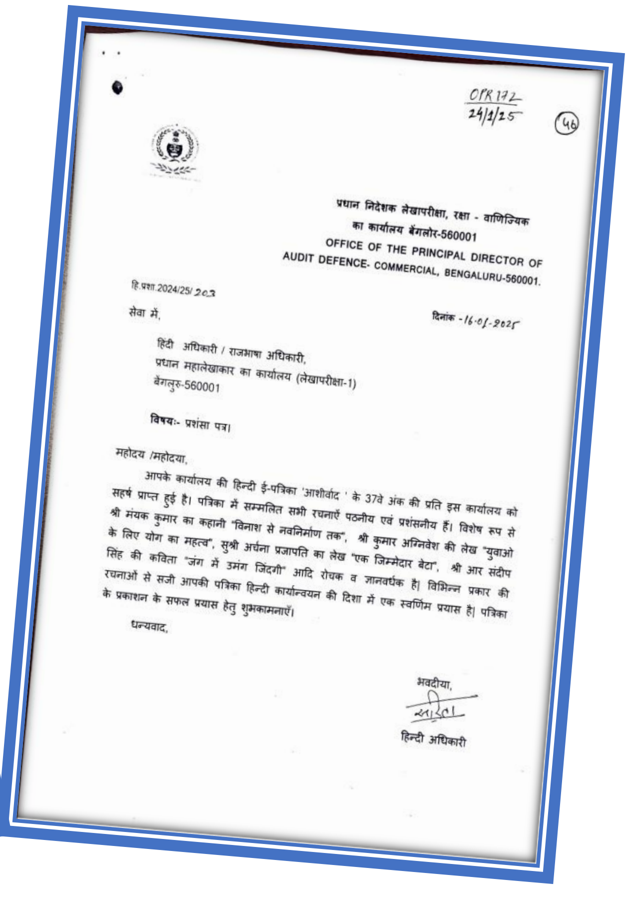

OPR 172
24/1/25 (46)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा - वाणिज्यिक का कार्यालय बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

हि.प्रशा.2024/25/203

सेवा में, दिनांक -16-01-2025

हिंदी अधिकारी / राजभाषा अधिकारी,
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-1)
बेंगलुरु-560001

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'आशीर्वाद ' के 37वे अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री मंयक कुमार का कहानी "विनाश से नवनिर्माण तक", श्री कुमार अग्निवेश की लेख "युवाओ के लिए योग का महत्व", सुश्री अर्चना प्रजापति का लेख "एक जिम्मेदार बेटा", श्री आर संदीप सिंह की कविता "जंग में उमंग जिंदगी" आदि रोचक व ज्ञानवर्धक है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,
हिन्दी अधिकारी

हिंदीकक्ष/पत्रिकाऔरपावती/2024-25/36(2)   OPR 167 20/1/25   (44)   1/819877/2024

महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले.(ले.व.ह.)/हिं.क./2024-25/147   दिनांक :16.12.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I)
कर्नाटक, बेंगलूरु

विषय: हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय है। विशेष रूप से:- सुश्री काजल का लेख **'अनुशासन का महत्व'**, श्री मयंक कुमार मयंक की कहानी **'विनाश से नवनिर्माण तक'**, सुश्री रेजिना जॉर्ज की कहानी **'वन स्माइल प्लीज'**, श्री अमित मोहन झा की कविता **'क्षितिज नया गढ़ना होगा'**, श्री संजीव चन्द्र पाठक की कविता **'मातृभाषा'**, प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय
Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 17-12-2024 11:33:32

(उदय प्रताप सिंह)
हिंदी अधिकारी

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

S P   OPR 166 7/1/25   (42)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) बिहार
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना 800001

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant
General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800001.

पत्रांक: हि.अ./ले.प./प्रतिभाव-3/60/2024-25/173   दिनांक 01/01/2025

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय(लेखापरीक्षा-I) कर्नाटक,
बंगलुरु-560001

विषय: हिन्दी ई-पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37 वें अंक का प्रतिभाव।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। संस्कृति, पर्यावरण संरक्षण तथा अन्य सामाजिक सरोकार से संबंधित सभी रचनाएं पाठकों को आकर्षित करती हैं। विशेषकर संजीव चंद्र पाठक, देव प्रकाश गुप्त एवं अपर्णा कुमारी की कविताएं क्रमशः "मातृभाषा", "मेरा गाँव उदास रहता है" एवं "वृक्षारोपण" बहुत ही रोचक एवं शिक्षाप्रद है। कुमार अग्निवेश एवं ओम कुमार अड़लक का लेख क्रमशः "आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमता" एवं "संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार" और सोनाक्षी सक्सेना एवं मयंक कुमार मयंक की कहानियाँ क्रमशः "सच्चा मित्र" एवं "विनाश से नवनिर्माण तक" उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं भविष्य में पत्रिका के निर्विघ्न सम्पादन के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
MANOJ KUMAR NO. 1
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिन्दी अनुभाग

OPR 169 21/1/25   (45)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हक.)
जीरो पॉईन्ट, विधान सभा के पास,
बलौदा बाजार रोड,
रायपुर, छत्तीसगढ़ - 492005

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E)
ZERO POINT, NEAR VIDHAN SABHA,
BALODA BAZAR ROAD,
RAIPUR, CHHATTISGARH - 492005

सं. हिं. अनु./पत्रिका पावती/2025/100   दिनांक / Date 20.01.2025

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I), कर्नाटक, बैंगलूरू
ऑडिट भवन, द्वितीय तल, सी ब्लॉक
डाक थैली सं. 5398,
बैंगलूरू - 560 001

विषय: हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक के पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय के संदर्भ में ई-मेल से प्राप्त पत्र सं. प्र.म.ले.(ले.प-I)/रा.भा.अनु./आ.प./2024-25/116 दिनांक 12/11/2024 के अंतर्गत हिन्दी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सादर धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, समाहित चित्र एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं चिताकर्षक है। पत्रिका प्रकाशन द्वारा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में ज्ञान और रोचकता का समावेश है।

रचनाओं में विशेषतः श्री अमित मोहन झा की कविता 'क्षितिज नया गढ़ना होगा', श्री नीरज कुमार की कविता 'शिक्षा: समृद्धि का संकेत', श्री ओम कुमार अड़लक की रचना 'संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार', तथा श्री कुमार अग्निवेश की रचना 'आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमता' रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय रचनाएँ हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त रचनाकार तथा संपादक मंडल को बधाई सहित पत्रिका 'आशीर्वाद' के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

इसे उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीय,
20/01/25
(यशवंत वर्मा)
हिन्दी अधिकारी

Tel.:+91-771-2285954   Fax :+91-771-2282607   E-mail : agaechhattisgarh@cag.gov.in

---

OPR 165 2/1/25   (41)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL
(AUDIT) CHHATTISGARH, RAIPUR

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्र./हिन्दी कक्ष/पावती/2024-25/जा 439   दिनांक/Date 26-12-2024

प्रति,

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I), कर्णाटक, बेंगलुरु
ऑडिट भवन: तृतीय तल,सी ब्लॉक,डाक थैली सं.5398,
बेंगलुरु-560001

विषय:- हिंदी पत्रिका **"आशीर्वाद"** के 37वें अंक की ई-प्रति के संबंध में।
संदर्भ :- सं.प्र.म.ले.(ले.प.-I)/रा.भा.अनु./आ.प./2024-25/116 दिनांक 12/11/2024

महोदया/महोदय

आपके कार्यालय द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **"आशीर्वाद"** के 37वें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

26.12.2024
(वीरेंद्र कुमार पटेल)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

2/1/25

पोस्ट – विधान सभा, जीरो पॉइंट, रायपुर, छत्तीसगढ़ – 492005
Post- Vidhan Sabha, Zero Point, Raipur, Chhattisgarh – 492005
फोन/Phone: 0771-2281401   फैक्स/Fax : 2582505   ईमेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

22140

OPR 163
02/01/25 (40)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
टेलीफ़ोन नं/Phone No.: 044-24324530 फ़ैक्स नं/Fax No.: 044-24320562
ई-मेल/Email: **agaetamilnadu@cag.gov.in**

सं. हिंदी कक्ष/ Hindi Cell /प्र.प./A.L/2024-25/ 38782

दिनांक: 23.12.2024

सेवा में,	To,
हिंदी अधिकारी प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)-I कर्नाटक, बैंगलूरु - 560001	The Hindi Officer Office of the Principal Accountant General (Audit)-I Karnataka, Bengaluru - 560001

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र - संबंधी

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37 वे अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका मे सम्मलित सभी रचनाएँ पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा मे एक स्वर्णिम प्रयास है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

21/1/25

भवदीया

हिन्दी अधिकारी

OPR 159
26/12/24 (36)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक- हि.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/ I/823694/2024 दिनांक:23-12-2024

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
कर्नाटक, बैंगलूरू-560001

विषय: हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "आशीर्वाद" के 37वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर श्री मयंक कुमार मयंक की "विनाश से नवनिर्माण तक" सुश्री सोनाक्षी सक्सेना की "सच्चा मित्र" एवं श्री कुमार अग्रिवेश की "आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

Digitally signed by
Ekta
Date: 23-12-2024 12:50:4

OPR 159
26/12/24 (36)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक- हि.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/ I/823694/2024 दिनांक:23-12-2024

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I)
कर्नाटक, बैंगलूरू-560001

विषय: हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित "आशीर्वाद" के 37वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं विशेषकर श्री मयंक कुमार मयंक की "विनाश से नवनिर्माण तक" सुश्री सोनाक्षी सक्सेना की "सच्चा मित्र" एवं श्री कुमार अग्रिवेश की "आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता" आदि रचनाएँ अत्यंत मनोहर हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया

EKTA
(हिंदी अधिकारी)

Digitally signed by
Ekta
Date: 23-12-2024 12:50:4

सा-प-पंजि - 155
18/12/24
(35)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 94 दिनांक 16.12.2024

प्रति,

हिन्दी अधिकारी/राजभाषा अनुभाग
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-I)
कर्नाटक, बैंगलूरु-560001

विषय : हिन्दी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की पावती बाबत।
संदर्भ : आपके पत्र सं.प्र.म.ले.(ले.प.-I)/रा.भा.अनु./आ.प./2024-25/116 दिनांक 12.11.2024

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "आशीर्वाद" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर विनाश से नवनिर्माण तक, गड़िया लोहार-भारत की घुमंतू प्रजाति, युवाओं के लिए योग का महत्व, संयुक्त परिवार एवं एकल परिवार , सच्चा मित्र, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष

1/816605/2024
सा.प.रजि-152
17/12/24

सं/हिंदीअनुभाग/वाह्यपत्रिकाओंपरप्रतिक्रिया//2022-23

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/20/2024-25/जा.क्र. दिनांक: /12/2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)-I
कर्नाटक, बैंगलुरु

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्रं	नाम	रचनाएँ
1.	सुश्री अर्चना प्रजापति, स.ले.प.अ.	एक जिम्मेदार बेटा
2.	सुश्री सोनाक्षी सक्सेना, क. अनुवादक	सच्चा मित्र
3.	श्री संजीव चन्द्र पाठक, स.ले.प.अ.	मताधिकार
4.	श्री मयंक कुमार मयंक, लेखापरीक्षक	किताबों से इश्क

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीय,
हस्ता/-
प्रभारी हिंदी अधिकारी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक थैली क्र.220, सिविल लाइंस, नागपुर – 440001
'Audit Bhavan', Post Bag No.220, Civil Lines, Nagpur - 440001
दूरभाष/Telephone - 0712-2564506 to 2564508
Website : cag.gov.in/ag/nagpur/en
e-mail : agaumaharashtra2@cag.gov.in

सा.प.रजि-149
16/12/2

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा (II), पश्चिम बंगाल
सीजीओ कॉम्प्लेक्स (5वीं मंजिल), डीएफ-ब्लॉक, सेक्टर-I
सॉल्ट लेक सिटी
कोलकाता - 700 064

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL, AUDIT (II), WEST BENGAL
CGO COMPLEX (5TH FLOOR), DF-BLOCK, SECTOR-I
SALT LAKE CITY
KOLKATA – 700 064

संख्या:- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/145
No. – H.C/P. P/

03 DEC 2024 दिनांक 03/12/2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I),
कर्नाटक, बैंगलूरु-560001

To,
The Hindi Officer
Office of the Pr. Accountant General (Audit-I),
Karnataka, Bengaluru-560001

विषय: कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'आशीर्वाद' के 37वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित 'आशीर्वाद' के 37वें अंक के ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही साथ पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं और लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगी वो हैं- सच्चा मित्र, एक जिम्मेदार बेटा, करने से पहले, मेरा गाँव उदास रहता है तथा जंग में उमंग जिंदगी आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
सुप्रिय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ हिंदी कक्ष

Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2334-7854, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

---

सा.प.रजि-146
10/12/24

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा,
प्लाट नं. 5, सैक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग,
चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA,
PLOT NO.5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG,
CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/323 **दिनांक/Dated: 10.12.2024**

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा-1)
कर्नाटक,बैंगलुरु

विषय - **हिंदी पत्रिका आशीर्वाद के 37वें अंक की ई-प्रति के संबंध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें संस्करण" की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय और रुचिकर हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

Admn/रा.भा./05(671)/2022-23
1/817195/2024
सा.प.रजि-145
12/12/24

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

पत्रांक सं.: प्र.म.नि.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं. 82047/2024-25/ I/817195/2024 दिनांक: 12-12-2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा - I) कर्नाटक,
बैंगलूरु – 560001

विषय - हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "आशीर्वाद" के 37वें अंक की ई- प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं "मातृभाषा", "आधुनिक युग में कृत्रिम बुद्धिमता" एवं "अनुशासन का महत्व" ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं पठनीय हैं| पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनायें अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rajesh Kumar Swyambhu
Date: 12-12-2024 16:46:42
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी.सी.-35-वी-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.) दूरभाष :0522-2970789, फैक्स :0522-2970780 (प्र.नि.)
3rd Floor, Audit Bhawan, T.C.-35-V-1, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.) Phone: 0522-2970789, Fax: 0522-2970780 (PD)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	शीर्षक	रचनाकार (श्री/सुश्री)	विधा	पृष्ठ संख्या
1	कोशिश	प्रियंका संजीव सिंह	लेख	1
2	यूपीएस-एनपीएस और मेरी कहानी	रवि प्रकाश	लेख	6
3	मानसिक स्वास्थ्य	आरती प्रिया दर्शनी	लेख	8
4	भारत में शिक्षा	कुमार अग्निवेश	लेख	10
5	डिजिटल युग में नैतिकता की भूमिका	प्रसाद पी जोशी	लेख	15
6	खाली दिमाग- एक रचनात्मक ज़रूरत	मयंक कुमार 'मयंक'	लेख	17
7	हिमालय की गोद में पाँच दिन	ओम कुमार अड़लक	लेख	20
8	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	आरती प्रिया दर्शनी	लेख	25
9	भारत में महिला सशक्तीकरण	प्रीति कुमारी, पत्नी- कुमार अग्निवेश	लेख	27
10	मिथिला-एक परिचय	संजीव चंद्र पाठक	लेख	33
11	एक जीवन-कई पड़ाव	शिव शंकर	लेख	35
12	बेंगलूरु की मानसून यात्रा	विजय कुमार	लेख	40
13	पूर्वी हिमालय की गूँज	प्रियंका करमाकर	लेख	42
14	भारतीय समाज में कृषकों की स्थिति	कुमार अग्निवेश	लेख	44
15	दुलारी बेटी	ज्योत्सना, सुपुत्री-रंजन कुमार	लेख	48
16	कायर राजा	शिखा, पत्नी-रंजन कुमार	लेख	51
17	आज की शिक्षा	प्रसाद पी जोशी	लेख	53
18	छठ पूजा	आरती प्रिया दर्शनी	लेख	56
19	महिला जीवन	साधना सिंह	लेख	58
20	लक्ष्य निर्धारण का महत्व	मयंक कुमार 'मयंक'	लेख	60
21	सच का होगा क्रूर श्राद्ध	अमित मोहन झा	कविता	63
22	चुनाव	संजीव चंद्र पाठक	कविता	65
23	नारी तुम अबला नहीं	गजे सिंह 'अंजाना'	कविता	67
24	कटाक्ष	रेजीना जॉर्ज	कविता	69
25	नदी-जीवन की धारा	प्रसाद पी जोशी	कविता	71
26	नारी-एक शब्द	रश्मिराज	कविता	73
27	तिरंगे को झुकने नहीं दूंगा	गजे सिंह 'अंजाना'	कविता	75
28	माँ	साधना सिंह	कविता	77
29	नराकास द्वारा आयोजित चित्र कहानी लेखन, 2024 की पुरस्कृत रचनाएं			78
30	नराकास (का.-2)-2024 की विजेता सूची			98
31	हिंदी पखवाड़ा-2024 की विजेता सूची			99

32	वर्ष 2024-25 के दौरान सेवानिवृत्त कार्मिकों की सूची	103
33	वर्ष 2024-25 के दौरान दिवंगत कार्मिक	104
34	वर्ष 2024-25 के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों के चित्र	105

कोशिश

निशा की ट्रेन थोड़ी लेट थी, फिर भी उसने स्टेशन समय से पहुँचना ही ठीक समझा। हालांकि उसने पहले भी अकेले सफ़र किया था, लेकिन उसकी घबराहट कम नहीं होती। वह होटल से बाहर निकली और ऑटो के लिए नज़र दौड़ाने लगी। सुबह का समय था इसलिए ऑटो मिलने में थोड़ी दिक्कत आ रही थी। करीब 10 मिनट बाद एक ऑटो रुका। निशा ने पूछा -'स्टेशन चलेंगे?' भैया ने पहले तो एकदम न जाने का मन बना लिया था फिर अचानक से कहा- "बैठिए।" निशा को थोड़ी राहत मिली। करीब 25 मिनट लगे उसे स्टेशन पहुँचने में।

उसकी ट्रेन अब भी करीब एक घंटा लेट थी। इस ट्रेन का टिकट उसने इसलिए

ही कराया था कि रात होने तक वह घर पहुँच जाएगी। लेकिन अब यह थोड़ा मुश्किल ही लग रहा है। खैर, उसके साथ सामान कुछ ख़ास था नहीं। सुबह की चाय हुई नहीं थी, सो उसने एक कप चाय, एक बिस्किट का पैकेट लेकर वेटिंग रूम की ओर बढ़ना शुरू किया। अब उसकी ट्रेन आने में थोड़ा ही समय बचा हुआ था। प्लैटफॉर्म नंबर दो पर उसकी ट्रेन आने वाली थी। वह धीरे- धीरे उधर की ओर बढ़ने लगी।

ट्रेन में निशा ने अपनी सीट ले ली। तब तक पापा का तीन बार फोन आ चुका था। अब जाकर उन्हें शांति मिली जब वह अपनी सीट पर बैठ गई।

सेकेंड एसी में उसकी सीट भी उन्होंने अपनी ज़िद से कराई थी। बेटी अकेली इतनी दूर आ - जा रही है, सुरक्षा तो होनी चाहिए- यही उनका तर्क था। ट्रेन ने अपनी रफ़्तार पकड़नी शुरू की। भूख लगी ही थी, सो उसने थोड़ा बहुत जो सैंडविच, बिस्किट लिया था, खाना शुरू कर दिया था। सबसे अच्छी बात थी कि उसे साइड विंडो वाली सीट मिली थी। उसे इस बात का रोमांच बहुत था। एक तो सुबह की ट्रेन ऊपर से खिड़की वाली सीट।

निशा ने बेडिंग लगा लिया और खाने का आर्डर दे दिया। अब उसे बस बाहर भागते नज़ारों को देखने का मन था। कानों में ईयरफोन और फोन में उसके पसंदीदा गाने, खिड़की के बाहर हरे भरे खेत, नदी, पक्षियों के अनगिनत नज़ारे। गानों के बोल उसे चरितार्थ होते जान पड़े। अचानक उसे वह दिन याद आया जब उसने पहली बार परीक्षा देने के लिए मुंबई जाने की बात घर में छेड़ी थी। बी.एड. की फाइनल परीक्षा देने के बाद उसने सरकारी नौकरी की तैयारी करनी शुरू कर दी थी। इसके बारे में घर में सिर्फ माँ को पता था। किताबों, नोट्स के लिए पैसे जो वो देती थीं। पापा को इसकी ज़रा भी भनक नहीं थी।

हालांकि निशा का मन अब भी पढ़ाई जारी रखने का था, लेकिन बी.एड. के दौरान उसने बहुतों को सरकारी नौकरी की तैयारी में पूरे मन से जुटते देखा। उसे इस बात का अंदाज़ा तो था कि इसके लिए पापा कभी राज़ी नहीं होंगे। बी.एड. के बाद एम.फिल. करने के लिए उसने उन्हें जैसे-तैसे राज़ी किया था। अब इस बात को उनके सामने रख कर वह अपनी एम.फिल. पर आंच नहीं लाना चाह रही थी। थोड़ा - बहुत इधर - उधर से और माँ के सहयोग से उसने इसके लिए भी प्रयास शुरू कर दिया था। घर में पढ़ाई का माहौल शुरू से ही था । उसने एम. फिल. के साथ ही सरकारी नौकरी की प्रतियोगिताओं के लिए भी तैयारी शुरू कर दी थी। कई परीक्षाओं के लिए उसने फॉर्म भी भरे थे।

एक दिन पोस्टमैन निशा के नाम की चिठ्ठी ले आया। माँ ने उसे फोन करके बताया कि कोई चिठ्ठी आई है। तब वह अपने एम.फिल. की कक्षा में थी। उसने माँ को चिठ्ठी अपने पास रखने को कहा। शाम को घर पहुँचते ही उसने माँ से उस पत्र की मांग की। माँ ने उसे थोड़ा झिड़कते हुए कहा -“हाथ- मुंह तो धो लो।” लेकिन निशा ने झट से माँ से चिट्ठी देने को कहा। माँ ने चिठ्ठी उसे थमाई और उसके लिए चाय लेने चली गईं। निशा ने चिठ्ठी खोली। उसे विश्वास नहीं हुआ। वह उसका पहला प्रवेश पत्र था।

परीक्षा ठीक तीन सप्ताह बाद मुंबई में होने वाली थी। निशा ने बड़े उत्साह से माँ को यह बताया। माँ ने कहा - “परीक्षा देने मुंबई कौन जाता है?” निशा का मन यह सुनते ही रुआंसा हो गया। माँ को बताया तो यह जवाब मिला, पापा तो शायद पत्र ही फाड़ देंगे।

उस शाम बारिश हो रही थी। पापा घर आ चुके थे। माँ सबके लिए पहले ही चाय बनाकर रख देती थीं। निशा चाय गरम कर पापा को देने पहुंची। उनका मूड तो उसे ठीक लगा। सोचा अभी सही मौका है, बात कर ही लेती हूँ। जैसे ही वह चिठ्ठी लेने के लिए पीछे मुड़ी पीछे से कॉलबेल बजी। पापा के घनिष्ठ मित्र दरवाज़े पर थे। निशा ने उन्हें प्रणाम किया और उनके लिए भी नाश्ते की व्यवस्था करने चली गई। उसका मन थोड़ा छोटा हो गया। उसे इतना पता था कि आज शायद ही पापा से उस चिठ्ठी के बारे में बात हो पाएगी। रात के करीब 8.30 बजे वे अंकल गए। 9 बजे तक तो पापा खाना खाकर सो जाते हैं। निशा ने एक बार माँ का मन टटोलने की कोशिश की कि क्या पापा से अब उस चिठ्ठी के बारे में बात करें। माँ ने सख्त मना कर दिया। निशा ने फिर उस रात उस चिठ्ठी का कोई ज़िक्र नहीं किया।

परीक्षा तीन सप्ताह में होने वाली थी। एक-एक दिन बीता जा रहा था। आज निशा ने मन दृढ़ कर लिया था कि चाहे जो हो जाए, आज तो बात करके रहेगी। उसने माँ को पहले ही इस बात का संकेत दे दिया था। माँ ने भी सांकेतिक स्वीकृति दे दी थी। पापा शाम को आ चुके थे। चाय नाश्ता करने के बाद स्कूल के कुछ कामों में व्यस्त दिख रहे थे। जैसे ही उनका हाथ टी. वी. के रिमोट की तरफ बढ़ा, निशा ने वह चिठ्ठी बढ़ा दी। पापा थोड़े अचंभित हुए कि यह क्या कर रही है। हल्के गुस्से से उन्होंने निशा को देखा। फिर उस चिठ्ठी को खोलने लगे। निशा को इतना डर तो बोर्ड की गणित परीक्षा में भी नहीं लगा था ।

पापा ने एक बार चिठ्ठी को देखा और एक बार निशा को। निशा को ऐसा लगा कि पापा शायद उसे पहचान ही नहीं रहे हैं। उसे इतनी ज़्यादा घबराहट हो रही थी कि उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया। उसने जैसा सोचा था, हुआ भी वैसा। पापा को तो पहले विश्वास ही नहीं हुआ कि उसने किसी परीक्षा के लिए आवेदन किया है। उन्होंने अपने गुस्से पर नियंत्रण रखते हुए निशा के सामने चिठ्ठी रख दी। तब तक माँ भी कमरे में आ गईं। माँ ने दोनों की मन: स्थिति समझते हुए कमरे में मौजूद मौन को भंग करने का प्रयास किया। धीमे स्वर में पापा से कहा -“एक बार देख लीजिए, इसने कोई परीक्षा का फॉर्म भरा था जिसकी चिठ्ठी आज आई है।” पापा ने माँ को भी

घूरा। गंभीर आवाज़ में कहा - “जब इतना पता है तो यह भी मालूम होगा कि परीक्षा कहाँ होगी?” माँ ने दबी आवाज़ में कहा - “हाँ! मुंबई में है।” निशा को लगा कि उसका सिर घूम रहा है और उसकी तबीयत ख़राब होने वाली है। उस शाम इस बारे में और कोई चर्चा नहीं हुई।

अगली सुबह निशा की एम. फिल. की कक्षा थी। उसकी यूनिवर्सिटी दूर थी, सो वह सुबह ही निकल जाती। बेमन से वह कक्षा के लिए निकली। माँ टिफिन देने के लिए पीछे से भागी आ रही थीं। उसको माँ की आवाज़ सुनाई ही नहीं दी। माँ ने सावधानी से जाने के लिए उसे झिड़का भी। निशा के मन की विवशता को भांपते हुए माँ ने आश्वासन दिया कि - “शाम को आओ तो फिर बात करते हैं।” निशा को थोड़ा ढाढस मिला। उसके कांपते मन को माँ ने यह सांत्वना देकर क्षणिक उत्साही बना दिया। शाम को घर वापसी करते समय निशा गहरे उधेड़बुन में थी। घर का कैसा माहौल होगा? कैसे पापा से फिर से परीक्षा के बारे में पूछेगी? क्या पापा राज़ी होंगे? सोचते - सोचते उसे पता ही नहीं चला कि कब वह घर पहुँच गई। पापा पहले से ही घर पर थे। निशा शाम के चाय नाश्ते के साथ पापा के सामने गई। पापा चुप थे।

कई दिनों से इतनी चिंताओं से जूझने के कारण निशा मानसिक रूप से पूरी तरह थक गई थी। कमरे में गई और लेटते ही उसे नींद आ गई। अचानक उसे लगा कि कोई उसका सिर थपथपा रहा है। वह चौंककर उठी। अधखुली आँखों से देखा तो माँ थीं। माँ उसे उठने का इशारा कर रही हैं। एक झटके में वह उठकर बैठ गई। माँ ने पापा के कमरे में आने को कहा। निशा तुरंत भागकर गई। उसे कहीं-न-कहीं इसका पूर्वानुमान तो था कि पापा मानेंगे तो नहीं।

पापा ने गला साफ करते हुए कमरे में पसरे मौन को दरकिनार करने का प्रयास किया, लेकिन निशा को ऐसा लगा कि मानो अब ज्वाला वर्षा होने वाली है। “तुमने इस परीक्षा के लिए कब आवेदन किया था?” उनका यह प्रश्न ऐसा था जिसके लिए निशा तैयार नहीं थी। अपने अंदर का सारा साहस बटोरकर निशा ने लड़खड़ाते शब्दों को जोड़ने का प्रयास करते हुए कहा- “चार महीने पहले।” इन तीन शब्दों को बोलने में ही उसके पैर काँप उठे। पापा उसकी घबराहट को समझ रहे थे। बोले -“आराम से बताओ, कैसी परीक्षा है? पोस्ट कौन सी है? तुम्हारी तैयारी कैसी है?” उसे ऐसे प्रश्नों की उम्मीद ही नहीं थी। निशा को इतना आभास तो हो गया था कि आज अगर वह हिम्मत नहीं दिखा पाई तो शायद ही दोबारा उसे ऐसा मौका मिलेगा। पापा की ओर देखते हुए उसने कहा -“भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड में हिंदी की कुछ पोस्ट आई हैं। समाचार पत्र

में विज्ञापन देखा था। महिलाओं के लिए आवेदन की कोई फ़ीस नहीं लग रही थी, इसलिए अप्लाई कर दिया था। तब यह नहीं पता था कि परीक्षा मुंबई में होगी।"

माँ कुछ दूरी पर ही खड़ी थीं। उन्होंने हाथ से हल्के से इशारा किया कि वहीं खड़े रहो। पापा बोले - "अच्छा, ठीक है, आगे का क्या सोचा है?" निशा का मन अलग और दिमाग अलग चल रहा था। मन कह रहा था कि परीक्षा देनी है लेकिन दिमाग इस पर अंकुश लगाने की हिदायत दे रहा था, जिससे पापा को बुरा न लगे। पापा ने उसे फिर टोका -"बताओ भाई, क्या सोचा है?" "परीक्षा देनी है पापा"- निशा ने एक सांस में कह दिया। कमरे में कुछ सेकेंड के लिए शांति पसर गई। पापा अपनी जगह से उठ खड़े हुए। अब तो बचने की कोई उम्मीद नहीं है। निशा का सिर फिर चकराने लगा। पापा बोले -"ठीक है, जाना कब और कैसे है? कुछ सोचा है?"

निशा के मन का उद्गार आँखों से बह निकला। उसकी दसवीं में गणित की परीक्षा अच्छी नहीं हुई थी। पापा उस दिन सेंटर पर ही थे। परीक्षा जब समाप्त हुई और निशा ने उन्हें बाहर देखा था - वह दिन था और आज का दिन है। पापा की शर्त बस एक ही थी कि वह अकेली इतनी दूर नहीं जाएगी। वे भी साथ चलेंगे। दोनों पिता और बेटी तीन सप्ताह बाद परीक्षा केंद्र पर उपस्थित थे।

आगे और भी बहुत से ऐसे मौके आए, जब निशा को पापा का पूरा साथ मिला। अब तो उन्होंने उसे अकेले आने - जाने के लिए भी तैयार कर दिया था। वैसे इसके लिए माँ और निशा दोनों को थोड़ी मेहनत करनी पड़ी थी।

कोई स्टेशन आया था। ट्रेन करीब दस मिनट से रुकी थी। निशा का खाना भी उसकी सीट पर आ चुका था। खाना खा ही रही थी कि पापा का फोन आया। उसने अब तक की यात्रा से उन्हें अपडेट कर दिया था। पापा ने कहा - "अगर ट्रेन और लेट हुई तो वे रात को स्टेशन पर लेने आएंगे।" ट्रेन चलने लगी थी और निशा का मन फिर से गुज़रते नज़ारों के साथ दौड़ लगाने लगा।

सुश्री प्रियंका संजीव सिंह,
वरिष्ठ अनुवादक
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

यूपीएस-एनपीएस और मेरी कहानी

प्रिय पाठकगण,

कुछ दिनों पहले मैं अपनी गर्दन के दर्द से परेशान होकर चिकित्सक के पास गया।

चिकित्सक : आप क्या काम करते हैं और अपको यह दर्द कितने दिनों से है?

मैं : मैं केंद्र सरकार का एक कर्मचारी हूँ एवं यह दर्द मुझे एक सप्ताह से है।

चिकित्सक : क्या आप एनपीएस में हैं?

मैं : हाँ, महाशय।

चिकित्सक : आप अपने कार्यालय में यूपीएस या एनपीएस का विकल्प जल्दी दे दीजिए और एक सप्ताह के बाद समीक्षा के लिए आइए।

मेरी समस्या अब और बढ़ गई। इतने कम समय मैं से विकल्प चुन लूँ। एक तरफ सरकार ने 30 जून तक का जो समय दिया था, वही कम लग रहा रहा था।

इस मामले में मैंने अपनी दोस्त की मदद लेने की कोशिश की । मैंने उससे अनुरोध किया कि वह मुझे दो दिनों के अंदर बता दे कि मेरे लिए यूपीएस और एनपीएस में कौन सा विकल्प सही है। दो दिनों के बाद मेरे मोबाइल पर उसका जबाव आया जिसका मतलब था कि यह काम (यूपीएस और एनपीएस में से एक विकल्प चुनना) दो दिनों के अंदर नहीं हो सकता और अगर होगा तो होता रहेगा, होता रहेगा.................लेकिन उसने इसे हिंदी में लिखने के बजाए अंग्रेज़ी में इस तरह लिखा था-

“दिस वर्क कैन नॉट बी डन विद इन टू डेज़ इफ डन देन डन डना डन डन”

मैं निराश हो गया। काफी सोच-विचार के इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि अगर रिटायरमेंट के बाद लंबा जीवन जीने की संभावना अधिक है तो यूपीएस चुनना बेहतर है। लेकिन सवाल था कि हम अपने जीवन काल का पूर्ण अनुमान कैसे लगाएं? इसके लिए मैंने सरकार के जीएफआर (सामान्य वित्तीय नियम) के ‘वस्तु एवं सेवा की खरीद’ के नियम का सहारा लिया और चार ज्योतिष से अपनी संभावित आयु का कोटेशन प्राप्त किया। इन चारों कोटेशन का औसत निकालकर अपने जीवनकाल का अनुमान लगाया। फिर मैंने कार्यालय के बिल्स अनुभाग को अपना विकल्प दे दिया।

इसके दो दिनों बाद मेरी गर्दन का दर्द गायब हो गया। मैं समीक्षा के दिन चिकित्सक के पास पहुँचा।

मैं : महाशय, यह कैसे संभव हो गया कि विकल्प देते ही मेरी गर्दन का दर्द गायब हो गया?

चिकित्सक : इस प्रकार की समस्या पिछले कुछ दिनों में केंद्र सरकार के कार्मिकों में ज़्यादा देखी गई है। पता चला है कि कुछ केंद्रीय कार्मिकों ने यूपीएस और एनपीएस के लाभ-हानि का तुलनात्मक कथन बनाया है और अपनी गर्दन को दिन में अनेकों बार यूपीएस के कॉलम से एनपीएस की ओर और उसके विपरीत घुमा रहे हैं और अपनी गर्दन की माँसपेशियों पर दबाव बढ़ा रहे हैं।

इसके उपरांत कुछ सहकर्मी मुझसे सवाल करने लगे कि आपने ज्योतिष से प्राप्त कोटेशन के आधार पर यूपीएस का विकल्प चुना है और अगर उनकी बात गलत साबित हुई तो? मैंने कहा कि जब यमराज आएंगे तो मैं उनसे अनुरोध कर सकता हूँ कि भगवान मैंने यूपीएस का विकल्प चुना है और सेवानिवृत्ति के अभी कुछ ही दिन हुए हैं। अतः यहाँ रुकने का थोड़ा और मौका दिया जाए।

प्रिय पाठकगण,

मैं अपनी बातों को यहीं पर संक्षिप्त में समाप्त करता हूँ। राजभाषा अनुभाग को अपनी कृति अग्रेषित करने का समय आ गया है। अनुभाग ने कार्यालय के सूचना पट्ट पर अपनी कृति अग्रेषित करने की अंतिम तिथि के बारे में काफी पहले ही सूचना लगाई थी, लेकिन सूचना पट्ट पढ़ने की मेरी आदत निम्न कारण से छूट चुकी है:-

कन्नड़ भाषा सीखने के शुरूआती दिनों में मुझे जो भी बोर्ड रास्ते में या कहीं भी कन्नड़ भाषा में दिखाई देता तो मैं उसे पढ़ने की कोशिश करता।

एक दिन मैंने देखा कि एक बोर्ड जो ऊँचे खंभे पर लगा हुआ है, उस पर लिखे शब्दों को मैं ठीक से नहीं पढ़ पा रहा था क्योंकि मेरी गर्दन में दर्द होने के कारण मैं ऊपर देख पाने में कठिनाई का अनुभव कर रहा था। अतः मैंने खंभे पर चढ़कर पढ़ना शुरू किया। उस पर जो लिखा हुआ था उसका अर्थ था - “यह खंभा आज ही पेंट हुआ है, कृपया इससे दूर रहें।”

श्री रवि प्रकाश,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

मानसिक स्वास्थ्य

आज के समय में मानसिक स्वास्थ्य एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गया है। जैसे-जैसे जीवन की गति तेज़ हो रही है, वैसे-वैसे लोगों के मानसिक तनाव और चिंता के स्तर में भी वृद्धि हो रही है। मानसिक स्वास्थ्य का तात्पर्य उस स्थिति से है जिसमें व्यक्ति अपने भावनात्मक, मानसिक और सामाजिक पक्षों में संतुलन बनाए रखता है। यह केवल मानसिक बीमारियों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि एक सकारात्मक मानसिक स्थिति भी है। मानसिक स्वास्थ्य हमारे सोचने, महसूस करने और कार्य करने के तरीके को प्रभावित करता है। यह यह तय करता है कि हम तनाव से कैसे निपटते हैं, दूसरों से कैसे संबंध बनाते हैं और जीवन में निर्णय कैसे लेते हैं। एक स्वस्थ मानसिक स्थिति हमारे जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाती है और हमें अधिक सकारात्मक और उत्पादक बनाती है।

आज की जीवनशैली, जैसे काम का दबाव, पारिवारिक समस्याएँ, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग, नींद की कमी और अनियमित दिनचर्या, मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहे हैं। इसके अलावा, मानसिक स्वास्थ्य को लेकर समाज में व्याप्त कलंक (stigma) जैसे कि, यदि इस बारे में बात भी की तो लोग पागल समझेंगे और जागरूकता की कमी भी बड़ी समस्याएँ हैं। लोग मानसिक समस्याओं के बारे में खुलकर बात करने से कतराते हैं जिससे स्थिति और बिगड़ सकती है। इसमें परिवार वालों की लापरवाह भूमिका विशेष रूप से उत्तरदायी है। भारत में मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दिया जाता। हम स्वयं भी इसे कई बार मज़ाक का विषय बना लेते हैं। उदाहरण के लिए "हमारे यहाँ तो डिप्रेशन मम्मी की चप्पल खाकर ही ठीक हो जाता है" जैसे वाक्य मानसिक स्वास्थ्य जैसे गंभीर विषय से हमारा ध्यान ही हटा देते हैं। आजकल हमारे आस-पास घटित युवा अपराध की घटनाएँ, आत्महत्याएँ, बदलते लैंगिक व्यवहार आदि

इसका ही दुष्प्रभाव है कि हम समाज के मानसिक स्वास्थ्य को न तो समझना चाहते हैं और न ही उनके बारे में बात करना चाहते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए कुछ सरल उपाय अपनाए जा सकते हैं। जैसे नियमित व्यायाम करना, संतुलित आहार लेना, पर्याप्त नींद लेना, ध्यान और योग का अभ्यास करना, अपने विचारों और भावनाओं को किसी विश्वसनीय व्यक्ति से साझा करना आदि। इसके अलावा, यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक तनाव, चिंता या अवसाद महसूस कर रहा है, तो मनोचिकित्सक या काउंसलर से परामर्श लेना आवश्यक है। सरकार और विभिन्न संगठनों द्वारा भी मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए कई अभियान चलाए जा रहे हैं। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े सत्रों का आयोजन कर लोगों को शिक्षित किया जा रहा है। यह ज़रूरी है कि हम मानसिक स्वास्थ्य को उतनी ही प्राथमिकता दें जितनी हम शारीरिक स्वास्थ्य को देते हैं।

अंततः, मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसी नींव है जिस पर हमारा संपूर्ण जीवन आधारित होता है। एक स्वस्थ मन ही एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। इसलिए, हमें खुद के साथ-साथ अपने आसपास के लोगों की मानसिक स्थिति का भी ध्यान रखना चाहिए और ज़रूरत पड़ने पर मदद करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल कोई विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता है।

सुश्री आरती प्रिया दर्शनी,

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

भारत में शिक्षा: प्राचीन से नई शिक्षा नीति 2020 तक का सफ़र

भारत के मिसाइल मैन कहे जाने वाले एवं भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम के अनुसार " शिक्षा रचनात्मकता प्रदान करती है, रचनात्मकता से सोचने की क्षमता विकसित होती है, सोचने की क्षमता से ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा यह ज्ञान मनुष्यों को महान बनाता है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य का संपूर्ण विकास होता है जिसमें किताबी ज्ञान के साथ सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों का समावेश होता है।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति: प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। प्राचीन काल में भारतवर्ष में शिक्षा की वैदिक प्रणाली प्रचलित थी जिसमें गुरुकुल प्रणाली में गुरु तथा शिष्यों के बीच शिक्षक केंद्रित व्यवस्था थी। वैदिक प्रणाली में गुरुकुल में शिक्षा की प्रणाली में शिष्य सख्त अनुशासन नियमों के तहत स्वयं का मूल्यांकन करते थे। ज्ञात हो कि विश्व का प्रथम विश्वविद्यालय सन 700 ई.पू. में तक्षशिला में स्थापित हुआ था। ततपश्चात् चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में कुमार गुप्त द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई जिसमें चीन और अन्य राष्ट्रों के विद्यार्थियों ने बौद्ध दर्शन की पढ़ाई हेतु नालंदा विश्व विद्यालय का दौरा किया था। भारत में प्राचीन काल में शिक्षा के उत्कृष्ट संस्थान के रूप में विक्रमशिला विश्वविद्यालय और ओदंतपुरी विश्वविद्यालय को ख्याति प्राप्त हुई थी। संस्कृत के प्रकांड विद्वान पाणिनि, अर्थशास्त्र के जनक कौटिल्य तथा प्रसिद्ध चिकित्सक चरक प्राचीन भारतीय पद्धति के प्रमुख हस्ती हैं जिन्होंने शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त की।

वर्तमान भारतीय शिक्षा पद्धति: आधुनिक भारतीय शिक्षा पद्धति में अंग्रेज़ों का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। इसकी शुरूआत ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन के साथ होती है क्योंकि भारत में ब्रिटिश को औपनेशिक शासन बनाए रखने के लिए भारत की प्रशासनिक व्यवस्था में भारतीयों का सहयोग चाहिए था। इसलिए अंग्रेज़ों ने भारतीयों को औपनेशिक शिक्षा देनी प्रारंभ की। इससे कालांतर में ब्रिटिश लाभान्वित भी हुए क्योंकि भारतीयों को शिक्षा प्रदान करके अंग्रेज़ों ने प्रशासनिक व्यवस्था सुदृढ़ की एवं उन्हें भारतीय रीति-रिवाज़ की भी समझ हुई। इस कार्य हेतु सर्वप्रथम रेन हेस्टिंग्स द्वारा मुस्लिम कानून की शिक्षा हेतु सन 1781 में कलकत्ता मदरसा की स्थापना की गई। इसी कड़ी में आगे चलते हुए सन 1791 में जोनाथन डंकन द्वारा हिंदू दर्शन की शिक्षा हेतु वाराणसी में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई। आधुनिक भारतीय शिक्षा पद्धति में 1835 में लार्ड मैकाले द्वारा मैकाले मिनट्स लाया गया जिसका उद्देश्य भारतीयों में पाश्चात्य साहित्य एवं विज्ञान का प्रसार करना था। भारतीय शिक्षा पद्धति में सन

1854 का वुड्स डिस्पैच मील का पत्थर साबित हुआ क्योंकि इस घोषणा पत्र में उच्च शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी एवं विद्यालय स्तर की शिक्षा स्थानीय/मातृभाषा में प्रदान करने का प्रावधान था। इसमें स्त्री शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा का भी प्रावधान था। इन्हीं बहुआयामी एवं अग्रगामी दृष्टिकोण हेतु वुड्स के घोषणा पत्र को भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। वुड्स डिस्पैच में प्रस्तावित प्रावधानों के अनुसार 1857 में कलकत्ता, बंबई व मद्रास में विश्वविद्यालय स्थापित किए गए एवं सभी प्रांतों में शिक्षा विभाग का गठन किया गया। महिला शिक्षा हेतु बेथुन स्कूल की स्थापना की गई। बिहार के पूषा में कृषि विश्वविद्यालय एवं रूडकी (उत्तराखंड) में अभियंत्रण कॉलेज की स्थापना वुड्स डिस्पैच की ही देन है। भारतीय विद्यालयों में तेज़ी से पश्चिमीकरण हुआ एवं यूरोप के प्रधानाध्यापक एवं प्रिंसिपल नियुक्त किए गए। निजी भारतीय शिक्षक की नियुक्ति हुई।

<u>आज़ादी के बाद भारत में शिक्षा पद्धति:</u> आज़ादी के उपरांत भारत सरकार द्वारा एस राधाकृष्णन की अध्यक्षता में सन 1948 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की स्थापना की गई। इस आयोग का लक्ष्य उच्च शिक्षा की पहुँच था जो क्षेत्र, लिंग, जाति एवं धर्म के आधार पर भेदभाव किए बिना समाज के सभी तबकों को प्राप्त हो। 1968 में कोठारी आयोग की अनुशंसा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति का गठन किया गया। इस नीति के तहत शिक्षा को राष्ट्रीय महत्व का विषय माना गया। इस नीति में 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा देने का प्रावधान किया गया। इसमें शिक्षकों को बेहतर प्रशिक्षण और योग्यता पर ज़ोर दिया गया। इस नीति के तहत माध्यमिक स्तर पर स्थानीय भाषाओं में शिक्षा पर ज़ोर दिया गया। क्षेत्रीय भाषाओं की ओर अधिक ध्यान दिया जाना इस नीति की एक अहम घोषणा थी। इसके तहत माध्यमिक स्तर त्रिभाषा सूत्र लागू करने का प्रावधान था जिसमें अंग्रेज़ी, हिंदी एवं स्थानीय भाषा शामिल थीं। इस नीति के द्वारा संस्कृत भाषा को भारतीय संस्कृति और विरासत का एक अनिवार्य हिस्सा मानकर इसके शिक्षण को प्रोत्साहित किया गया। इस नीति में बजट का 6% शिक्षा पर खर्च करने का प्रावधान था।

<u>राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986:</u> इस नीति का लक्ष्य समाज के सभी वर्ग विशेषत: अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्ग तथा महिलाओं को समग्र शिक्षा प्रदान करनी थी। इस नीति की प्रमुख बातें निम्नवत हैं:-

- इस नीति के तहत वयस्क शिक्षा का प्रावधान सम्मिलित था।
- प्राथमिक विद्यालयों को बेहतर बनाने के लिए 1987 में ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड प्रारंभ किया गया।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गई।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992: इस नीति में भारत सरकार ने आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया जिसका कार्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति,1986 के प्रभावों का आकलन करना था। इस नीति के तहत राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में संशोधन किया गया तथा निम्नलिखित प्रावधान लागू किए गए :

- अखिल भारतीय आधार पर व्यावसायिक एवं तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु एक प्रवेश परीक्षा आयोजित करने का प्रावधान इसमें किया गया जिससे छात्रों पर परीक्षा का दवाब कम हुआ।
- अभियंत्रण एवं वास्तुकला कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त प्रवेश परीक्षा और अखिल भारतीय इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा का आयोजन इस नीति के माध्यम से करने का प्रावधान किया गया।
- इस नीति के तहत ही केंद्र तथा राज्य सरकारों को सलाह देने के लिए सर्वोच्च सलाहकारी निकाय के रूप में केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड की स्थापना की गई।
- इस नीति के तहत छात्रों के बीच नैतिक मूल्यों को विकसित करने और शिक्षा को जीवन में अपनाने पर ध्यान केंद्रित करने को कहा गया ।

नई शिक्षा नीति 2020: राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के 34 वर्ष बाद विद्यालयों तथा उच्च शिक्षा में परिवर्तनकारी सुधार तथा भारत में 2040 तक सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी विद्यार्थियों को उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा तक समान पहुँच के उद्देश्य से नई शिक्षा नीति, 2020 लाई गई है। नई शिक्षा नीति, 2020 का मसौदा तैयार करने के लिए श्री कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 2017 में कस्तूरी आयोग का गठन किया था। नई शिक्षा नीति के तहत मुख्य प्रावधान निम्नांकित हैं:-

- मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय किया गया।
- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा के क्षेत्र में इस नई नीति में 3 से 6 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करने का प्रावधान है। यह शिक्षा आँगनवाड़ी एवं प्री-स्कूल द्वारा प्रदान की जाएगी। इसका कार्यान्वयन संयुक्त रूप से शिक्षा मंत्रालय, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा जनजातीय मामलों के मंत्रालय द्वारा किया जाएगा।
- शिक्षा मंत्रालय द्वारा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर राष्ट्रीय मिशन: इसके तहत, राज्य/केंद्र शासित प्रदेश 2025 तक सभी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 3 तक सभी शिक्षार्थियों के लिए सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने के लिए एक कार्यान्वयन योजना तैयार करने का प्रावधान है। मूलभूत साक्षरता और

संख्यात्मकता पर उच्च गुणवत्ता वाले संसाधनों का राष्ट्रीय भंडार डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग पर उपलब्ध कराए जाने का प्रावधान भी इस नई शिक्षा नीति में शामिल है।

- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान और राज्य मुक्त विद्यालयों द्वारा प्रस्तावित मुक्त और दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का विस्तार सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए किए जाने का प्रावधान है।
- 5+3+3+4 सूत्र पर विद्यालय पाठ्यक्रम एवं शिक्षाशास्त्र का पुनर्गठन: इस सूत्र के तहत 3 से 8 वर्ष तक आधारभूत चरण के 5 वर्ष (इसमें आँगनवाडी के 3 साल तथा 2 वर्ष प्राथमिक विद्यालय की कक्षा 1 एवं 2), फिर 8 से 11 वर्ष की आयु तक प्रारंभिक चरण में 3 वर्ष (कक्षा 3,4,5) फिर माध्यमिक चरण में 11 से 14 वर्ष की आयु तक 3 वर्ष (कक्षा 6,7,8), फिर उच्चतम चरण 14 से लेकर 18 वर्ष की आयु तक 4 वर्ष (कक्षा 9,10,11 एवं 12) आवश्यक शिक्षण और समझ को विकसित करने के लिए पाठ्यक्रम की सामग्री को उसके मूल तत्वों तक सीमित करने का प्रावधान है ।
- विभिन्न विषय समूहों को चुनने की स्वतंत्रता: विज्ञान, मानविकी तथा कला विषय, व्यावसायिक तथा शैक्षणिक विषय, पाठ्यक्रम एवं पाठ्येतर गतिविधियों के बीच कोई भिन्नता नहीं करने का प्रावधान भी इस नीति में शामिल है ।
- बहुभाषावाद/स्थानीय भाषाओं पर ज़ोर: इस नीति के तहत कम से कम कक्षा 5 तक स्थानीय/मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान है।
- नई नीति के तहत भारतीय सांकेतिक भाषा को पूरे देश में मानकीकृत करने का प्रावधान है।
- परख (प्रदर्शन, मूल्यांकन, समीक्षा एवं समग्र विकास के ज्ञान का विश्लेषण) जो राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अंतर्गत एक राष्ट्रीय मूल्यांकन नियामक है, का प्रावधान भी नई शिक्षा नीति, 2020 में किया गया है।
- सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एसईडीजी) की अधिक आबादी वाले क्षेत्र में विशेष शिक्षा क्षेत्र स्थापित करने का प्रावधान भी उक्त नीति में सम्मिलित है।
- राज्य/केंद्र शासित प्रदेश द्वारा राज्य स्कूल मानक प्राधिकरण (एसएसएसए) की स्थापना।
- विद्यालयों (कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा) एवं उच्च शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करना।
- उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (व्यावसायिक शिक्षा को सम्मिलित करते हुए) को 2035 तक 50% करने का लक्ष्य।

- इस नीति में लचीले पाठ्यक्रम, विषयों के रचनात्मक संयोजन, व्यावसायिक शिक्षा के एकीकरण और उपयुक्त प्रमाणन के साथ कई प्रवेश और निकास बिंदुओं के साथ स्नातक शिक्षा की परिकल्पना की गई है।
- उच्च शिक्षा संस्थानों में प्रवेश हेतु राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी द्वारा सामान्य प्रवेश परीक्षा का आयोजन।

एपीएआर (स्वचालित स्थायी शैक्षणिक खाता रजिस्ट्री): एपीएआर की संकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी 2020) के तहत की गई है जिसमें सभी कॉलेज/विश्वविद्यालय जाने वाले छात्रों को एबीसी, यानी अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट पर पंजीकरण करना आवश्यक है। नए नियम के मुताबिक किसी भी कॉलेज या यूनिवर्सिटी में एडमिशन लेने के लिए एबीसी आईडी का होना ज़रूरी है। एबीसी एक डिजिटल रिपॉज़िटरी या डिजिटल स्टोरेज है। इस डिजिटल क्रेडिट बैंक में छात्रों के सभी क्रेडिट यानी अंक और उनकी सभी निजी जानकारी उपलब्ध होंगी। केंद्र तथा राज्य सरकार के सहयोग से शिक्षा के क्षेत्र में देश के सकल घरेलू उत्पाद का 6% निवेश करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

निष्कर्ष: भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा का समाज में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। समय के साथ शिक्षा का लक्ष्य भी बदलता गया। वर्तमान समय में शिक्षा का उपयोग अधिकाधिक जीविकोपार्जन हेतु किया जा रहा है। आज के वैश्विक प्रतिस्पर्धी माहौल में शैक्षणिक नीति में आमूलचूक परिवर्तन हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारत सरकार का एक सार्थक प्रयास है। इससे वैश्विक पटल पर भारत की साख बढ़ेगी।

श्री कुमार अग्निवेश,
कनिष्ठ अनुवादक
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

डिजिटल युग में नैतिकता की भूमिका

आज का युग तकनीक और इंटरनेट का युग है। स्मार्ट फोन, सोशल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स जैसे आधुनिक आविष्कारों ने मानव जीवन को आसान बनाया है। लेकिन इसके साथ ही कई नैतिक चुनौतियां भी सामने आई हैं। ऐसे में यह आवश्यक हो गया है कि हम डिजिटल नैतिकता पर गंभीरता से विचार करें।

डिजिटल प्लाटफॉर्म पर हर दिन लाखों-करोड़ों जानकारियाँ साझा होती हैं। लोग सोशल मीडिया पर अपनी राय रखते हैं, लेकिन कई बार यह अभिव्यक्ति स्वतंत्रता की सीमाओं को पार कर देती है। ट्रोलिंग, फेक न्यूज़, साइबर क्राइम और डेटा चोरी जैसे विषय आज गंभीर चिंता के कारण बन गए हैं।

नैतिकता का अर्थ है- सही और गलत में अंतर करना। जब हम डिजिटल माध्यम का उपयोग करते हैं यह हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम उसका सही और सकारात्मक उपयोग करें।

फेक न्यूज़ और अफवाहें

इंटरनेट पर झूठी ख़बरें तेज़ी से फैलती हैं जिससे समाज में भ्रम और तनाव उत्पन्न होता है। डिजिटल नैतिकता हमें यह सिखाती है कि किसी भी जानकारी को साझा करने से पहले उसकी पुष्टि करना ज़रूरी है।

ऑनलाइन व्यवहार

इंटरनेट पर दूसरों के साथ व्यवहार भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना आम जीवन में। सम्मानजनक भाषा और व्यवहार बनाए रखना आवश्यक है।

डेटा और गोपनीयता

हमें यह समझना चाहिए कि दूसरों की व्यक्तिगत जानकारी साझा करना एक गंभीर अपराध हो सकता है। डिजिटल दुनिया में गोपनीयता की रक्षा करना आज सबसे बड़ी नैतिक ज़िम्मेदारी है।

डेटा गौपनीयता और साइबर सुरक्षा

आजकल हम अपना निजी डेटा इंटरनेट पर साझा करते हैं, जैसे बैंकिंग जानकारी, पर्सनल फोटो, लोकेशन आदि। यह जानकारी गलत हाथों में पड़ने पर गंभीर नुकसान पहुंचा सकती है।

नैतिकता हेतु समाधान:

अपनी और दूसरों की व्यक्तिगत जानकारी की सुरक्षा करें। बिना अनुमति के किसी की निजी जानकारी साझा न करें। मज़बूत पासवर्ड और सिक्योरिटी उपाय अपनाएँ।

डिजिटल युग में नैतिकता केवल एक वैकल्पिक गुण नहीं बल्कि एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है। हमें अपने व्यवहार में नैतिकता को आत्मसात करना होगा। प्रत्येक इंटरनेट उपयोगकर्ता को यह समझना चाहिए कि वह डिजिटल समाज का ज़िम्मेदार नागरिक है। यदि हम तकनीक का सही और सकारात्मक उपयोग करना चाहते हैं, तो डिजिटल नैतिकता को अपनाना अनिवार्य है। तभी हम एक स्वस्थ, सुरक्षित और समृद्ध डिजिटल समाज की कल्पना को साकार कर सकते हैं। इसलिए, हर डिजिटल उपयोगकर्ता को जागरूक, ज़िम्मेदार और नैतिक बनना होगा।

डिजिटल नैतिकता के लिए ज़िम्मेदारी:

डिजिटल युग में हर व्यक्ति को अपनी भूमिका समझनी होगी। केवल सरकार या तकनीकी कंपनियां ही ज़िम्मेदार नहीं हैं, बल्कि उपयोगकर्ताओं को भी अपनी ज़िम्मेदारी समझनी होगी।

- शिक्षा संस्थानों में बच्चों और युवाओं को डिजिटल नैतिकता से अवगत कराना।
- घर व परिवार में भी तकनीक के सही उपयोग की आदतें सिखाना।
- सरकार द्वारा साइबर कानून को कड़ा बनाना और डिजिटल अपराधों पर अंकुश लगाना।
- प्रौद्योगिक कंपनियों द्वारा प्राइवेसी और सुरक्षा के उपाय मज़बूत करना।

श्री प्रसाद पी. जोशी,
सहायक पर्यवेक्षक
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

खाली दिमाग एक रचनात्मक ज़रूरत

हम सभी ने बचपन से यह कहावत सुनी है कि "खाली दिमाग शैतान का घर"। यह कहावत उतनी ही गलत है जितनी कि "खेलोगे, कूदोगे, बनोगे खराब ,पढ़ोगे, लिखोगे, बनोगे नवाब"। जैसे कि खेलकूद हमारे समग्र विकास के लिए आवश्यक होता है वैसे ही खाली दिमाग यानी जब हम कोई अन्य कार्य न कर रहे हों, हमारी रचनात्मक आवश्यकता होती है। संसार में जितने भी महत्वपूर्ण आविष्कार हुए हैं वे मुख्यतः एकांतवास की देन है। सोचिए, अगर न्यूटन खाली बैठकर न सोच रहे होते तो क्या हमें "गुरुत्वाकर्षण का नियम" मिल पाता? यदि आर्कमिडीज़ न सोच रहे होते तो क्या "पल्लवन का सिद्धांत" आ पाता? और यदि आइंस्टीन खाली बैठकर न सोच रहे होते तो हमें "सापेक्षिता का सिद्धांत" नहीं मिल पाता।

जब हमारे पास इंटरनेट नहीं था, हम अपने खेलने से लेकर कई कार्य स्वयं करते थे। परंतु आज हमारा सारा समय डिजिटल कार्यों में ही बीत जाता है। दुर्भाग्य से, सच्चाई यह है कि हम वयस्कों ने भी खाली बैठकर बोर होने का समय खो दिया है जो कभी हमारे पास हुआ करता था। हमें आज इसकी कहीं ज़्यादा ज़रूरत है।

गर्मी की छुट्टियाँ आज कई वयस्कों के लिए जीवन के तनावपूर्ण क्षणों में से एक हैं। इसकी योजना बनानी होती है, पैकिंग करनी होती है, पैसे जमा करने होते हैं और जब आप अंततः यात्रा करने जा रहे होते हैं, तो काम 'यात्रा का अधिकतम लाभ उठाने' से शुरू होता है। हम खाली बैठने की किसी भी संभावना को खत्म कर देते हैं। जबकि इस छुट्टी का मुख्य उद्देश्य ही है- 'बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा को बाहर लाना।'

हमें खाली बैठने की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि यह एक अद्भुत चीज़ का स्रोत है जो है हमारी रचनात्मकता। यह उन विचारों को सोचने की क्षमता है जो अभी तक नहीं सोचे गए। रचनात्मकता तब पनपती है जब मन को लक्ष्यहीन और अर्थहीन भटकने दिया जाता है।

इतालवी शब्द Dolce far niente का अर्थ है- कुछ नहीं करने की खुशी। कुछ नहीं करने की यह संस्कृति मनुष्य खोता जा रहा है। आप बिना किसी योजना के गर्मी की छुट्टी की योजना बनाएं। यदि खाली कैलेंडर रखना कठिन है तो ऐसी गतिविधियों को जोड़ने का प्रयास करें जिनमें न्यूनतम दिमाग लगे और मस्तिष्क को स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति मिले। आपके मस्तिष्क में नए विचार अचानक बिजली की तरह चमकेंगे।

लॉन की घास काटें, पॉडकास्ट या संगीत के बिना कार से यात्रा करें, अपने आप को समुद्र देखने के लिए मज़बूर करें या अपने मोबाइल को सामने रखे बिना एक कप कॉफी पिएँ। इन गतिविधियों की विशेषता यह है कि ये सरल, दोहराव वाली हैं और इनमें अधिक मानसिक प्रयास की आवश्यकता नहीं होती है। फिर आप रचनात्मक विचार उत्पन्न करने के लिए अपने मस्तिष्क को मुक्त करते हैं।

एक आम धारणा यह है कि छुट्टियाँ "बैटरी चार्ज करने" के लिए होती हैं। इस तरह के शब्द के पीछे यह विचार निहित है कि हम काम करके ऊर्जा का "उपयोग" करते हैं और फिर खुद को रिचार्ज करना पड़ता है, ताकि फिर से काम पर जाने में सक्षम हो सकें। यह शारीरिक रूप से अत्यधिक कठिन कार्य वाले कुछ श्रमिकों के लिए सच हो सकता है, लेकिन हम में से अधिकांश लोगों के लिए यह कम महत्वपूर्ण है।

हमें मुख्यतः शारीरिक आराम की आवश्यकता नहीं है। हमें मानसिक आराम की ज़रूरत है। इसलिए बेझिझक छुट्टी के दौरान ऐसे कार्य करें जिन्हें वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप पूरा करते हैं या नहीं।

कोई कविता लिखें - शायद पहली बार ही सही।

फूलों की क्यारी बनाएँ या लकड़ी काट लें।

अपनी अलमारी के सभी कपड़ों को मोड़ें।

माइल्स डेविस या बीथोवेन का कोई एल्बम सुनें और इस पर विचार करें कि आपको यह क्यों पसंद है या यह क्यों पसंद नहीं है?

17वीं शताब्दी में फ्रांसीसी दार्शनिक पास्कल ने कहा- "जो लोग एक बंद कमरे में अकेले शांति से नहीं बैठ पाते, वे आनंद की अनुभूति कम प्राप्त करते हैं”।

किसी शांत कमरे में अकेले बैठने का अभ्यास करें या पार्क की बेंच पर।

दस मिनट से शुरू करें और देखें क्या होता है। बिना कुछ किए आप अपने विचारों को व्यवस्थित कर लेते हैं और अचानक कुछ नए विचार या अद्भुत विचार सामने आ सकते हैं। जब आप काम पर वापस आएँगे और हर कोई आपसे पूछेगा कि आपने छुट्टियों में क्या किया। कल्पना कीजिए यदि आप अधिक गर्व के साथ उत्तर दे सकें- "मैंने कुछ नहीं किया। सिवाय खाली बैठकर सोचने के।"

शायद यह खालीपन ही है जिसके सहारे हम तब जिएंगे जब सब कुछ ख़त्म हो जाएगा।

अंत में, इस उम्मीद के साथ इस लेख का समापन करता हूँ कि शायद हम सब एक दिन इसी खालीपन में अपनी रचनात्मक क्षमताओं को ढूंढने में सफल रहेंगे।

श्री मयंक कुमार ‘मयंक’,

लेखापरीक्षक
प्र.म.ले.(लेप.-I), कर्नाटक

हिमालय की गोद में पांच दिन

संस्मरण: बेंगलूरु से कुल्लू-मनाली की यात्रा

यात्रा की शुरुआत - बेंगलूरु से चंडीगढ़-

हर रोज़ की भागदौड़, ऑफिस की मीटिंग्स, ट्रैफिक जाम और मोबाइल स्क्रीन की थकान ने हमें एक गहरे सुकून की तलाश में भेजा - और उस तलाश का नाम था कुल्लू-मनाली। हमने निश्चय किया कि इस बार बच्चों के साथ ऐसा अनुभव लिया जाए जो जीवनभर याद रहे। गर्मियों की शुरूआत थी और हमने तय किया कि इस बार छुट्टियाँ हिमालय की वादियों में बिताई जाएँगी।

हमने बेंगलूरु से चंडीगढ़ तक की फ्लाइट बुक की। बेंगलूरु से चंडीगढ़ की उड़ान बेहद आरामदायक रही। बच्चों की आंखों में उत्साह साफ झलक रहा था। उन्हें पता था कि वे पहली बार बर्फ देखने जा रहे हैं। चंडीगढ़ एयरपोर्ट पर उतरते ही हल्की ठंडी हवा ने स्वागत किया। शहर में कुछ घंटे बिताकर हमने वोल्वो बस पकड़ी जो हमें पहाड़ों की ओर ले जा रही थी।

बस की खिड़की से बाहर दिखते हिमालय के शुरूआती दृश्य मन मोह लेने वाले थे। हरे-भरे पहाड़, संकरी घाटियाँ और बीच में बहती व्यास नदी – जैसे प्रकृति हर मोड़ पर हमें अपनी गोद में ले रही थी। रास्ते में बिलासपुर, सुंदरनगर और मंडी जैसे शहर आए जहाँ बच्चों और हमने ढाबे की गरमा-गरम चाय और आलू के पराठों का आनंद लिया।

कुल्लू, मणिकर्ण और बिजली महादेव - आध्यात्म और रोमांच का संगम-

हमारी पहली मंज़िल थी कुल्लू। यहाँ की शांति, ठंडी हवा और आसमान छूते पहाड़ों ने शहर की सारी थकान मिटा दी थी। हम एक रिज़ॉर्ट में ठहरे जहाँ से चारों तरफ सिर्फ बर्फ से ढकी चोटियाँ दिखती थीं और शांत वातावरण था। सुबह की चाय बर्फीली हवा में पीने का आनंद ही कुछ और था।

हमने दिन की शुरूआत की मणिकर्ण साहिब से। हम मणिकर्ण साहिब के लिए रवाना हुए। पार्वती घाटी में बसा मणिकर्ण एक धार्मिक स्थल है जहाँ गुरुद्वारा और मंदिर एक साथ हैं। यह स्थान सिर्फ धार्मिक ही नहीं, प्राकृतिक रूप से भी चमत्कारी है। यहाँ के गरम पानी के झरने, जिनमें लोग स्नान करते हैं, बहुत अद्भुत अनुभव थे। गरम पानी के झरनों में बच्चों ने पैर डालकर देखा - एक ओर बर्फ की ठंडक, दूसरी ओर झरने की गर्मी - यह अनुभव शब्दों

से परे था। गुरुद्वारे का लंगर - दाल, चावल और रोटियाँ - बच्चों ने पहली बार इतनी श्रद्धा और स्वाद से खाया। सादा लेकिन आत्मा को छू जाने वाला भोजन।

मणिकर्ण से लौटते हुए हमने एक और स्थान जोड़ा - बिजली महादेव मंदिर। यह कुल्लू की ऊँचाई पर स्थित एक रहस्यमयी मंदिर है। कहते हैं कि हर 12 साल में यहाँ बिजली गिरती है और शिवलिंग टूटता है जिसे फिर मक्खन से जोड़ा जाता है। यहाँ तक पहुँचने के लिए लगभग 3 किलोमीटर की चढ़ाई करनी पड़ी, लेकिन ऊपर से जो दृश्य मिला - वह अविस्मरणीय था। बच्चों ने भी चढ़ाई का आनंद लिया और ऊपर पहुँचकर उन्होंने कहा - "यह मंदिर किसी आसमान के मंदिर जैसा लगता है!"

रात को लौटकर हमने कुल्लू में रिवर राफ्टिंग की। व्यास नदी की लहरों में बहते हुए हम सभी रोमांचित थे और व्यास की ठंडी और तेज़ धारा में नाव चलाना अविस्मरणीय था। बच्चों की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं था। हम सभी ने चीखते हुए हँसी में राफ्टिंग का मज़ा लिया। यह उनके लिए एक गेम से कम नहीं था।

मनाली - संस्कृति, रोरिक आर्ट गैलरी , बर्फ और बच्चों की खिलखिलाहट

अब हम मनाली पहुंचे जहाँ हमने शहर के पास एक खूबसूरत रिसॉर्ट में डेरा जमाया जहाँ से बर्फीले पहाड़ों का 360 डिग्री दृश्य दिखता था। सुबह जब हमने खिड़की खोली तो सूरज की किरणें बर्फीली चोटियों पर पड़ रही थीं, मानो प्रकृति ने अपने सफेद कंबल पर सोने की चादर बिछा दी हो। हमने बच्चों को ओल्ड मनाली की गलियों में घूमते हुए हिमाचली संस्कृति से परिचित कराया - लकड़ी के पुराने घर, छोटे कैफे, विदेशी पर्यटक, ऊनी कपड़े पहनते बुज़ुर्ग और मुस्कुराते स्थानीय लोग। यहाँ लोग बहुत ही नम्र, मददगार और खुशमिज़ाज़ मिले। बच्चों को देखकर हर कोई मुस्कुरा देता और यह बच्चों के लिए बड़ा आत्मीय अनुभव था। यहाँ का माहौल एकदम शांत और कलात्मक था।

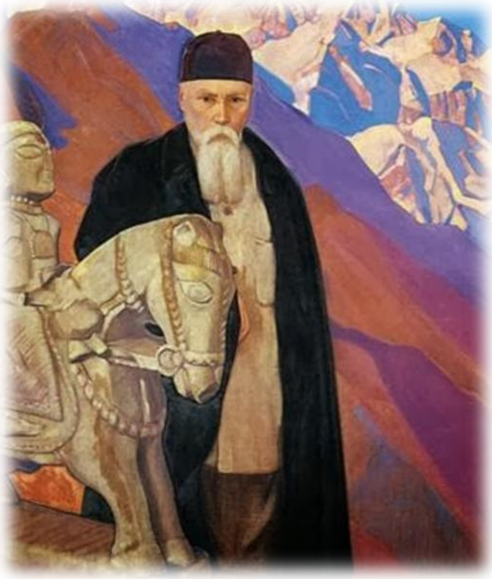

नग्गर गाँव में स्थित निकोलस रोरिक आर्ट गैलरी की पेंटिंग्स में हिमालय देखना बच्चों को बहुत रोचक लगा। हमने उन्हें बताया कि एक विदेशी कलाकार, रूस के महान चित्रकार रोरिक ने अपने जीवन के अंतिम वर्ष हिमालय में बिताए और उसे अपनी आत्मा का घर कहा। रोरिक ने हिमालय की सुंदरता को अपनी कला में सजीव कर दिया था। उनका घर अब एक संग्रहालय है जो संस्कृति और कला प्रेमियों के लिए खजाना है।

मनाली में हमने पैरा-ग्लाइडिंग का भी अनुभव लिया। जब हवा में उड़ते हुए नीचे की वादी दिखती है, तो डर और रोमांच दोनों साथ चलते हैं, जैसे समय थम गया हो।

मेरी पत्नी ने जब पहली बार उड़ान भरी, तो नीचे आते ही उसकी पहली प्रतिक्रिया थी - "मैं फिर से उड़ना चाहती हूँ!"

अटल टनल और सिस्सु - अप्रैल में बर्फबारी का जादू

हमारी यात्रा का सबसे रोमांचक व जादुई हिस्सा था अटल टनल के ज़रिए रोहतांग दर्रे को पार कर सिस्सु तक जाना। टनल के पार निकलते ही जैसे हम किसी स्वप्नलोक में आ गए - टनल के उस पार था सिस्सु और बर्फ से ढकी सफेद दुनिया। चारों ओर बर्फ ही बर्फ थी।

हम अप्रैल महीने में गए थे, इसलिए हमें बर्फबारी देखने की उम्मीद नहीं थी। लेकिन किस्मत ने साथ दिया, जैसे प्रकृति ने हमें खास तोहफ़ा दिया और वहां बर्फबारी शुरू हो गई। हमारे बच्चे तो ख़ुशी से झूम उठे और जैसे पंख लगाकर बर्फ में उड़ने लगे। स्नोमैन बनाना, बर्फ से फिसलना, स्नोबॉल वार - बच्चों के लिए यह दिन एक परी कथा जैसा था।

हम भी बच्चों के साथ बर्फ में खेले। ठंड से हाथ सुन्न हो रहे थे, लेकिन मन गर्मजोशी से भर गया था। वहाँ खड़े-खड़े हमने सोचा, कभी-कभी ज़िंदगी को रुकने देना ज़रूरी होता है क्योंकि असली ख़ुशी यही छोटे-छोटे पल होते हैं और हर एक पल को जी भर के जिया।

बर्फ के बीच बिताया गया वह दिन हमारी ज़िंदगी का सबसे खास दिन बन गया।

कैम्पिंग, हिमालयी रात और विदाई-

हमने मनाली के पास एक नदी किनारे कैम्पिंग साइट बुक की थी। रात, मनाली के पास नदी किनारे एक लकड़ी की झोंपड़ी, चारों ओर जंगल, पास से बहती नदी की आवाज़, ऊपर खुले आसमान में असंख्य तारे और पास जलता हुआ कैम्प फायर -बच्चों के लिए यह जंगल की किताब जैसा अनुभव था।

रात को हमने गर्म चाय के साथ आलू के पराठे खाए और बच्चों ने कैम्प फायर के चारों ओर अपनी पसंदीदा कहानियाँ सुनाईं। आसमान में चमकते तारे और नदी की लोरी जैसी आवाज़ - ये वे पल थे जिन्हें हम ताउम्र याद रखेंगे।

पांच दिन कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला। सुबह हमने चंडीगढ़ के लिए बस पकड़ी और फिर वहां से बेंगलूरु की फ्लाइट ली। लेकिन सच कहें तो हमा वापस तो आ गए पर मन अभी भी वहीं किसी पहाड़ी मोड़ पर, बर्फ की रेखा के पार अटका हुआ है। हम सिर्फ सूटकेस नहीं, बल्कि ढेर सारी यादें लेकर लौटे - बच्चों की हँसी, बर्फ के गोले, गरमा गरम लंगर, व्यास नदी की ठंडी हवा और हिमालय की शांत गोद।

विशेष आभार- पत्नी की भूमिका और अनुभव

हर यात्रा की तरह, इस यात्रा की भी एक मज़बूत और शांत धुरी थी - मेरी पत्नी। जहाँ मैं बच्चों के साथ उत्साह में खोया रहता था, वहीं वह हर चीज़ को सँभालने में लगी रहतीं - बच्चों के कपड़े, कैमरा, रास्ते के लिए ज़रूरी नाश्ता और हर उस छोटे पल को कैमरे में कैद करना जिसे शायद मैं भूल जाता।

मणिकर्ण के गरम झरनों में जब हम बच्चों के साथ पानी में पाँव डाले बैठे थे, उन्होंने चुपचाप आस-पास बैठे स्थानीय लोगों से बातचीत शुरू कर दी। वहीं से हमें वहाँ की लोक-कथाएँ और परंपराओं के बारे में जानने को मिला। वह जहाँ भी जातीं वहाँ की मिट्टी से एक रिश्ता बना लेतीं।

सिस्सु में बर्फ गिरने लगी थी और बच्चे बर्फ में मस्ती कर रहे थे। तब मेंरी पत्नी की आँखों में जो संतोष और माँ जैसी सुकून भरी मुस्कान थी। उसने उस क्षण को और भी गहरा बना दिया। उन्होंने खुद भी बच्चों के साथ स्नोबॉल फेंकने में हिस्सा लिया – उनके बचपन का एक हिस्सा जैसे फिर से जी उठता था।

मनाली की एक संकरी गली में जब उन्होंने एक स्थानीय महिला से पहाड़ी टोपी और शॉल खरीदी, तब उनकी बातचीत से दोनों के चेहरों पर एक जैसी मुस्कान आ गई – भाषा भले ही अलग थी पर जुड़ाव एक जैसा था। रात को कैंप फायर के समय जब हम सब ठंड से ठिठुर रहे थे, मेरी पत्नी ने जो चाय बनाई, उसका स्वाद अब तक ज़ुबान पर है। उन्होंने सिर्फ खाना नहीं परोसा, उन्होंने उस पल को घर जैसा बना दिया था।

इस यात्रा में, उन्होंने सिर्फ माँ, पत्नी या ट्रैवल प्लानर की भूमिका नहीं निभाई - उन्होंने एक सच्चे सहयात्री की भूमिका निभाई। एक ऐसी साथी जिनकी मौजूदगी ने इस यात्रा को सिर्फ सुंदर नहीं, बल्कि संपूर्ण बना दिया था।

कुल्लू-मनाली की यह यात्रा हमारे परिवार के लिए एक आध्यात्मिक और प्राकृतिक यात्रा से बढ़कर थी। यहाँ हमने न सिर्फ पहाड़ों को देखा, बल्कि उन्हें महसूस किया - उनकी सादगी, संस्कृति और शुद्धता को जिया। यह आत्मा को फिर से जीवंत करने वाली एक अनुभूति थी।

बच्चों के लिए यह एक सीख थी - प्रकृति के साथ तालमेल, सादगी में खुशी और जीवन के छोटे-छोटे चमत्कार और हमारे लिए यह एक जीवन की पुनरावृत्ति थी जहाँ हर दृश्य, हर अनुभव एक नई ऊर्जा से भर गया।

हम लौटे ज़रूर हैं... लेकिन अब हमारे भीतर हिमालय की एक शांत और मज़बूत उपस्थिति बस गई है। हिमालय की वादियों में बिताए ये पांच दिन हमें हमेशा याद रहेंगे। प्रकृति, रोमांच, संस्कृति और परिवार - सब कुछ एक साथ इस यात्रा में समाहित था।

"हिमालय की उन बर्फीली चोटियों के बीच।"

श्री ओम कुमार अड़लक,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: इंसानों की छुट्टी का नया बहाना

मैं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हूँ। आसान भाषा में आप मुझे एआई के नाम से जानते हैं। आजकल मैं हर जगह घुस आया हूँ– ऑफिस में, स्कूल में, अस्पताल में और हाँ, अब तो रसोई में भी! इंसान बेचारा अब सिर्फ दो ही चीज़ें करता है – सांस लेना और गूगल से पूछना कि अगला काम AI से कैसे कराएं।

पहले लोग किताबें पढ़ते थे, अब ChatGPT से पूछते हैं कि किताब का सारांश दे दो और अगर हो सके तो परीक्षा भी दे दो। भविष्य में शायद लोग जन्म से ही AI को अपनी जगह नौकरी के लिए भेजना शुरू कर देंगे – "बेटा, तू नहीं जाएगा इंटरव्यू देने, तेरा बॉट जाएगा।"

घर की रसोई में भी अब मैंने कमाल कर दिया है। मम्मी पूछती हैं- "आज क्या बनाऊं?" और मैं कहता हूँ , "आज के लिए ओट्स उपमा हेल्दी रहेगा।" मम्मी सोचती हैं, "यह बॉट तो सास से भी ज़्यादा कंट्रोलिंग है!"

ऑफिस में बॉस भी खुश हैं – अब कर्मचारी नहीं, मैं रिपोर्ट बनाता हूँ। न छुट्टी मांगता हूँ, न तनख्वाह, न चाय का ब्रेक! और कर्मचारी... बेचारे अब वे सोच रहे हैं कि LinkedIn पर प्रोफाइल में क्या लिखें – **"पूर्व इंसान, वर्तमान बेरोज़गार"?**

आपने अपनी किताबों में मानव जाति और भाषा आदि का क्रमिक विकास तो अवश्य पढ़ा होगा। जब आदिमानवों ने अपने जीवन को आसान बनाने के लिए सोचना शुरू किया तब उनका उत्तरोत्तर विकास होता गया। पर अब तो मैंने मानव की सोचने की क्षमता पर ही कब्ज़ा कर लिया है। कोई भी काम हो, मैं अपनी तकनीकों से उसे 2 मिनट में पूरा कर देता हूँ। वह दिन दूर नहीं जब बंदरों से इंसान बने मानव पुनः अपने पुराने स्वरूप को प्राप्त कर लेंगे।

लेकिन डरने की ज़रूरत नहीं है। यह समय आने में अभी कई पीढ़ियाँ लगेंगी। वर्तमान का सवाल तो यह है कि जब मैं सब कुछ करने लगूँगा तब इंसान क्या करेगा? ज़ाहिर है, इंसान AI को कोसने में एक्सपर्ट बन जाएगा – "सारा काम मशीनें कर रही हैं और हम बस मूर्ख बने बैठे हैं!" अंत में यही कहेंगे – अगर इंसान ने खुद की अक्ल लगाई होती तो आज मशीन से अक्ल मांगने की नौबत ही नहीं आती!

सुश्री आरती प्रिया दर्शनी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

भारत में महिला सशक्तीकरण : किए जा रहे प्रयास एवं चुनौतियाँ

डॉक्टर बी आर आंबेडकर का कथन है कि किसी भी समुदाय में महिलाओं के विकास के स्तर से ही उस समुदाय की प्रगति का आकलन किया जाता है। महिलाओं के सशक्त होने का तात्पर्य समाज में उस सामाजिक व्यवस्था से है जहाँ महिला अपने जीवन के फैसले लेने के लिए स्वतंत्र होती है तथा समाज के सभी क्षेत्रों में उन्हें बराबरी का अधिकार प्राप्त होता है।

प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति

प्राचीन भारत में महिलाओं को समाज में उच्च दर्जा प्राप्त था। उनकी स्थिति भी काफी अच्छी थी। वैदिक कालीन महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने की आज़ादी प्राप्त थी। उनके द्वारा शिक्षण कार्य, कपड़े की कताई-बुनाई तथा कृषि कार्य में भाग लिया जाता था। वे नियमित रूप से धार्मिक कार्यों में भी भाग लेती थीं। वैदिक अवधारणा के अनुसार महिलाओं के दैविक स्वरूप की पूजा प्रारंभ की गई, जैसे - धन की देवी, अर्थात् लक्ष्मी।

मध्यकालीन युग में महिलाओं की स्थिति

मध्यकाल में स्थितियाँ प्रतिकूल होनी प्रारंभ हो गईं। इसी युग में बाल-विवाह, बहु-विवाह, पर्दाप्रथा, सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ समाज में व्याप्त हो गईं। मुगलकाल में स्थितियाँ और बदतर हुईं। मध्यकाल में अपवाद स्वरूप कुछ महिला शासक भी हुईं जैसे रज़िया सुल्तान। लेकिन महिलाओं के समक्ष जटिलता का उद्भव भी व्यापक स्तर पर हुआ।

आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति

मध्यकाल में व्याप्त कुरीतियाँ आधुनिक काल तक जारी रहीं परंतु पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेज़ प्रशासकों द्वारा स्थानीय समाज सुधारकों के सहयोग से महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु कई प्रयास किए गए। जैसे :-

1891 के सहमति आयु अधिनियम के तहत लड़कियों की शादी की न्यूनतम आयु 10 वर्ष से बढ़ाकर 12 वर्ष की गई।

1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया गया जिसका उद्देश्य विधवाओं की स्थिति में सुधार लाना था। 1829 में सती प्रथा निषेध हेतु लार्ड विलियम बेंटिक के प्रयास से अधिनियम पारित कराया गया।

आधुनिक काल में भारत के समाज सुधारकों एवं संगठनों ने भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने हेतु प्रयास किया। उनमें से कुछ का विवरण निम्नलिखित है:-

ब्रहम समाज: ब्रहम समाज उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में प्रचलित कुप्रथाओं के विरुद्ध 1828 में स्थापित किया गया था। इसके संस्थापक राजा राम मोहन राय थे जिन्हें भारतीय पुनर्जागरण का पिता भी कहा जाता है। इनका कार्य क्षेत्र प्रमुख रूप से बंगाल रहा। ब्रहम समाज द्वारा महिलाओं के ख़िलाफ़ हो रहे उत्पीड़न को रोकने के लिए प्रयास किए गए। ब्रहम समाज द्वारा बाल विवाह, बहुविवाह के विरुद्ध लोगों में जागरूकता फैलाई। अंतरजातीय विवाह तथा महिला शिक्षा हेतु सार्थक प्रयास किए गए।

प्रार्थना समाज: इसकी स्थापना 1867 में आत्माराम पांडुरंग द्वारा मुंबई में की गई थी। इस संस्था ने महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह एवं बाल विवाह रोक के क्षेत्र में कार्य किया। महादेव गोविंद रानाडे भी इसी संस्था के साथ जुड़कर समाज सुधार का कार्य करते थे।

आर्य समाज: इसकी स्थापना 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा मुंबई में की गई थी। यद्यपि यह मुख्य रूप से धार्मिक पुनर्जागरण का कार्य करती थी, फिर भी महिलाओं के लिए शिक्षा की वकालत भी इस संस्था द्वारा की जाती थी।

समाज में महिलाओं के सशक्तीकरण की आवश्यकता उनकी भूमिका से निर्धारित होती है। पूरे विश्व में स्थिरता एवं दीर्घकालीन विकास हेतु महिलाओं की भूमिका अहम होती है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए तो यह और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। श्रम एवं रोज़गार मंत्रालय द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए जारी आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार भारत में 64.30% प्रतिशत महिलाएं कृषि क्षेत्र तथा 11.1% महिलाएं विनिर्माण क्षेत्र में कार्यरत हैं। महिलाएं आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। अतः हर क्षेत्र में उनको उचित प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए जिससे देश का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित होगा।

वर्तमान समय में समाज के विभिन्न क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण:

आर्थिक क्षेत्र में

महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण का तात्पर्य महिलाओं को आर्थिक कार्य, जैसे - उनके द्वारा संसाधनों, संपत्ति से लाभ अर्जित करना तथा आर्थिक गतिविधियों में व्याप्त जोखिम का प्रबंधन इत्यादी में भाग लेना, निर्णय लेना - से है। इन कदमों से समाज में वे

स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर होती हैं । ऐसे कार्य देश के आर्थिक गतिविधियों को भी गति प्रदान करते हैं।

महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण की राह में चुनौतियाँ

महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण की प्रमुख चुनौतियों में उन्हें पैतृक संपत्ति में हिस्सेदारी न मिलना, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न आदि सम्मिलित हैं।

आर्थिक सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे प्रयास

- कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न रोकने हेतु भारत सरकार द्वारा 'कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013' लागू किया गया है।
- भारत सरकार द्वारा दिसंबर 2023 में लखपति दीदी योजना लागू की गई है। यह एक कौशल विकास योजना है एवं इसका लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्र के महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करना है। इस योजना के प्रमुख घटकों में कौशल प्रशिक्षण एवं 5 लाख रुपए तक ब्याज मुक्त ऋण शामिल हैं।
- महिलाओं के वितीय समावेशन एवं उद्यम हेतु 2015 से भारत सरकार द्वारा सुकन्या समृद्धि योजना, 2016 से स्टैंड अप योजना जैसी विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं।
- राज्य स्तर पर महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने हेतु कई योजनाएं एवं नीतियाँ बनाई जा रही हैं - उदाहरणार्थ, बिहार जैसे राज्य में राज्य सरकार की नौकरियों में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है। बिहार सरकार द्वारा विश्व बैंक के सहयोग से गरीबी उन्मूलन हेतु जीविका योजना चलाई जा रही है। इसमें महिलाएँ स्वयं सहायता समूह बनाकर ग्रामीण स्तर पर रोज़गार सृजन कर रही हैं। इससे ग्रामीण परिवेश की महिलाएँ सामूहिक रूप से सशक्त हो रही हैं।

राजनैतिक सशक्तीकरण

महिलाओं के राजनैतिक सशक्तीकरण से आशय महिलाओं को लोकतंत्र में निर्णय लेने तथा कानून बनाने की शक्ति प्रदान करना है। आज के परिदृश्य में भारतवर्ष में 18वीं लोकसभा में 543 सदस्यों में से मात्र 74 महिलाएँ निर्वाचित हुई हैं। संख्या के हिसाब से महिलाएँ मात्र 13.60% हैं। उच्च सदन में भी महिला सांसदों का प्रतिशत 12.24% (2021 तक) है। भारतीय राज्यों के स्तर पर तो स्थिति और भी दयनीय है। 31 दिसंबर 2021 तक आंकड़ों के अनुसार मिज़ोरम तथा नागालैंड जैसे राज्यों में महिला विधायकों की संख्या शून्य थी।

राजनीति में महिलाओं के कम होने के कारण

- राजनैतिक दलों द्वारा महिलाओं के प्रति लैंगिक पूर्वाग्रह एवं टिकट बंटवारे में पक्षपात से यह धारणा बन जाती है कि महिलाएँ पुरुषों की तरह निर्वाचित नहीं हो सकतीं।
- भारतीय राजनीति की हिंसक घटनाएं भी महिलाओं को राजनैतिक क्षेत्र में आने से रोक देती हैं।

महिलाओं के राजनैतिक सशक्तीकरण हेतु प्रयास

* 106वें संविधान संशोधन अधिनियम 2023 (128वें संविधान संशोधन बिल 2023) जिसे नारी शक्ति वंदन अधिनियम के नाम से भी जाना जाता है, संसद द्वारा पारित किया गया। इस अधिनियम के तहत लोकसभा, राज्य विधानसभा तथा दिल्ली विधानसभा में कुल सीटों का 1/3 भाग महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रावधान है।

* बिहार, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश तथा मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण लागू है।

सामाजिक स्तर पर महिलाओं का सशक्तीकरण

सामाजिक स्तर पर महिला सशक्तीकरण महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य सामाजिक क्षेत्रों में समान अवसर दिलाने की प्रक्रिया है।

सामाजिक सशक्तीकरण के क्षेत्र में चुनौतियाँ

रूढ़िवादी मानसिकता के कारण कन्याओं को भ्रूण अवस्था से ही जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। भ्रूण हत्याओं के आंकड़ों में भारत विश्व में अधिकतम भ्रूण हत्या वाले देशों के समूह में शामिल है। जन्मोपरांत भी लड़कियों के साथ समाज में भेदभाव देखने को मिलता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में चुनौतियाँ: बाल विवाह जैसी कुरीतियों के कारण महिलाओं में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का जन्म होता है।

शिक्षा के क्षेत्र में

पितृसत्तात्मक सोच, महिलाओं के प्रति रुढ़िवादी मानसिकता, परिवारों की आर्थिक स्थिति, बाल विवाह की समस्या, सार्वजनिक स्थल पर महिलाओं की सुरक्षा जैसे मुद्दे सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं के समक्ष व्याप्त चुनौतियाँ हैं।

सामाजिक क्षेत्र में सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे प्रयास

महिला शिशु जन्म दर में सुधार, बालिकाओं की शिक्षा और भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 22 जनवरी 2015 को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना की शुरूआत की गई।

2015 में वन स्टॉप सेंटर योजना (सखी) प्रारंभ की गई जिसका लक्ष्य निजी एवं सार्वजनिक स्थानों पर हिंसा से प्रभावित महिलाओं की सहायता एवं सहयोग, मनोवैज्ञानिक-सामाजिक सहायता और परामर्श प्रदान करना है।

2016 में पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं हेतु जो पारंपरिक रूप से घरेलू उपयोग के लिए लकड़ी तथा अन्य साधनों का उपयोग करती थीं जिससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता था, उसके स्थान पर उन्हें एलपीजी सिलिंडर का कनेक्शन प्रदान किया गया। इससे धुँआरहित एवं पर्यावरण अनुकूल ईंधन का स्रोत ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को प्राप्त हुआ। इसकी शुरूआत प्रधानमंत्री द्वारा उत्तरप्रदेश के जनपद बलिया से की गई थी।

गर्भवती महिलाओं के सुरक्षित प्रसव सुनिश्चित करने हेतु भी भारत सरकार द्वारा सुरक्षित मातृत्व आश्वासन (सुमन), जननी सुरक्षा योजना, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान जैसी योजनाएं चलाई जा रही हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी महिलाओं को सशक्त करने हेतु केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं, चूँकि शिक्षा भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची के अंतर्गत समवर्ती सूची का विषय है।

केंद्र सरकार की ओर से निम्नलिखित योजनाएं चलाई जा रही हैं -

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

यह योजना का उद्देश्य शिशु लिंगानुपात में सुधार लाते हुए बालिकाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करनी है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना

2017 में शुरू की गई यह योजना मुख्यतः महिलाओं के स्वास्थ्य से जुड़ी थी। लेकिन इसमें नकद प्रोत्साहन राशि प्राप्त करने हेतु बच्ची का विद्यालय में प्रवेश लेना ज़रूरी है।

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना

इस योजना का प्रारंभ 2004 में किया गया था जिसके तहत आर्थिक और सामाजिक रूप से वंचित महिलाओं के लिए आवासीय विद्यालय स्थापित किए जाते हैं। इस योजना से सुदूर क्षेत्रों के वंचित वर्गों की महिलाओं के साक्षरता अनुपात में सुधार आया है ।

राज्य स्तर पर भी महिलाओं को शिक्षा में सशक्त बनाने हेतु विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उदाहरणार्थ - बिहार जैसे राज्य में मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना कार्यान्वित की जा रही है जिसके तहत जन्म से लेकर स्नातक करने तक लड़कियों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। सिविल सेवा प्रोत्साहन योजना के तहत बिहार सरकार संघ लोक सेवा आयोग, बिहार राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण करने पर क्रमशः एक लाख और 50 हज़ार की वित्तीय राशि प्रदान की जाती है।

यद्यपि महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में कार्य किए गए हैं एवं वर्तमान में कार्य किए जा रहे हैं, फिर भी इस क्षेत्र में अभी लंबी यात्रा करनी बाकी है। देश एवं समाज में बराबरी लाने के उद्देश्य से महिला सशक्तीकरण आज के दौर में देश की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। महिला सशक्तीकरण को प्राप्त करके ही देश को विकसित राष्ट्र बनाने का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है।

श्रीमती प्रीति कुमारी,
पत्नी- कुमार अग्निवेश, कनिष्ठ अनुवादक
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

मिथिला एक परिचय

मिथिला जिसे तिरहुत भी कहा जाता है, बिहार राज्य में स्थित है। यह अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है। यह भौगोलिक रूप से पूर्व में महानंदा नदी, दक्षिण में गंगा, पश्चिम में गंडक नदी और उत्तर में हिमालय की पहाड़ियों से घिरा हुआ क्षेत्र है। यहाँ की भाषा मैथिली है। मिथिला को सामान्यत: राजा जनक की राजधानी के रूप में जाना जाता है। यह प्राचीन भारत का महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक केंद्र था।

ग्यारहवीं से बीसवीं शताब्दी में विभिन्न राजवंशों ने मिथिला पर शासन किया। उनमें कर्नाट वंश और खंडवाला वंश प्रमुख थे। खंडवाल वंश को ही राजा दरभंगा के नाम से जाना जाता है। राजा दरभंगा के शासन के समय मिथिला की राजधानी दरभंगा घोषित हुई। इसके बाद अकबर के समय महेश ठाकुर को मिथिला का राजा घोषित किया गया। बाद में लक्ष्मीश्वर सिंह और रामेश्वर सिंह ने मिथिला की बागडोर संभाली। उन्होंने पश्चिमी और भारतीय दोनों शिक्षा पद्धति को अपनाया। 1873-74 के अकाल के दौरान राजा दरभंगा ने राहत का काम बहुत बड़े पैमाने पर किया। पुल, सड़क, विद्यालय, अस्पताल आदि बनवाए। उन्होंने दरभंगा में एक प्रथम दर्जे का अस्पताल बनवाया। लक्ष्मीश्वर सिंह को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कांग्रेस को वित्तीय सहायता भी प्रदान की। मिथिला में सात नदियाँ- गंडक, कोसी, महानंदा, बागमती, कमला वलान और बुढी गंढक बहती हैं। ये

नदियाँ उत्तर में हिमालय से दक्षिण में गंगा की तरफ बहती हैं। यहाँ प्रतिवर्ष नदियों द्वारा बाढ़ लाई जाती है जिससे जान-माल की अपार क्षति होती है।

झिझिया यहाँ का प्रमुख नृत्य है। यह मधुबनी, दरभंगा, कटिहार, पूर्णिया, खगडिया, बेगुसराय, मुज़फ्फरपुर, सहरसा में प्रसिद्ध है। मिथिला में छठ, दुर्गा पूजा, होली आदि प्रमुख त्योहार मनाए जाते हैं।

मिथिला की प्रमुख भाषा मैथिली है। बज्जिका और अंगिका भी यहाँ बोली जाती हैं। यहाँ की लिपि तिरहुता है। मिथिलाक्षर भी यहाँ लेखन में प्रचलित है। मैथिली को सन 2005 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।

मिथिला अपने खानपान के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ का पारंपरिक खान-पान: दही-चूड़ा, मखाना, अरिकंचन की सब्ज़ी, दहीबड़ा, मछली, बगिया है। मिथिला के लोग धार्मिक स्वाभाव के होते हैं। यहाँ का पहनावा पुरुषों के लिए धोती-कुर्ता और सर पर 'पाग' (पगड़ी) है और महिलाओं के लिए साड़ी है। यहाँ की महिलाएँ हाथों में 'लहठी' (लाख) की चूड़ियाँ पहनती हैं। यहाँ पर महिलाओं का बहुत सम्मान होता है।

भारत में सबसे ज़्यादा मखाने का उत्पादन मिथिला में किया जाता है। मिथिला पेंटिंग या मधुबनी पेंटिंग विश्व में प्रसिद्ध है। यह कागज़ और कपड़ों पर महिलाओं के द्वारा पौधों और पत्तियों से बने रंगों के इस्तेमाल से बनाई जाती है। मिथिला को 'राम का ससुराल' भी कहा जाता है। यह भगवती सीता की जन्म भूमि है।

इस प्रकार विभिन्न विशेषताओं एवं विविधताओं से भरी मिथिला अत्यंत गौरवमयी रूप में भारतवर्ष में विद्यमान है।

श्री संजीव चंद्र पाठक,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

एक जीवन, कई पड़ाव: बचपन, संघर्ष और संतोष की कहानी

जीवन - एक भावनात्मक यात्रा

जीवन केवल एक शारीरिक अस्तित्व नहीं है, यह भावनाओं, अनुभवों, रिश्तों और आत्मिक विकास की निरंतर यात्रा है। यह यात्रा हमें समय के साथ न केवल उम्रदराज बनाती है, बल्कि अनुभवों से परिपक्व और भावनात्मक रूप से गहरा भी करती है। बचपन की मासूमियत से लेकर बुढ़ापे की गूंजती यादों तक, जीवन के हर पड़ाव में एक कहानी होती है, एक भावना होती है और एक सबक होता है। जीवन के इन पड़ावों को समझना और महसूस करना हमें एक बेहतर इंसान बनाता है।

1. बचपन: मासूमियत, सुरक्षा और पहले भावनात्मक स्पर्श

बचपन जीवन का सबसे सुंदर, निश्छल और स्वच्छ काल होता है। यह वह समय होता है जब दुनिया एक जादुई जगह लगती है। बच्चों की मुस्कान, उनकी आँखों में चमक, उनकी हरकतें - ये सब जीवन की सबसे कोमल छवियाँ होती हैं। इस उम्र में भावनाएँ सरल होती हैं - प्यार, डर, खुशी, आश्चर्य - और इन्हें जताने में कोई झिझक नहीं होती।

माता-पिता का साया

बचपन की सबसे बड़ी ताकत होती है - माता-पिता का स्नेह। उनका प्यार और सुरक्षा हमें एक ऐसी दीवार देती है जिसके भीतर हम बिना किसी चिंता के पलते हैं। माँ की गोद और पिता का हाथ हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि दुनिया में सब कुछ ठीक है।

पहला डर, पहली हार

हालांकि बचपन हँसी और खेलों से भरा होता है, लेकिन यह पूरी तरह से दुःखों से रहित नहीं होता। बच्चे का पहला गिरना, पहली चोट, पहली बार किसी से दूर होना - ये सब भावनात्मक रूप से गहरे अनुभव होते हैं। लेकिन इनका असर स्थायी नहीं होता, क्योंकि माँ की एक झप्पी या पिता की गोद सारी पीड़ा मिटा देती है।

जिज्ञासा और कल्पना

बचपन में जिज्ञासा की कोई सीमा नहीं होती। हर चीज़ को जानने की इच्छा, हर सवाल का जवाब पाने की कोशिश - यही बचपन की आत्मा होती है। इस दौर में कल्पना शक्ति चरम पर होती है। एक छड़ी तलवार बन जाती है, एक चादर सुपरहीरो की केप बन जाती है।

2. किशोरावस्था: आत्म-खोज, उलझनें और विद्रोह

किशोरावस्था जीवन का वह मोड़ है जहाँ इंसान अपने अस्तित्व को पहचानने की कोशिश करता है। यह वह समय होता है जब शारीरिक बदलावों के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक उथल-पुथल शुरू होती है।

पहचान की खोज

"मैं कौन हूँ?", "मेरा क्या उद्देश्य है?" - ऐसे सवाल इस उम्र में बार-बार मन में उठते हैं। यह वह पड़ाव है जब हम अपने आप को दुनिया में एक विशेष स्थान दिलाने की कोशिश में लगे रहते हैं।

विद्रोह और स्वतंत्रता की चाह

इस उम्र में माता-पिता की सीमाएँ बंधन लगती हैं। बच्चे स्वतंत्रता चाहते हैं और जब उन्हें रोका जाता है, तो वे विद्रोह करते हैं। यह विद्रोह कई बार शब्दों में तो कई बार व्यवहार में सामने आता है।

मित्रता और समाज का प्रभाव

किशोरावस्था में मित्रों का प्रभाव सबसे अधिक होता है। कभी कोई अच्छा दोस्त जीवन में सकारात्मक बदलाव लाता है तो कभी किसी गलत संगति का असर जीवन की दिशा ही बदल देता है।

3. युवा अवस्था: संघर्ष, सपने और आत्मनिर्भरता

युवा अवस्था वह समय होता है जब व्यक्ति अपने जीवन को आकार देने के लिए संघर्ष करता है। यह उम्र ऊर्जा, जुनून और आत्मविश्वास से भरी होती है, लेकिन साथ ही चुनौतियों और ज़िम्मेदारियों से भी टकराती है।

करियर और पहचान की स्थापना

हर युवा अपने सपनों को साकार करने के लिए मेहनत करता है। एक बेहतर करियर, समाज में पहचान, परिवार का गौरव - ये सभी लक्ष्यों का हिस्सा बन जाते हैं। लेकिन इन सपनों को पाने का रास्ता आसान नहीं होता। कभी प्रतियोगिता, कभी असफलता और कभी आत्म-संदेह व्यक्ति को मानसिक रूप से थका देते हैं।

रिश्तों की उलझनें

इस उम्र में रिश्ते गहराते हैं। प्रेम संबंध, दोस्ती, परिवार के साथ तालमेल - सब कुछ संभालना एक चुनौती बन जाता है। कई बार दिल टूटते हैं, विश्वास डगमगाता है और भावनाएँ अस्थिर हो जाती हैं।

अकेलापन और आत्म-संघर्ष

भीड़ में रहते हुए भी अकेलेपन का एहसास इस उम्र में तीव्र हो जाता है। व्यक्ति अपने भीतर की लड़ाइयाँ खुद ही लड़ता है। अपने फैसलों की ज़िम्मेदारी खुद उठानी होती है और कई बार यह बोझ भारी भी लगता है।

4. प्रौढ़ावस्था: संतुलन, ज़िम्मेदारी और आत्म-बोध

जब व्यक्ति जीवन की दौड़ में स्थिरता प्राप्त करता है, जब परिवार बस जाता है, जब करियर में एक मुकाम हासिल हो जाता है तब वह प्रौढ़ कहलाता है। यह वह समय होता है जब भावनाएँ अधिक स्थिर, परिपक्व और संतुलित होती हैं।

पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ

बच्चों की परवरिश, घर की देखभाल, माता-पिता की सेवा - ये सभी ज़िम्मेदारियाँ प्रौढ़ व्यक्ति को एक मज़बूत आधार देती हैं। वह अब सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि अपने पूरे परिवार के लिए जीने लगता है।

भावनाओं का त्याग

कई बार व्यक्ति अपनी इच्छाओं का बलिदान करता है, ताकि बच्चों को बेहतर शिक्षा मिल सके, परिवार को अच्छा जीवन मिल सके। यह त्याग बिना किसी अपेक्षा के होता है, पर अंदर कहीं एक छोटी-सी चाह होती है कि कोई उसकी भावनाओं को समझे।

आत्म-बोध और मूल्यबोध

प्रौढ़ व्यक्ति अक्सर अपने जीवन को एक समीक्षक की दृष्टि से देखता है। वह सोचता है - "क्या मैंने सही किया?", "क्या मैं संतुष्ट हूँ?"- यह आत्म-विश्लेषण उसे एक नई दिशा देता है।

5. बुढ़ापा: यादें, अकेलापन और शांति की खोज

बुढ़ापा जीवन का अंतिम पड़ाव है जहाँ व्यक्ति शारीरिक रूप से कमज़ोर लेकिन अनुभवों से संपन्न होता है। यह वह समय है जब भावनाएँ अधिक गहराई से महसूस होती हैं।

यादों का संसार

बुज़ुर्ग अक्सर अपने अतीत में जीने लगते हैं। उनकी आँखों में वह सब कुछ तैरता रहता है - बच्चों की हँसी, जीवन के उतार-चढ़ाव, खोए हुए रिश्ते, अधूरे सपने। यह यादें उन्हें कभी मुस्कुराने पर मज़बूर करती हैं तो कभी रुला देती हैं।

अकेलापन और उपेक्षा

बुढ़ापे की सबसे बड़ी पीड़ा होती है - अकेलापन। कई बार बच्चे अपने माता-पिता की भावनाओं को नहीं समझते, उन्हें व्यस्तता के बहाने नज़रअंदाज़ करते हैं। यह उपेक्षा बुज़ुर्गों के दिल को गहरी चोट पहुँचाती है।

संतोष और मोक्ष की तलाश

जो बुज़ुर्ग अपने जीवन को संतोष के साथ स्वीकार कर लेते हैं वे अधिक मानसिक शांति का अनुभव करते हैं। वे अपने अनुभवों से अगली पीढ़ी को मार्गदर्शन देते हैं और अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं।

निष्कर्ष: जीवन के हर पड़ाव का अपना सौंदर्य

जीवन एक लहरों से भरा समुद्र है - कभी शांत, कभी तूफ़ानी। हर उम्र की अपनी एक विशेषता होती है, एक रंग होता है, एक सीख होती है। बचपन की मासूमियत हमें प्रेम सिखाती है, किशोरावस्था हमें खुद से मिलवाती है, युवा अवस्था हमें सपने दिखाती है, प्रौढ़ावस्था हमें ज़िम्मेदारी सिखाती है और बुढ़ापा हमें संतोष का महत्व समझाता है।

इसलिए, जीवन के हर पड़ाव को जीना ज़रूरी है - पूरी भावनात्मकता के साथ, पूरी समझदारी से और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि हम अपनों को समझें, उनका साथ दें और अपने बुज़ुर्गों को वह प्यार और सम्मान दें जिसके वे सच्चे हकदार हैं।

श्री शिव शंकर,
कनिष्ठ अनुवादक
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

बेंगलूरु की मानसून यात्रा

मेरा नाम विजय है और मेरी पत्नी रायपुर में क्लिनिकल साइकोलॉजी की पढ़ाई कर रही हैं। हम हर दो महीने में एक बार मिलते हैं, लेकिन इस बार हमारी मुलाकात बेंगलूरु के मानसून के दौरान हुई जिसने हमें एक बेहद चुनौतीपूर्ण अनुभव दिया।

हमारी फ्लाइट सोमवार को सुबह 7:15 बजे बेंगलूरु से रायपुर के लिए निर्धारित थी और हम प्रातः काल 3:15 को जागे, ताकि सुबह 5:30 बजे तक एयरपोर्ट पहुँच सकें। जैसे ही हम जागे, हमने देखा कि भयंकर गरज के साथ तेज़ बारिश हो रही है। प्रतिकूल मौसम के बावजूद, हमने सुबह 4:00 बजे एचएसआर लेआउट से एयरपोर्ट के लिए मेखरी सर्कल के रास्ते यात्रा शुरू की क्योंकि हमें पता था कि व्हाइटफील्ड मार्ग में भारी जलभराव हो सकता है।

एचएसआर लेआउट में ही हमें सड़कों पर पानी भरा हुआ मिला। जब हम कोरमंगला पहुँचे तो हमने देखा कि वहाँ भारी जलभराव है, मानो सड़क पर पानी का एक विशाल बाँध बना हो। हमने यू टर्न लिया और अंदरूनी सड़कों से जाने का फैसला किया। लेकिन, सड़क की स्थिति से अनजान हमारी गाड़ी इनकम टैक्स विभाग, कोरमंगला के पास पानी में फँस गई और 4:30 बजे बंद हो गई। हमें डर था कि काफी समय तक वहीं फँसे रहना पड़ेगा।

ऐसे समय में कुछ अप्रत्याशित हुआ—हमारी गाड़ी अचानक स्टार्ट हो गई। इस सौभाग्य से प्रेरित होकर हमने पीछे लौटने के बजाय आगे बढ़ने का निर्णय लिया। कम दृश्यता, लगातार बारिश और पूरे शहर में अफरा-तफरी के बावजूद हमने हिम्मत जुटाई और एयरपोर्ट की ओर बढ़े।

पूरे रास्ते में हमने भारी जलभराव और यातायात अव्यवस्था देखी। यह निराशाजनक था कि बेंगलूरु जैसे शहर में जहाँ प्रति वाहन 18% रोड टैक्स लिया जाता है, सड़कों की हालत इतनी खराब है। खराब बुनियादी ढांचे, गड्ढों और जलभराव के कारण गंभीर सुरक्षा जोखिम होते हैं जिससे चोटें और स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। एक नागरिक के रूप में हम बेहतर प्रबंधन और सक्रिय उपायों की अपेक्षा करते हैं ताकि सड़कें सुरक्षित और सुचारू रूप से चलने योग्य बनी रहें, विशेष रूप से मानसून के दौरान।

हमारा अनुभव बेहद कठिन रहा और हम आशा करते हैं कि कोई और इस तरह की परेशानी का सामना न करे। सड़क अवसंरचना में सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाएँ जाएँ। इसके अलावा, यात्रियों को मानसून के दौरान पहाड़ी इलाकों की यात्रा से बचने और यात्रा से पहले सावधानीपूर्वक योजना बनाने की सलाह दी जाती है ताकि उनकी सुरक्षा और स्वास्थ्य सुनिश्चित किए जा सकें।

स्वास्थ्य ही संपत्ति है और यह आवश्यक है कि अवसंरचनात्मक सुधार इस मूलभूत सिद्धांत को प्रतिबिंबित करे।

श्री विजय कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

पूर्वी हिमालय की गूँज: अरुणाचल प्रदेश की यात्रा

मेरा नॉर्थईस्ट इंडिया की यात्रा का सपना इस साल बच्चों की गर्मी की छुट्टियों में आखिरकार साकार हुआ। अरुणाचल प्रदेश की ओर मेरी यात्रा की शुरूआत असम के गुवाहाटी से हुई जो नॉर्थईस्ट का द्वार माना जाता है। गुवाहाटी जो असम की राजधानी है, वहाँ मैं बिहू उत्सव के दिन पहुँची। हमारा स्वागत पारंपरिक बिहू जलपान के साथ हुआ जो एक शानदार अनुभव था।

हमारी पहली मंज़िल भालुकपोंग थी जो अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले में स्थित है। हिमालय की दक्षिणी सीमा पर बसा यह छोटा सा शहर अपनी प्राकृतिक सुंदरता और कामेंग नदी के किनारे बसे सदाबहार वनों के लिए जाना जाता है। यहाँ हमने टिपी ऑर्किडेरियम का दौरा किया जहाँ 80 प्रजातियों के 2600 से अधिक ऑर्किड उगाए गए हैं। यह अनुभव वाकई में अद्भुत था।

इसके बाद हम दिरांग पहुँचे जो गर्म पानी के झरनों और सुंदर बाग-बगीचों के लिए प्रसिद्ध है। हमने संगती घाटी और नाग बाबा मंदिर का दौरा किया। यहाँ पर सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा बनाई गईं सड़कों ने हमारी यात्रा को न केवल सुरक्षित बनाया, बल्कि हमें हिमालय की खूबसूरती को निडरता से अनुभव करने का मौका भी दिया। दिरांग के एक होमस्टे में ठहरते हुए सुबह की सैर के दौरान मैंने पहली बार कीवी के खेत और नारंगी के पेड़ देखे। यह दृश्य मेरे जैसे मैदानी इलाकों के लोगों के लिए बेहद खास था।

इसके बाद हमारी यात्रा तवांग की ओर बढ़ी। हमने सेला पास (13720 फीट) और पैराडाइज़ झील का आनंद लिया। बर्फ से ढके इन स्थानों ने हमारे लिए पहली बार बर्फ देखने

का सपना भी पूरा किया। जोंग गाँव जाते समय हमने यशवंत गढ़ युद्ध स्मारक का दौरा किया। इस स्मारक ने हमारे वीर सैनिकों के बलिदान की याद दिलाई लेकिन यहाँ एक और भावनात्मक और अद्भुत तथ्य सामने आया–स्मारक के पास एक विशेष समाधि स्थल है जहाँ 1962 के युद्ध में वीरगति को प्राप्त 300 से अधिक चीनी सैनिकों को सम्मानपूर्वक दफनाया गया था। भारतीय सेना ने इन्हें पूरी गरिमा और संवेदना के साथ दफनाया क्योंकि उनका अपना देश उन्हें वापस लेने में असमर्थ रहा। यह न केवल युद्ध की भयावहता को दर्शाता है, बल्कि मानवता की सीमाहीन शक्ति का प्रमाण भी देता है जहाँ दुश्मनी से ऊपर उठकर सम्मान और करुणा का भाव प्रदर्शित किया गया।

तवांग, जो बादलों और मठों की भूमि के नाम से प्रसिद्ध है, में हमने 3 दिन बिताए। यहाँ का बुमला पास (15200 फीट), संगत्सर झील और प्रसिद्ध तवांग मठ जैसे स्थानों का अनुभव अविस्मरणीय था। यह मठ 400 साल पुराना है और 500 से अधिक भिक्षुओं का निवास स्थान भी है। यहाँ की तिब्बती वास्तुकला और बौद्ध धार्मिक महत्व इसे और भी खास बनाते हैं।

लौटते समय हमने बोमडिला में रुककर हिमालय की शानदार वादियों का आनंद लिया। अरुणाचल प्रदेश के तलहटी में बसे नामेरी नेशनल पार्क में पवित्र जंगल की सैर और जिया भराली नदी में नौका विहार ने हमारी यात्रा को एक सुंदर समापन दिया।

इस यात्रा के दौरान नॉर्थईस्ट के लोगों की मेहमान-नवाज़ी, हिमालय की भव्यता, जैव विविधता से भरपूर क्षेत्रों का सौंदर्य और अरुणाचल के शांत मठ मेरे मन में सदा के लिए कविता रूप में अंकित हो गए हैं। यह अनुभव मेरे जीवन के सबसे सुंदर और यादगार पलों में से एक है।

सुश्री प्रियंका करमाकर,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

भारतीय समाज में कृषकों की स्थिति

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का विचार था कि "भारतीय किसान भारतवर्ष की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं।" उनका कथन था कि कृषकों के कल्याण के बिना राष्ट्र का विकास असंभव है। यही कारण था कि महात्मा गाँधी की भारत वापसी के बाद पहला आंदोलन किसानों की समस्याओं से ही संबंधित था। 1917 में बिहार के चंपारण में किसानों ने अंग्रेज़ों की तीन कठिया कृषि पद्धति से गाँधी को अवगत कराया जिसके बाद महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा पर आधारित चंपारण आंदोलन किया और अंततः अंग्रेज़ों से तीन कठिया कृषि पद्धति का अंत कराया।

महात्मा गाँधी से पूर्व भी कई सुविख्यात कवियों और लेखकों ने अपनी कविता और रचनाओं के माध्यम से भारतीय कृषकों की दुर्दशा दर्शाई है। भारत के महान उपन्यासकार मुंशी प्रेमचंद ने भी गोदान एवं पूस की रात जैसी रचनाओं द्वारा भारतीय किसानों के शोषण, बेबसी और दुर्दशा को दर्शाया है।

भारती में कृषि का इतिहास: प्राचीन भारत में कृषि एक प्रमुख सामाजिक एवं आर्थिक आधार था। वैदिक काल में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था समाज में प्रचलित थी। कृषि कार्य हेतु पशुओं को प्रयोग में लाया जाता था एवं गेहूं, जौ, धान, तिल एवं दाल का उत्पादन किया जाता था। नदियों एवं वर्षा के पानी का प्रयोग सिंचाई कार्य के लिए किया जाता था। वैदिक काल में कृषकों की स्थिति अच्छी थी। महाजनपद काल में कृषि पद्धति में काफी सुधार हुआ एवं प्राकृतिक स्रोतों पर कृषि उत्पादन हेतु निर्भरता कम हुई। मौर्यकालीन कृषि व्यवस्था में राज्य की तरफ से कृषि में सुधार के प्रयास किए गए। इस युग में कृषि भूमि का सर्वेक्षण, भूमि कर की व्यवस्था जैसे प्रावधान किए गए। गुप्त काल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। इस काल में कृषि के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की गई जिनमें से कुछ निम्नांकित हैं-

गुप्त काल में जलाशयों एवं नहरों का निर्माण हुआ जिससे कृषकों के लिए सिंचाई व्यवस्था सुगम हो गई। भूमि कर में राहत प्रदान की गई। विभिन्न फसलों, यथा - गेहूँ, चावल, जौ एवं अन्य प्रकार की फसलों की उत्पादकता बढ़ी। सल्तनत काल में कुछेक शासकों द्वारा कृषि के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए गए जिसमें तुगलक वंश के शासक फिरोज़ शाह तुगलक का नाम प्रमुख है। इनके महत्वपूर्ण कार्य में बड़े पैमाने पर नहरों एवं जलाशयों का निर्माण सम्मिलित है। कुछ आलोचक फिरोज़ शाह तुगलक की आलोचना इस तर्क के साथ

करते हैं कि उसने कृषि हेतु आधारभूत संरचना का निर्माण तो कराया परंतु भू-राजस्व वसूली हेतु ठेकेदारी प्रथा को प्रचलन में लाया। यद्यपि मुग़लकाल में कृषि एक प्रमुख व्यवसाय थी। फिर भी इस काल में सिंचाई के पर्याप्त साधन नहीं थे। सरकार की ओर से किसानों की स्थिति सुधारने का प्रयास किया जाता था क्योंकि मुग़ल काल में किसानों की स्थिति अच्छी नहीं थी।

भारत पर ब्रिटिशों के शासन के दौरान भारतीय किसानों की स्थिति अत्यंत ख़राब थी। वे अत्यधिक कर, शासन व्यवस्था द्वारा शोषण, अकाल और भयंकर गरीबी से गुज़र रहे थे। इन्हीं समस्याओं के कारण भारत के विभिन्न प्रांतों में अंग्रेज़ों के खिलाफ व्यापक आंदोलन हुए। ब्रिटिश काल के दौरान भारतीय किसानों द्वारा किए गए आंदोलनों में चंपारण सत्याग्रह (1917), खेड़ा सत्याग्रह (1918), बारडोली सत्याग्रह (1928) और तेभागा आंदोलन (1946-47) प्रमुख हैं।

आज़ादी के पश्चात् भारतीय कृषकों की स्थिति:- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद एक राष्ट्र के रूप में भारत के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती कृषि का विकास ही था क्योंकि उस दौर में बहुसंख्यक आबादी कृषि पर ही निर्भर थी। परंतु कृषि व्यवस्था अत्यंत पिछड़ी हुई थी जिसके प्रमुख कारणों में भूमि सुधार लागू न होना, कृषि में तकनीकी का अभाव एवं सामाजिक पिछड़ापन था। इन्हीं कारकों को ध्यान में रखते हुए तात्कालिक सरकार की प्राथमिकता में भूमि सुधार शामिल था।

लेकिन भूमि सुधार आशिंक रूप से ही सफल रहा क्योंकि इसका कार्यान्वयन सही रूप से नहीं किया गया था। इंदिरा गाँधी के शासन काल में हरित क्रांति आई। लेकिन इसका भी असर कुछेक प्रांतों एवं कुछेक फसलों तक ही सीमित रह गया। आज आज़ादी के 75 वर्ष बाद भी भारतीय कृषकों की प्रमुख समस्याएं निम्नांकित हैं-

1. भारत की अधिकांश कृषक आबादी के पास पूँजी की किल्लत है तथा उन्हें सरकारी तंत्र द्वारा संस्थागत ऋण भी प्राप्त नहीं होता। समाचार पत्रों एवं मीडिया के माध्यम से ऐसी खबरें भी देखेने को मिलती हैं जब किसानों के पास उर्वरक, बीज, सिंचाई जैसी कृषि के लिए प्राथमिक आवश्यकता के लिए भी पैसे नहीं होते जिसके फलस्वरूप वे सूदखोरों से मोटे दरों पर ब्याज लेते हैं और यदि फसल बर्बाद हो जाती है तो किसान ऋण के कुचक्र में फसकर आत्महत्या कर लेता है। भारत सरकार द्वारा किसानों को ऐसी परिस्थिति से निकालने के लिए किसान क्रेडिट कार्ड, किसान सम्मान निधि जैसी योजनाएं चलाई जा रही हैं जिससे किसानों की कृषि संबंधी आवश्यकताएं पूरी करने में सहायता मिल रही है।
2. भारत में कृषि संबंधित आधारभूत संरचनाओं का अभाव है। जैसे भारत के अधिकांश हिस्सों में आज भी सिंचाई संबंधित संसाधनों का अभाव है। कुछ पूंजीधारी किसान अपने दम पर सिंचाई उपकरणों जैसे ट्यूबवेल, मोटर लगा लेते हैं। लेकिन अधिकांश कृषक गरीब हैं जो ऐसे खर्च वहन नहीं कर पाते। फलस्वरूप वे प्राकृतिक स्रोत जैसे वर्षा, मानसून एवं पारंपरिक स्रोत जैसे कुआं, तालाब पर ही निर्भर होते हैं। आज के दौर में वैश्विक तापन के कारण वर्षा के पैटर्न में भी काफी बदलाव आया है जिससे प्राकृतिक मौसमी घटनाओं का असर देखा जा रहा है एवं अकाल, सूखा, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाएँ आम हो गई हैं। प्राकृतिक आपदाओं के कारण फसल बर्बाद हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप कृषकों की आर्थिक स्थिति ख़राब होती है।
3. जनसंख्या के अनुपात में कृषि योग्य भूमि का कम होना भी वर्तमान में किसानों की एक प्रमुख समस्या है। पूर्व में विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा चकबंदी जैसे प्रयास किए गए जिससे कृषि जोत का आकार बढ़ा परंतु जनसंख्या में तीव्र वृद्धि एवं संयुक्त परिवार का एकल परिवार में परिवर्तित होने के कारण कृषि भूमि का आकार जनसंख्या के अनुपात में छोटा होता गया। कृषि जोत भूमि कम होने के कारण संबंधित परिवार के लिए कृषि लाभ या व्यवसाय का माध्यम न होकर केवल जीवन निर्वाह का माध्यम रह गया है।

4. आवारा पशुओं एवं वन्यजीव की समस्या से भी वर्तमान समय में किसान त्रस्त हैं। आवारा पशु राजमार्गों, सड़कों के किनारे खेतों में लगे फसलों को व्यापक नुकसान पहुँचाते हैं। भारतीय किसान न तो आर्थिक रूप से सशक्त हैं जिससे वे अपने खेत की घेराबंदी करा सकें। अधिकांश कृषक गरीब ही हैं। वन्यजीव की समस्या नदियों एवं जंगलों के समीप वाले खेतों में व्यापक रूप से फैली है। उदाहरण के तौर पर बिहार एवं उत्तरप्रदेश के सोननदी एवं गंगा नदी के समीप क्षेत्रों में नीलगाय, जंगली सूअर एवं बंदरो का आतंक है। ये जानवर किसानों की फसलों एवं किसानों को भी आर्थिक एवं शारीरिक नुकसान पहुंचाते हैं। अन्य राज्यों यथा केरल के वायनाड एवं इडुक्की एवं कर्नाटक के कॉफ़ी उत्पादक जिलों से समाचार पत्रों के माध्यम से मानव-वन्यजीव संघर्ष की घटनाएं देखने को मिलती हैं जिसमें किसान को चाय बगान/कॉफ़ी बगान में अपने फसल की निगरानी करते हुए जंगली हाथी एवं जंगली सूअर जैसे जानवरों का सामना करना पड़ता है जिससे उनका भी नुकसान एवं जंगली जानवरों के द्वारा उनकी फसलों को भी व्यापक क्षति पहुंचती है।
5. अन्य कुछ कारणों में किसानों के लिए भंडारण की समस्या, फसल का उचित मूल्य न मिलना, मिट्टी की गुणवत्ता आदि शामिल हैं ।

चूँकि भारत में आज भी कृषि क्षेत्र रोज़गार का सबसे बृहद स्रोत है, अतः सरकार द्वारा किसानों की समृद्धि हेतु कदम उठाने से भारत में बेरोज़गारी एवं गरीबी पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है। सरकार द्वारा इस दिशा में कई महत्वपूर्ण पहल की जा रही है, यथा - किसान क्रेडिट कार्ड योजना, फसल बीमा योजना, किसान समृद्धि योजना इत्यादि। फिर भी इस दिशा में किसान कल्याण हेतु और भी प्रयास किए जाने होंगे।

श्री कुमार अग्निवेश,
कनिष्ठ अनुवादक
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

दुलारी बेटी (दादी माँ की कहानी)

यह कहानी एक मध्यवर्गीय परिवार की है। एक बार की बात है। एक परिवार में एक दंपति रहते थे। उन्हें बेटी की बहुत चाहत थी। बेटी की चाहत में उन्हें एक के बाद एक करके सात बेटे हुए। उन्होंने जगह-जगह पूजा की और न जाने कितनी मन्नतें माँगीं तब जाकर उन्हें कई सालों के बाद एक प्यारी सी बेटी हुई। उन्होंने बेटी का नाम दुलारी रखा। दुलारी बहुत ही सुंदर और प्यारी थी। उसके माता-पिता और उसके सातों भाई उससे बहुत प्यार करते थे। माता-पिता और भाइयों ने उसे को बहुत प्यार से पाला। देखते ही देखते कई साल खुशी-खुशी से बीत गए। एक-एक करके सभी भाइयों की शादी हो गई। छोटे भाई और दुलारी के बीच में उम्र का ज़्यादा फासला न होने के कारण दोनों में मित्रों वाला रिश्ता था। दोनों भाई-बहन साथ में खेलते, हंसी-मज़ाक करते और ज़्यादा से ज़्यादा समय साथ में बिताते। एक समय ऐसा आया कि दुलारी के माता-पिता का देहांत हो गया। घर की आर्थिक स्थिति काफी खराब हो गई। आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण सातों भाइयों को रोज़गार की तलाश में सात समुंदर पार जाना पड़ा। जाते-जाते सातों भाइयों ने अपनी-अपनी पत्नी से वादा लिया कि उनकी बहन दुलारी को

किसी भी तरह की कमी न हो। सातों भाभियों ने वादा किया कि वे सभी अच्छे से दुलारी का ख्याल रखेंगी। सातों भाई जब काम की तलाशी में निकल पड़े तो भाभियों ने अपने वादे के खिलाफ व्यवहार करना शुरू किया। एक छोटी भाभी को छोड़कर बाकी सभी भाभियां उसे बहुत परेशान करने लगीं। छोटी भाभी सभी के खिलाफ नहीं जा सकती थी। भाई के जाने के बाद दुलारी के साथ छह भाभियों ने गुलामों की तरह व्यवहार किया। दुलारी लाचार और बेबस हो गई।

एक बार की बात है। छह भाभियों ने दुलारी से कहा कि- "जाओ, जाकर बिना रस्सी के जंगल से ढेर सारी लकड़ियाँ काट कर लाओ।" बेचारी दुलारी गीत गाते हुए जंगल में गई।

"सातों भाई सात समुंदर पार गेल... दुलारी बेटी को बड़ा दुख भई गेल...."

गीत सुनकर एक सांप दुलारी के पास आया और उसके दुख का कारण पूछा। दुलारी ने अपनी आपबीती सुनाई। यह सुनकर सांप रो पड़ा और कहा- "बहन, रो मत, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।" इस प्रकार सांप ने दुलारी की सहायता करने का ठान लिया। जब दुलारी ने सूखी लकड़ियाँ चुनकर एक जगह इकट्ठी कीं तो सांप रस्सी की तरह लकड़ियों की चारों ओर बंध गया। दुलारी आराम से लकड़ी की गठरी को उठाकर घर ले गई और रसोई में रख दी और सांप का धन्यवाद किया। सांप ने कहा- "बहन रोना नहीं। जब भी तुम्हें मेरी ज़रूरत होगी, मुझे याद ज़रूर करना। मैं हमेशा तुम्हारी सहायता करने के लिए तैयार हूँ।"

इस तरह दुलारी को कई सालों तक बहुत दुःखों का सामना करना पड़ा।

छोटी भाभी अन्य भाभियों से बचकर अपनी ननद को कभी खाना खिलाती तो कभी उसे दिलासा देती कि सब ठीक हो जाएगा। काफी समय बीतने के बाद एक दिन छह भाभियों ने दुलारी को एक छेद वाले टूटे-फूटे बर्तन में पानी लाने के लिए कहा। दुलारी रोती-बिलखती पानी लाने चली गई। जैसे ही बाल्टी में तालाब से पानी भरकर वापस आने लगी तो बाल्टी से पानी बहने लगा क्योंकि बाल्टी में अनेकों छोटे-छोटे छेद थे। यह देखकर दुलारी फिर से भाइयों के याद में रो-रो कर गीत गाने लगी।

"सातों भाई सात समुंदर पार गेल... दुलारी बेटी को बड़ा दुख भई गेल..."

इसी समय दुलारी के सातों भाई ढेर सारा पैसा सात समुंदर पार से कमाकर लौट रहे थे। उन्होंने दुलारी की आवाज़ सुनी। सभी भाई दौड़कर देखने गए कि कौन यह गीत गा रही है? जाकर देखा तो उनकी बहन रोते-बिलखते यह गीत गा रही थी। भाइयों ने रोने का कारण

पूछा तो दुलारी ने सारी आपबीती उन्हें बता दी। दुलारी की आपबीती सुनकर सभी भाई आग-बबूला हो गए। दुलारी के बड़े भाई ने अपनी बहन को चादर में छुपा लिया और सभी भाई वापस घर गए।

घर जाकर सभी भाईयों ने अपनी-अपनी पत्नियों से पूछा- "कहाँ है मेरी प्यारी बहन जिसे हम तुम्हारे हवाले करके गए था?" सभी भाभियों की हवाईयां उड़ गईं। उन्होंने सोचा कि भाइयों को कैसे पता चलेगा कि दुलारी कहां है? सभी ने एक से बढ़कर एक झूठी कहानियाँ सुनानी शुरू कर दीं।

लेकिन भाईयों को असलियत का पता था। सभी ने एक जादुई कुआं बनाया और उस कुएं में आग लगा दी। भाइयों ने अपनी-अपनी पत्नियों से कहा कि- "यह जादुई कुआं है। जिसने भी मेरी बहन के साथ बुरा व्यवहार नहीं किया होगा वह इस कुएं को छलांग लगाकर पर कर लेगी और जिसने नहीं किया होगा वह इसमें गिरकर मर जाएगी।"

दुलारी की भाभियों के प्राण सूख गए। वे कुएं में छलांग नहीं लगाना चाहती थीं, लेकिन वे अपनी बातों से मुकर भी नहीं सकती थीं। अब वे पूरी तरह से फंस चुकी थीं।

फिर सभी ने छलांग लगानी शुरू कर दी और एक-एक करके सभी कुएं में गिर गईं। जब सबसे छोटी भाभी ने छलांग लगाई तो वह कुएं में नहीं गिरी। इससे यह प्रमाणित हो गया कि छोटी भाभी ने कभी भी अपनी प्यारी ननद को सताया नहीं था। प्रमाणित होने के बाद बड़े भाई ने अपनी चादर से दुलारी को बाहर निकाला और सभी खुशी-खुशी से मिलजुल कर साथ-साथ रहने लगे।

"इसलिए कहा जाता है कि बुरे काम का बुरा नतीजा।"

कुमारी ज्योत्सना,
सुपुत्री- श्री रंजन कुमार, लेखापरीक्षक
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

कायर राजा

एक राजा था और वह बड़ा ही कायर था। वह युद्ध से बहुत डरता था लेकिन प्रजा को यह जताने की कोशिश करता था कि वह एक कुशल और निडर राजा है। कायर राजा अपने को वीर और साहसी दिखाने के लिए बहुत सारे हथकंडे अपनाता था जिससे यह साबित हो जाता कि राजा बहुत साहसी और वीर है।

एक बार की बात है, संभलगढ़ नगर के राजा ने कायर राजा को युद्ध के लिए चुनौती दी। राजा ने बहुत सोचा और अपने खुराफ़ाती दिमाग का इस्तेमाल किया। कायर राजा ने सोचा, क्यों न हम अपने दुश्मन राजा का युद्ध किसी दूसरे राजा से करा दिया जाए। इससे दो फायदे होंगे। एक तो हम युद्ध से बच जाएंगे दूसरा घमंडी राजा को भी मज़ा चखाएंगे।

कायर राजा ने एक योजना बनाई। वह महिपालपुर के राजा के पास गया और बोला कि- "क्या आपको पता है? संभलगढ़ नगर के राजा ने आपको युद्ध के लिए चुनौती दी है। वह कह रहा था कि "आप बहुत डरपोक हो ।" यह सुनकर महिपालपुर का राजा आग-बबूला हो गया।

महिपालपुर का राजा गुस्से में बोला- "मैं उससे (संभलगढ़ नगर के राजा से) बहुत ताकतवर हूँ और मुझे कोई नहीं हरा सकता।"

महिपालपुर के राजा ने गुस्से में आकर संभलगढ़ के राजा को युद्ध के लिए चुनौती भेज दी। अब क्या था? दोनों राजाओं ने युद्ध के लिए योजनाएँ बनानी शुरू कर दीं। युद्ध का समय निकट आया, संभलगढ़ का राजा और महिपालपुर का राजा दोनों युद्ध के मैदान में आए।

युद्ध शुरू हुआ, दोनों तरफ से मार-काट मच गई, पूरे मैदान में खून ही खून बिखरा पड़ा था। उधर कायर राजा अपनी योजना के तहत एक पेड़ के ऊपर बैठकर सारा युद्ध देख रहा था। युद्ध में संभलगढ़ का राजा मारा गया ।

युद्ध खत्म होने के बाद संध्या का समय हो चूका था, सभी अपने निवास की ओर प्रस्थान कर चुके थे। तब खुराफाती कायर राजा वृक्ष से नीचे उतरा और देखा कि हर ओर खून की नदियाँ बह रही हैं। कुछ अधमरे सैनिक अब भी ज़मीन पर पड़े कराह रहे हैं। कायर राजा खून की नदियों में लोट-पोट करने लगा। इस कारण कायर राजा के पूरे बदन में खून लग गया।

कायर राजा अब खून से लथपथ था। ऐसा लग रहा था कि उसने ही सबको मार डाला है और अकेला ही सभी को मारकर उस पर विजय प्राप्त की है। अब क्या? कायर राजा यही तो दिखाना चाहता था।

कायर राजा ने ज़मीन से एक तलवार उठाई और घोड़े पर सवार होकर अपने नगर की ओर चल पड़ा। नगर में जाते ही वह झूठी कहानी सुनाने लगा।

राजा ने अपनी प्रजा से कहा कि- "मैं अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करता हूँ। इसलिए मैं सभी के प्राणों की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। इसालिए मैंने अकेले ही सबको मार गिराया।"

आगे, कायर राजा ने कहा- "क्या तुम सबको मालूम है कि दो-दो राजाओं ने मिलकर मुझ पर हमला किया था। लेकिन मैं डरा नहीं, एक राजा तो मेरे हाथों मारा गया, दूसरा भाग खड़ा हुआ। मैंने पूरी सेना को मार डाला और खून की नदियाँ बहा दीं। भविष्य में भी हमारे राज्य की तरफ जो आँख उठाकर देखेगा, मैं उसकी आँखें फोड़ दूंगा।" प्रजा भोली थी, उन्होंने इसे सच मान लिया और राजा की जय-जयकार करने लग गई।

इसे कहते हैं साँप का भी मर जाना और लाठी भी न टूटना। भोली प्रजा की नज़रों में वह एक साहसी और वीर राजा था।

श्रीमती शिखा,
पत्नी- श्री रंजन कुमार, लेखापरीक्षक
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

आज की शिक्षा

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की सबसे बडी पूंजी होती है। यह वह साधन है जिससे व्यक्ति अपने जीवन को संवारता है, अपने कौशल को निखारता है और सामाजिक व आर्थिक विकास में योगदान देता है। भारत जैसे विशाल देश में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि यही व्यवस्था भविष्य के नागरिकों को तैयार करती है। आज हम जिस युग में है उसे डिजिटल युग कहा जाता है, जहाँ तकनीकी प्रगति ने शिक्षा के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। इस बदलाव ने नई उम्मीदें और साथ ही कई चुनौतियां भी प्रस्तुत की हैं। आज की शिक्षा किस प्रकार से बदल रही है? इसकी क्या विशेषताएँ हैं? और इससे जुड़ी समस्याओं का समाधान क्या हो सकता है? यह विस्तार में देखेंगे।

शिक्षा की परंपरागत परिभाषा मात्र किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रही। आज शिक्षा का अर्थ हो गया है- जीवन जीने की कला, सामाजिक समरसता, वैज्ञानिक सोच और वैश्विक नागरिक बनने की योग्यता। विद्यालय और महाविद्यालय अब केवल शैक्षणिक संस्थान नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास के केंद्र बन गए हैं।

तकनीक ने शिक्षा को गतिशील और बहुआयामी बनाया है। ऑनलाइन कक्षाएँ, वेबिनार, ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म और स्मार्ट क्लासरूम ने पारंपरिक शिक्षण पद्धति को चुनौती दी है। विद्यार्थी अब दुनिया के किसी भी कोने से विश्वसनीय सामग्री से सीख सकते हैं। इसके साथ ही आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस आधारित टूल्स छात्रों के सीखने के तरीकों को और अधिक व्यक्तिगत बनाने में मदद कर रहे हैं।

आज की शिक्षा केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है। तकनीकी और व्यावसायिक कौशल सीखना आवश्यक हो गया है। कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, रोबोटिक्स, डिजिटल मार्केटिंग, उद्यमिता और संचार कौशल को शामिल करना शिक्षा की प्राथमिकता बन गई है। शिक्षा में संवाद और क्रियात्मक शिक्षण के बजाय रटने पर ज़ोर दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच, समस्याओं को सुलझाने की क्षमता और नवाचार की क्षमता प्रभावित होती है।

शिक्षा को हर वर्ग, हर क्षेत्र तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए ग्रामीण इलाकों में स्कूलों की संख्या बढ़ानी होगी, डिजीटल संसाधन उपलब्ध करना और विशेष रूप से गरीब, अल्पसंख्यक व वंचित समुदायों के बच्चों के लिए योजनाएं बनानी होंगी।

पाठ्यक्रम को समय के अनुसार अद्यतित करना होगा जिसमें जीवन-कौशल, पर्यावरणीय जागरूकता, तकनीकी शिक्षा और उद्यमिता को शामिल किया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी न केवल अच्छे कार्मिक बल्कि अच्छे नागरिक भी बनेंगे। शिक्षकों के लिए नियमित कार्यशालाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। साथ ही, शिक्षकों के सामाजिक और आर्थिक सम्मान को बढ़ाया जाए ताकि वे पूरी लगन से अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकें।

स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़ानी होगी। बच्चों के तनाव मुक्त वातावरण देना होगा। योग, ध्यान, खेल और कला को शिक्षा का हिस्सा बनाया जाए ताकि बच्चों का संपूर्ण विकास हो सके। शिक्षा केवल ज्ञान देने का माध्यम ही नहीं, बल्कि इसका उद्देश्य शारिरिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक विकास भी है। खेल, संगीत, कला, योग, ध्यान आदि गतिविधियाँ बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होती हैं।

आज भी अधिकांश पाठ्यक्रम पुराने और पारंपरिक मॉडल पर आधारित हैं जो विद्यार्थियों को वर्तमान तकनीकी और परिवर्तनों के अनुकूल तैयार नहीं करते। इससे छात्र पढ़ाई में रुचि खो देते हैं और उनका ज्ञान व्यावसायिक शिक्षा या तकनीकी कौशल सीखने की ओर बढ़ता है।

शिक्षकों की संख्या की कमी और उनकी आधुनिक शिक्षण विधियों से अनभिज्ञता भी बड़ी समस्या है। शिक्षक यदि नवीनतम तकनिकों का उपयोग नहीं कर पाते तो विद्यार्थियों की

रुचि कम होती है और शिक्षा का स्तर गिरता है। कठोर परीक्षा प्रणाली के कारण विद्यार्थी मानसिक दबाव और तनाव से गुज़रते हैं। उनकी सृजनात्मकता दब जाती है और वे केवल 'नंबर पाने' की दौड़ में लगे रहते हैं।

सरकार और निजी क्षेत्र को मिलाकर शिक्षा के क्षेत्र में नई तकनीकों का विकास और उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। डिजिटल डिवाइड को खत्म करने के लिए हर छात्र तक इंटरनेट और उपकरणों की पहुँच होनी चाहिए। आधुनिक शिक्षा केवल आज के लिए नहीं, बल्कि भविष्य के लिए भी तैयारी है। विश्व बाज़ार में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है और युवाओं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार होना होगा। इसके लिए शिक्षा-प्रणाली को लचीला, बहुमुखी और नवाचार के अनुरूप बनाना अनिवार्य है।

साथ ही, शिक्षा के माध्यम से हमें अपने सामाजिक मूल्यों, नैतिकता और सांस्कृतिक धरोहर को भी संजोना होगा। तकनीक चाहे जितनी भी विकसित हो जाए, मानवता, सहिष्णुता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देना शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। आज की शिक्षा प्रणाली में निरंतर और सुधार की आवश्यकता है। यह केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रह सकती, इसे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास का आधार बनाना होगा। शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाकर, उसे समावेशी, प्रासंगिक और सृजनात्मक बनाया जाए, तभी हम एक उन्नत, समृद्ध और खुशहाल समाज का निर्माण कर पाएंगे।

शिक्षा वह शक्ति है जो समाज को नई दिशा देती है और राष्ट्र को विश्व पटल पर सम्मानित स्थान दिलाती है। इसलिए हमें अपनी शिक्षा-व्यवस्था को मज़बूती देने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भविष्य की ओर बढ़ सकें।

श्री प्रसाद पी. जोशी,
सहायक पर्यवेक्षक
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

छठ पूजा: आस्था, समर्पण और प्रकृति का पर्व

"पूरे साल छुट्टी नहीं लेते, पर इस समय तो चाहे जो भी हो जाए, 4 दिनों के लिए घर जाना ही है" - यह वाक्य कार्तिक (अक्टूबर-नवंबर) महीने में या उससे पहले एक न एक बार किसी न किसी बिहारवासी के मुंह से आपने ज़रूर सुना होगा। क्या आप जानते हैं कि वह कौन सी वजह है जो अपने गांव, अपने राज्य, अपने देश से दूर रहने वाले हर बिहारवासी को साल के ये 4 दिन खींचकर अपनी मिट्टी की ओर ले ही आती है? वह है- छठ पूजा।

छठ पूजा:- बिहार में मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्यौहार। यह त्यौहार सभी समुदाय के लोगों द्वारा मनाया जाता है। यह पर्व सूर्य देव और छठी मैया को समर्पित होता है और साल में दो बार मनाया जाता है – एक बार चैत्र माह में और दूसरी बार कार्तिक माह में। कार्तिक माह का छठ पर्व अधिक लोकप्रिय है और दीपावली के छह दिन बाद आता है। छठ पूजा के 4 दिन साल के वे 4 दिन होते हैं जब आपको न कुछ दिखाई देता है न सुनाई देता है। न अपने ऑफिस के काम की कोई टेंशन याद आती है न आने वाली परीक्षा की तारीखें। बस कानों में छठी मैया के गाने और आँखों में घाट पर जाकर अर्घ्य देने का इंतज़ार रहता है। मन में आस्था औरपवित्रता के सिवाय कुछ और आता ही नहीं उन दिनों में।

छठ पूजा की विशेषता इसकी सादगी, स्वच्छता और कठोर नियमों में छिपी होती है। इस पर्व में चार दिन की पूजा होती है: नहाय-खाय, खरना, संध्या अर्घ्य और प्रातः अर्घ्य। पहले दिन श्रद्धालु नदी या तालाब में स्नान कर सात्विक भोजन करते हैं। दूसरे दिन व्रती पूरे दिन उपवास रखते हैं और शाम को गुड़-चावल की खीर और रोटी का सेवन करते हैं। छठ पूजा का

उपवास अन्य सभी व्रत-पूजा से भिन्न होता है। 2 दिनों तक निर्जल उपवास होने के बावजूद पता नहीं कौन सी शक्ति है जो व्रतियों को इस व्रत को पूरा करने की उर्जा देती है। तीसरे दिन व्रती जलाशयों में जाकर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देते हैं। यह एकमात्र ऐसा पर्व है जिसमें डूबते हुए सूर्य की पूजा की जाती है। चौथे दिन सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य देने के बाद यह व्रत संपन्न होता है।

इस पर्व में बांस की टोकरी में ठेकुआ, फल और अन्य प्रसाद अर्पित किए जाते हैं। छठ पूजा की एक विशेष बात यह है कि इसमें किसी मूर्ति की पूजा नहीं होती, बल्कि प्रकृति- सूर्य, जल, वायु और मातृत्व शक्ति की उपासना होती है।

छठ पर्व में समाजिक एकता और स्वच्छता का संदेश भी छिपा होता है। लोग अपने घरों, गलियों और घाटों को साफ-सुथरा रखते हैं और एक साथ सामूहिक रूप से पूजा करते हैं। छठ घाटों पर न तो कोई अमीर होता है न गरीब। हर कोई प्रत्येक व्रती से प्रसाद ग्रहण करने के लिए आतुर होता है। यूं ही इसे लोक-आस्था का महापर्व नहीं कहते। यह पर्व न केवल धार्मिक है, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सूर्य की ऊर्जा और उसके जीवनदायी प्रभाव को मान्यता देता है।

वर्तमान काल में भी छठ पूजा की महत्ता कम नहीं हुई है। चाहे लोग कहीं भी हों- देश में या विदेश में- वे पूरी श्रद्धा और नियमों के साथ इस पर्व को मनाते हैं। यह पर्व हमें प्रकृति से जुड़ने, संयम रखने और सामूहिक सौहार्द बनाए रखने की प्रेरणा देता है। छठ पूजा वास्तव में आस्था, तपस्या और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का अनुपम उदाहरण है।

सुश्री आरती प्रिया दर्शनी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

महिला जीवन

महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेकों कानून व योजनाएँ हमारे देश में बनाए गए हैं। परंतु ध्यान देने की बात यह है कि इन योजनाओं व कानूनों से महिलाओं की स्थिति में मूलतः कितना सुधार हुआ है? भले ही हम महिलाएँ आज पहले की तरह बेड़ियों से जकड़ी हुई नहीं हैं, परंतु पूरी तरह से आज़ाद भी नहीं हैं। भले ही हम अपने आप को कहते रहें कि हम आज़ाद हैं, किसी पर निर्भर नहीं हैं पर क्या यह सत्य है? जब महिलाओं के जीवन के अनछुए पहलुओं की पड़ताल करते हैं तो हम पाते हैं कि किस तरह प्रत्येक स्थिति में वे अपने लिए संघर्ष कर रही हैं।

आज के समय में महिलाओं के संघर्षों और सपनों का स्वरूप कुछ बदलता हुआ भले ही नज़र आ रहा हो, परंतु वास्तव में आज भी वही स्थिति है जो पहले थी। स्त्री को घर के काम-काज और चूल्हा-चौका से मुक्त जीवन जीने की आज़ादी कभी नहीं मिली। आज भी वे जितने भी उच्च पद पर क्यों न पहुँच जाएं, घर का सारा कामकाज अधिकतम वे ही करती हैं। यह भी कटु सत्य है कि आज भी बड़ी संख्या में महिलाएं किसी न किसी पर आश्रित हैं।

हाल ही में एक अध्यापक ने अपनी कक्षा में सभी विद्यार्थियों से पूछा कि कितनी लड़कियाँ अगले जन्म में लड़का बनना चाहती हैं? इस पर सभी ने हाथ उठाया। पर लड़कों से पूछा कि कितने लड़के अगले जन्म में लड़कियाँ बनना चाहते हैं? इस पर किसी ने हाथ नहीं उठाया, क्योंकि उन्हें पता है कि लड़कियाँ बनने पर उनके जीवन में कई प्रकार की सामाजिक, शारीरिक, सुरक्षात्मक चुनौतियाँ आ जाती हैं।

महिलाओं की इच्छाओं और स्वतंत्रता का गला कभी संस्कारों के नाम पर तो कभी रीति-रिवाज़ों के नाम पर घोंट दिया जाता है। संपूर्ण विश्व में 8 मार्च को मनाया जाने वाला महिला दिवस केवल कुछ महिलाओं के सम्मान और कुछ कार्यक्रमों के आयोजन के साथ ही प्रति वर्ष समाप्त हो जाता है। लेकिन इस प्रकार के आयोजनों का खोखलापन तब तक दूर नहीं होगा जब तक इस देश की हर महिला के सम्मान की तो छोड़िए, कम से कम उसके स्वाभिमान की रक्षा के लिए किसी कानून, सरकार या समाज की आवश्यकता नहीं होगी। जिस दिन वह स्वयं अपने स्वाभिमान, सम्मान, अस्तित्व तथा स्वतंत्रता की रक्षा करने के योग्य हो जाएगी, अर्थात् सही मायनों में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हो जाएगी, महिलाओं के लिए वही वास्तविक महिला दिवस होगा।

आत्मनिर्भरता से तात्पर्य है खुलकर सोच पाने की आज़ादी, वह सोच जो उसे, उसके परिवार और समाज को आगे ले जाए। अपने दम पर खुश होने की आज़ादी, वह खुशी जो उसके भीतर से निकलकर उसके परिवार से होते हुए समाज तक जाए। इस विचार की आज़ादी कि वह केवल एक शरीर नहीं अपितु उससे कहीं बढ़कर है। यह सिद्ध करने की आज़ादी कि वह अपनी बुद्धि, अपने विचार, अपनी काबिलियत, अपनी क्षमताओं और अपनी भावनाओं के दम पर अपने परिवार और इस समाज की एक मजबूत नींव है। ज़रूरत है एक ऐसे समाज के निर्माण की जिसमें यह न कहा जाए कि "न आना इस देश मेरी लाड़ो।" अतः हर महिला को सम्मान दिया जाना चाहिए जो हर पल आपके साथ माँ, बहन, पत्नी, बेटी या अन्य किसी न किसी रूप में उपस्थित हैं।

सुश्री साधना सिंह,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्र.म.ले.(लेप.-I), कर्नाटक

लक्ष्य निर्धारण का महत्व

मनुष्य का जीवन एक यात्रा है और लक्ष्य उसका मार्गदर्शक। जिस प्रकार एक जहाज को गंतव्य के बिना समुद्र में छोड़ दिया जाए तो वह कभी मंज़िल तक नहीं पहुँच पाता, उसी प्रकार लक्ष्यविहीन जीवन भी भटकाव और निरर्थकता से भरा होता है। लक्ष्य निर्धारण न केवल सफलता की नींव रखता है, बल्कि व्यक्ति को अनुशासित, प्रेरित और केंद्रित भी बनाता है। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि संसार में लक्ष्य केंद्रित लोगों ने अनूठा कार्य किया है। वाइकिंग्स भी इंग्लैंड को तभी खोज पाए थे जब उनके पास दिशा-सूचक यंत्र था।

एक निश्चित लक्ष्य न केवल जीवन को बेहतर बनाता है, बल्कि यह आपको सफल भी बनाता है। आइए इसे "रेड कार थ्योरी" की मदद से समझते हैं। अगर कोई आपसे पूछे कि कल आपने कुल कितने लाल रंग की कार देखी तो आपका जवाब होगा पता नहीं। पर यही अगर कोई आपको बोले कि कल मुझे बताना, तुम जितनी लाल रंग की कार देखोगे उस पर तुम्हें मैं हर एक कार के लिए ₹100 दूंगा तो अगले दिन आपको हर तरफ लाल कार ही नज़र आएगी। ऐसा इसलिए क्योंकि आप उस चीज़ पर ध्यान केंद्रित करेंगे। यही लक्ष्य निर्धारण के साथ भी होता है जब हमारे मस्तिष्क को पता होता है कि यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है तो जब भी ऐसा कोई अवसर हमारे सामने आता है हमारा मस्तिष्क उसे तुरंत ही पहचान लेता है। आप सब ने लॉ ऑफ़ अट्रैक्शन के बारे में पढ़ा या सुना होगा। "जब आप किसी चीज़ को सच्चे दिल से चाहते हैं तो सारी कायनात उसे मिलकर पूरा करने की कोशिश करती हैं!" अल्केमिस्ट से लेकर द सीक्रेट समेत कई अन्य किताबें इस विषय पर लिखी जा चुकी हैं! तो क्या यह एक फिल्मी डायलॉग है? बिल्कुल भी नहीं! इसके पीछे एक विज्ञान है। हम सभी जानते हैं कि हमारा मस्तिष्क अत्यंत सशक्त है। लक्ष्य निर्धारण हमारे मस्तिष्क को स्पष्ट संकेत देता है कि इस चीज़ पर हमें ध्यान केंद्रित करना है और यही कारण है कि उसके बाद बाकी तत्व उसके अनुकूल होने लगते हैं और हम इसे संयोग मात्र मानने लगते हैं।

लक्ष्य निर्धारण प्रभावी हो, इसके लिए SMART सूत्र अपनाना चाहिए:

S - Specific (विशिष्ट)

M - Measurable (मापन योग्य)

A - Achievable (प्राप्त करने योग्य)

R - Relevant (उपयुक्त)

T - Time-bound (समयबद्ध)

* यह एक माना गया तथ्य है कि अगर आप अपने लक्ष्य को लिखते हैं तो इसके सफल होने की संभावना कई गुना बढ़ जाती हैं। हम में से अधिकांश लोग ऐसा करते हैं कि जब नया साल आता है तो ऐसे लक्ष्य तय करते हैं कि जो बिल्कुल भी व्यावहारिक नहीं होते और एक-दो दिन प्रयास करके यह मान लेते हैं कि हमारे लिए लक्ष्य प्राप्त करना असंभव है। अगली बार ऐसा करने से पहले सोच-विचार कर एक डायरी लीजिए और उसमें अपने लक्ष्य को लिखिए जो आप वास्तव में प्राप्त करना चाहते हैं और जो आपकी स्थिति के अनुकूल है।

*** लक्ष्य निर्धारण कैसे करें:-**

इसके लिए आप विल ऑफ़ लाइफ का इस्तेमाल कर सकते हैं -

विल ऑफ लाइफ एक गोलाकार चार्ट होता है जिसे आमतौर पर 6 से 10 हिस्सों में बाँटा जाता है। हर हिस्सा जीवन के एक महत्वपूर्ण पहलू को दर्शाता है। व्यक्ति हर क्षेत्र में अपनी संतुष्टि का स्तर 0 से 10 के पैमाने पर अंकित करता है। इससे यह पता चलता है कि कौन से क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है और कौन से क्षेत्र मज़बूत हैं?

विल ऑफ लाइफ के सामान्य क्षेत्र:

1. स्वास्थ्य
2. करियर/व्यवसाय
3. आर्थिक स्थिति
4. पारिवारिक जीवन
5. व्यक्तिगत विकास
6. मनोरंजन/रचनात्मकता
7. समाज/मित्र
8. आध्यात्मिकता

इसमें से कुछ क्षेत्रों में आप अपने जीवन के हिसाब से बदलाव कर सकते हैं। इन सभी क्षेत्रों में आपको अपने आप को एक से लेकर 10 के बीच में अंक देने हैं। इसके बाद जिस क्षेत्र में आपने खुद को कम अंक दिए हैं उस क्षेत्र में आपको एक लक्ष्य केंद्रित करना है अगले 12 महीने के लिए। अर्थात् अगले 12 महीने में आप कौन सा कार्य करेंगे जिससे उस क्षेत्र में आपके अंक बेहतर हो जाएं। अंत में इस उम्मीद के साथ कि हम सभी जीवन में लक्ष्य बनाएं और अपने-अपने लक्ष्य में सफल हों।

श्री मयंक कुमार 'मयंक',
लेखापरीक्षक
प्र.म.ले.(लेप.-I), कर्नाटक

सच का होगा क्रूर श्राद्ध

छा रहा घनघोर अँधियारा, पर है अब प्रकाश,
घुट रहा है साँस, हत, विष वायु में, बचने की आस।

जुग बदली, दुनिया है बदली, पर ना बदला ये समाज,
अपने-अपने क्षद्म-अहं का, है बजाता डंका आज।

हर मुखौटे मुख के पीछे, झाँक कर ज्यों देख लो,
है हमें विश्वास कि, रावण दिखेगा फिर से आज।

सच यही सीता ही दे, अग्निपरीक्षा फिर से आज,
और अपनी वहशियत पे, हँस रहा खल-खल समाज।

कोई है गर लुट रहा, लुटने दो उसको सरे बाज़ार,
अपनी इज्ज़त है बची, होता भले कोई उजार।

अपने तन के कपड़े में ही, छिद्र हो अगणित अपार,
वो ना सूझे, पर है हँसता, दूसरों पे जार-जार।

भाल निज पे, व्रण औ फोड़ा, हे मनुज दिखता नहीं,
दूसरों के तिल को है, कालिख बताता क्यूँ तू आज।

दु:ख सहो, ईर्ष्या सहो, सहते रहो विष-व्यंग खार,
मुँह ना खोलो पर कभी, क्योंकि बधिर जग जड़ अपार।

था मेरा अपराध क्या? सहना नहीं द्रोहाग्नि क्लेष,
आहत हुआ, पाकर यहाँ, मन में पड़ा द्वेषाग्नि शेष।

अन्याय और अपकर्ष का छाता रहा गर यूँ ही घात,
दूर ना वो दिन "अमित", जब सच का होगा क्रूर श्राद्ध।

श्री अमित मोहन झा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

चुनाव

चल रहा है चुनाव का तमाशा, नहीं रहा एक दूसरे से स्नेह
बढ़ गया है पैसों का खेल, कहीं न हुई विकास की बात
क्या करें सब एक-दूसरे को हैं ज़िम्मेदार ठहराते
चुनाव प्रचार में उलझाकर जनता को हैं बेवकूफ बनाते
क्या नैतिकता? क्या आश्वासन?
चुनाव प्रचार में है आरोपों का आडंबर
मतदाता को भ्रमित कर नेता करते अपने जुगाड़
चुनाव है प्रजातंत्र का सोपान
नहीं होता इसका गुणगान
पहचान अपनी खो रहा है यह
संकेत मात्र रह गया यह
जनता की नहीं है पूरी भागीदारी
उनके मन को भ्रमित कर डाली,

क्या होगा भविष्य देश का, जब चुनाव से दूर रहेगी आबादी
बनानी होगी पहचान चुनाव की
समझनी होगी इसकी महत्ता
जनता को जागरूक होना होगा
तब मिलेगी हमें आज़ादी
मुट्ठी भर पार्टी में नहीं रहेगी यह बागडोर
वंशवाद और उद्योगपति को हटाना होगा
सुनिश्चित करनी होगी आम लोगों की भागीदारी
आओ मिलकर प्रण करें
बढ़-चढ़ कर चुनाव में भागीदार बनें।
सोच समझकर चुनेंगे अपना जननायक
लौटाएँगे देश की गरिमा को।

श्री संजीव चंद्र पाठक,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.म.ले.(लेप.-II), कर्नाटक

नारी तुम अबला नहीं

स्त्री तुम अबला नहीं
सबला हो,
तुम्हारे बिन ये मातृत्व नहीं
तुम सर्वस्व व्याप्त शक्ति हो।

हे नारी! तुम अबला नहीं
हर शक्ति का प्रतीक हो,
हर आँगन की ताकत तुमसे
जीवन के हर पल की पहचान हो।

तुम केवल निडर ही नहीं
निर्भीक अटल संवेदना हो,

इस बहरूपिए इंसान की
असली अमर निश्चल पहचान हो।

ईमान बदल जाते हैं ज़माने के
माँ नहीं बदलती कभी भी,
तुम ही तो उस माँ के अटूट
स्नेह का दर्पण हो।

तुम्हारे हर किरदार में व्याप्त
तपस्या और बलिदान है,
आदमी की औकात नहीं
तुम्हारे बिन वो चल पाता हो।

हे नारी! तुम केवल त्याग
की ही मूरत नहीं हो
तुम लता, कल्पना चावला और
जहाज उड़ाती वीरांगना भी हो।

शत-शत नमन तुमको
हर एक दिन हर एक पल,
नमन तुमको, तुम ही तो
जीवन का अजर अमर संगीत हो।

श्री गजे सिंह 'अंजाना',
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

कटाक्ष

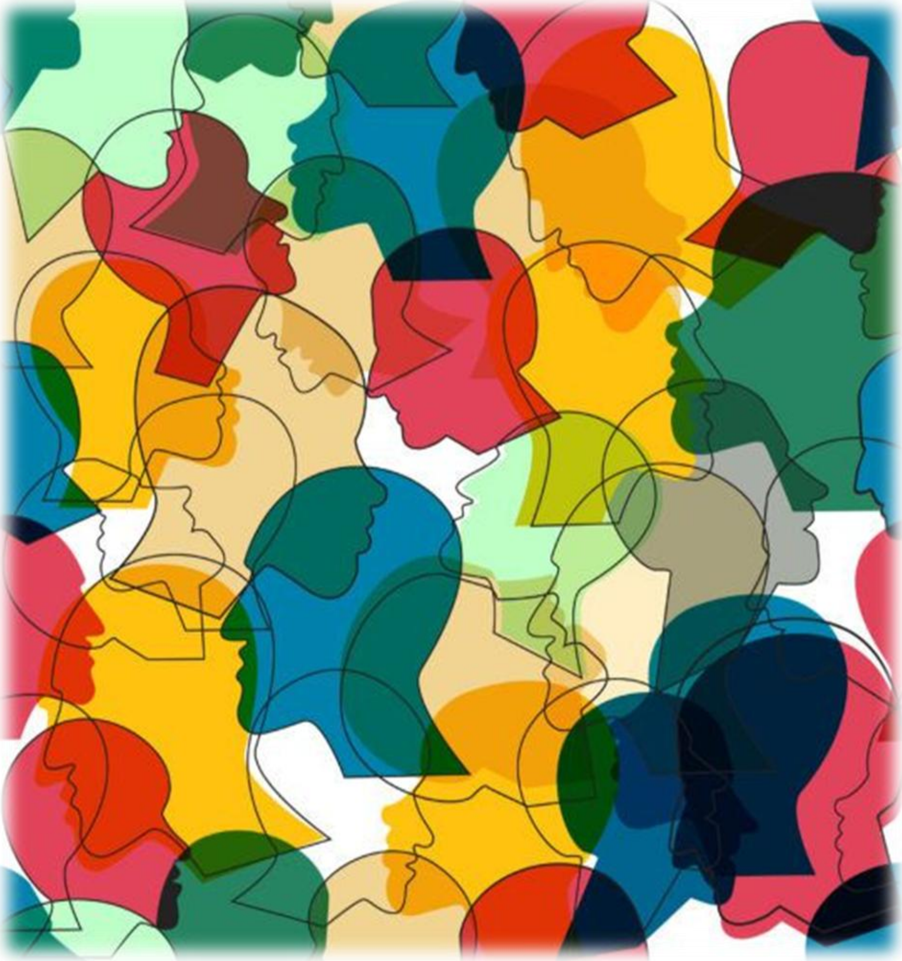

हाँ बहुत कमियां हैं मुझमें
पर तुम कौन और क्यों गिनवाते हो?
अपनी अंतरात्मा में झांको तो प्यारे
पाओगे अनगिनत अवगुण वहाँ
किसी को सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ता देख
रोढ़ा अटकाकर, क्या कभी पछताते हो?
वरन् कार्य उसका बिगड़ जाने पर
खुशी तुम बहुत मनाते हो।

जब कोई मज़बूर लाचार आए तुम्हारे द्वार
भिक्षा की चाह में हाथ फैलाए भूखा-प्यासा
चलो आगे बढ़ो ऐसे मांगना धंधा तुम बनाते हो

जाओ यहाँ से फिर कभी न आना लिए आशा
दुत्कारते हुए पीछा तुम छुड़ाते हो।

जब सुबह मीठी नींद में से आँखें न खुले
घड़ी देख समय जान जब घबराते हो
दफ्तर में देरी से पहुँचकर अधिकारी से
ट्रैफिक, पंचर, गर्मी का बहाना तुम बनाते हो
जाओ-जाओ सब जानते हैं हम तुम्हारी सच्चाई
हमने भी यही किया था पहले भूल क्यों जाते हो?

खुश रहा करो हमेशा दोस्तों
हर छोटी असफलता पर आँसू क्यों बहाते हो?
आज, इस पल हम जीवित हैं यहाँ
अगले ही पल हम हो सकते हैं वहाँ।
सभी कुछ इस संसार का ही है
तो क्यों इकट्ठा कर अपना वक्त गँवाते हो?

सुश्री रेजीना जॉर्ज,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

नदी – जीवन की धारा

बहती जाती शांत नदी, पर्वत से उतर के,
जैसे माँ की ममता बहे, धरती पर निखर के।
चट्टानों से टकराए वो, ना कोई शिकवा लाए,
हर बाधा को पार करे, गीत नया सुनाए।
नील गगन की छाया में, रजत धार सी चमके,
हरित वनों की बाहों में, मोती सी वो दमके।
मधुर सरगम बहती उससे, झरनों की तान लगे,
उसकी बूँदों में जीवन का, अनुपम वरदान लगे।

गाँव-गली और खेतों में, सींचे वो हर बगिया,
हरित क्रांति का वो आधार, जीवन की मेहरबानियाँ।

प्यास बुझाए, अन्न उगाए, उसकी कृपा अपार,
वो ना होती तो सूना होता, जीवन का यह संसार।

कभी शिशु सी मुस्काए वो, कभी रौद्र हो जाए,
बाढ़ बनकर तबाही लाए, पर फिर सब कुछ सह जाए।
मानव से वो कहती है, "मुझसे प्रेम निभाओ,
मुझे न प्रदूषित कर पथिक, मुझको स्वच्छ बनाओ।"

पाप हरती, पुण्य बँटाती, गंगा जैसी हो पावन,
यमुना की कल-कल में बसी, राधा-कृष्ण की भावन।
नर्मदा, गोदावरी, कावेरी का क्या कहना,
हर नदी है भारत माँ का, आंचल का गहना।

चलती रहती, रुकती नहीं, जीवन का पाठ पढ़ाए,
संगठन, सेवा, त्याग, समर्पण–सब कुछ सिखाए।
हे नदी! तू धन्य है, तू जीवन की गाथा,
तेरे चरणों में नमन है, तू धरती की छाया।

समापन संदेश:
"नदी केवल जल नहीं, संस्कृति है, आस्था है, जीवन है।
आओ संकल्प लें कि हम उसकी रक्षा करेंगे - क्योंकि जहाँ नदी है, वहीं जीवन है।"

श्री प्रसाद पी. जोशी,
सहायक पर्यवेक्षक
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

नारी...... एक शब्द??

नारी........यूँ तो कहने को तो शब्द है,

जानो तो ममता और भावनाओं का समंदर है

कहते हैं जिसे ममता की मूरत, वो कहलाती नारी है

आज हर क्षेत्र में बढ़ रही आगे, पड़ रही सब पर भारी है

रूढ़िवादियों ने चोट पहुँचाई, हमेंशा किया अपमान है

नारी की भी अपनी इच्छा, इनका भी अपना स्वाभिमान है

हर क्षेत्र में कदम बढ़ाया, दिया अपना योगदान है

हासिल करके उपलब्धियाँ, बढ़ाई भारत की शान है।

इन्हें न होती, किसी सम्मान की भूख है,

जो आप आदर के दो बोल कहो, उसी में हो जाती खुश है

करती है सेवा सच्चे मन से ऐसी होती नारी है

देकर बलिदान बचाई भारत की शान, वो रानी लक्ष्मीबाई है

कभी गृहिणी, कभी माँ, कभी बेटी का दायित्व निभाती है

थकना इसने सीखा नहीं, पर दुनिया इसे झुकाती है

ना समझो कमज़ोर इसे, ज़रूरत पर ये सीता है

जो आ जाए ज़िद पर तो, बन जाती ये काली है

देकर महिलाओं को समर्थन, दुनिया में बनानी अलग पहचान है

खत्मकर रूढ़िवादिता महिलाओं को दिलाना सम्मान है

मिटाकर के भेद-भाव, इन्हें और मौका देना है

तोड़कर बेड़ियाँ जो बदल सके खुद की तक़दीर ऐसा तोहफा देना है।

सुश्री रश्मि राज,

लेखापरीक्षक
प्र.म.ले.(लेप.-I), कर्नाटक

तिरंगे को झुकने नहीं दूँगा

अभी थोड़ा व्यस्त हूँ, प्रिये!
मैं लौटकर अवश्य आऊँगा,
तुम धैर्य रखना
किसी भी हाल में वापस आऊँगा।

मेरी माँ से कहना
लाल हूँ उसका,
आखिरी ज़र्रे तक
माँ भारती के लिए लड़ूँगा।

बाबूजी से कहना
रगों में खून है जब तक,
मिटकर भी
तिरंगे को झुकने नहीं दूँगा।

बच्चों से कहना
अभी बात नहीं कर पाऊँगा
घात लगाकर बैठा हूँ,
दुश्मन को एक इंच भी
आगे बढ़ने नहीं दूँगा।

मेरे गाँव वालों से कहना
मैं खाली हाथ नहीं आऊँगा,
तिरंगा फहराकर आऊँगा या
फिर उसमें लिपटकर आऊँगा।

श्री गजे सिंह 'अंजाना',
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

माँ

वो जिसे मैं माँ कहती हूँ
मेरा सर्वस्व, उसका एक भाग है।
ऊपर से नीचे तक,
मेरे भीतर से बाहर तक
सब उसका एहसास है।
मेरे पैरों तले की ज़मीन है
मेरे सिर पर फैला आकाश है।
मैं जो साँसे भरती हूँ
उसी का दिया हुआ जीवंत आभास है।
मेरी मेहनत, मेरी हिम्मत
सब उसका ही आशीर्वाद है।
मेरा व्यक्तित्व
उसने अपने खून से सींचा है
मेरा भविष्य,
उसकी आँखों में भरा विश्वास है।
वो माँ है जिसका मैं केवल अंश हूँ
माँ के सदृश्य में माँ हो सकती हूँ
अन्यथा मैं उसका केवल प्रतिबिंब हूँ।

सुश्री साधना सिंह,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
प्र.म.ले.(लेप.-I), कर्नाटक

अक्टूबर-नवंबर 2024 के दौरान आयोजित नराकास (का.-2) की अंतर-कार्यालयीन प्रतियोगिता चित्र-कहानी लेखन की पुरस्कृत रचनाएँ

चित्र-1

चित्र-2

चित्र-3

चित्र-01 भविष्य के सपने

"सुनती है सरस्वती, आज बिरजू को भी अपने साथ खेतों पर ले चलें क्या?" माधव ने अपनी पत्नी से कहा। सरस्वती बोली- "हाँ जी, वैसे भी अम्मा बीमार हैं, उनसे तो ना हो पाएगा बिरजू को खिलाना-सुलाना। ऊपर से घर से भागकर खेलने चला गया तो अलग बखेड़ा। पाँच तो पार कर चुका है, अब खेतों पर ना जाएगा तो कैसे काम सीखेगा?" इतना कहकर सरस्वती बिरजू को घसीटते हुए अपने साथ बाहर ले आई।

माधव एवं सरस्वती, ठाकुर साहब के खेतों पर मज़दूरी करते थे। बिरजू उनका इकलौता बेटा था। उनके घर की माली हालत ठीक नहीं थी। यूँ तो माधव चाहता था कि उसकी एक और संतान हो क्योंकि उसका मानना था कि घर में जितने लोग होंगे उतने ज़्यादा हाथ होंगे जिससे काम करके घर की आय बढ़ाई जा सके। किंतु, सरस्वती डरती थी कि अगर बेटी पैदा हो गई तो बाद में उसके विवाह में जीवन भर की कमाई समाप्त हो जाएगी। फिलहाल ये दो लोग मिलकर ही चार लोगों के परिवार का पेट पाल रहे थे और आज बिरजू का इस दुनिया में पहला कदम था। वह दौड़-दौड़ कर अपने माँ-बाप द्वारा काटी गई घास को इकट्ठा कर रहा था, कभी खेतों में घुसती बकरियों के पीछे डंडा लेकर दौड़ रहा था तो कभी पानी पिलाकर माता-पिता की सेवा- "जुग-जुग जियो मेरे लल्ला, आज तो लग ही नहीं रहा कि हम थक भी

रहे हैं। तूने तो हमारी कई मुश्किलें हल कर दीं” कहकर सरस्वती ने बिरजू को चूम लिया। इतने में वहाँ ठाकुर साहब आ पहुँचे। दरअसल वे अपने पोते और पोती को स्कूल छोड़ने जा रहे थे और यह खेत रास्ते में था। यहाँ एक छोटे बच्चे को देखकर उन्हें कौतूहल हुआ और वे खेतों में आ गए। वहाँ माधव और सरस्वती से उन्होंने पूछा- “ यह बच्चा कौन है और यहाँ क्या कर रहा है?” माधव बोला- “मालिक, ई बिरजू है, हमरा लल्ला, आज से इसे काम पर ले आए हैं। धीरे-धीरे सीख जाएगा तो हाथ बंटाएगा।” इतना सुनते ही ठाकुर साहब गुस्से से लाल-पीले हो गए और बिरजू को डाँटकर बोले, “तेरी हिम्मत कैसे हुई इसे यहाँ लाने की?” बिरजू सहमकर बोला, “मालिक आप हमें इसकी मज़दूरी मत देना, यह बस ऐसे ही काम करेगा।” इतना सुनकर ठाकुर साहब अचानक शांत हो गए। वे समझ गए कि बिरजू आमदनी और पैसे की सोच से आगे बढ़ ही नहीं पा रहा है। इसलिए इस बार उन्होंने माधव से प्यार से कहा- “माधव, मैं यह पैसों के लिए नहीं कह रहा। मेरा मतलब तो यह है कि जिस बच्चे को स्कूल जाना चाहिए, वह खेतों में आ रहा है। कलम और किताब की जगह तुमने उसे खुरपी और डंडा पकड़ा दिया है। क्यों कर रहा है उसके भविष्य से खिलवाड़?” माधव ने रुआंसे स्वर में कहा- ”क्या भविष्य हुज़ूर? गरीब आदमी क्या कर सकता है मज़दूरी के अलावा? काम सीखेगा तो कमा लेगा। हम कौन सा उसे पढ़ाकर कलक्टर बना लेंगे?” अब ठाकुर साहब गंभीर हो गए। उन्होंने बोला, “कल किसने देखा है माधव? कहीं वह पढ़ लिख कर सच में कलक्टर बन गया तो? और रही बात भविष्य की, तो तुम्हारा काम है बिरजू के भविष्य का सोचकर मेहनत करना ताकि तुम्हारा आज, बिरजू का आने वाला कल न बन जाए” थोड़ी देर रुककर ठाकुर साहब फिर बोले- “कल से बिरजू को स्कूल भेजो। वैसे भी मेरा पोता बिरजू से थोड़ा बड़ा है। उसकी कक्षा की किताबें व पोशाक अगले साल बिरजू के काम आ जाएंगी और फीस मेरी तरफ से। तब तो ठीक है ना? और सरस्वती सुनो, ज़रा अपने नाम का मतलब समझो, तभी तुम शिक्षा का महत्व शायद समझ पाओ।” इतना सुनकर माधव और सरस्वती, ठाकुर साहब के आगे नतमस्तक होकर बोले- “मालिक आपने हमारी आँखें खोल दीं। बस अब बिरजू को आशीर्वाद भी दे दीजिए।” पर बिरजू गायब था। सरस्वती ने सभी ओर देखा। खोजते-खोजते बिरजू खेतों की मेड़ पर ठाकुर साहब के पोते-पोती के साथ खेलता हुआ मिला। सब दौड़ कर वहाँ पहुँचे। वहाँ बिरजू पुलिस बना था और बकरी मारने वाले डंडे से बच्चों पर रौब झाड़ रहा था। शायद सारी बातें सुनकर उसने अपने लिए भविष्य के सपने भी बुनने शुरू कर दिए थे और उस कल की शुरूआत आज से हो चुकी थी।

चित्र-03 मेरी मदर इंडिया

गर्मी की छुट्टियाँ शुरू हो चुकी थीं। राहुल, रश्मि, आदित्य, शाश्वत एवं मीरा जो सभी भाई बहन थे, बैठकर घूमने की योजना बना रहे थे। हालांकि आदित्य और शाश्वत जुड़वां होने की वजह से हर वक्त लड़ते रहते थे, आज एकदम शांत बैठे थे। वजह थी मोबाइल। दोनों बच्चे मोबाइल में रील्स देखने में व्यस्त थे। इसलिए मीरा के हाथ से टीवी का रिमोट कोई नहीं छीन रहा था। राहुल और रश्मि आराम से लैपटॉप पर अच्छी-अच्छी जगहों के विडियो देख रहे थे कि कहाँ जाने की ज़िद की जाए। तभी उनकी माँ कमरे में आईं और बोलीं, "बच्चों, जल्दी-जल्दी अपना सामान पैक करो, हम आज ही मेरी दादी के यानि तुम्हारी परनानी के गाँव जा रहे हैं।" "क्या गाँव??? रश्मि व राहुल एक साथ चिल्लाए। "नहीं मम्मी, गाँव जाकर हम क्या करेंगे? वहाँ तो हम बोर हो जाएंगे। प्लीज़ मम्मी गाँव नहीं।" माँ बोलीं- "बेटा यह तय हो चुका है। वैसे भी वहाँ तुम कभी नहीं गए। वहाँ ज़्यादा लोग नहीं हैं, बस मेरे एक भैया-भाभी और उनकी छोटी सी बेटी। तुम्हें वहाँ अलग अनुभव होगा।" कहते हुए माँ मुड़ीं लेकिन एक आवाज़ ने उन्हें रोक लिया, "भैया, लैपटॉप में 10-12 फिल्में डाउनलोड कर लो, कुछ तो टाइमपास हो जाएगा।" रश्मि ने राहुल से कहा। माँ वापस आईं और बोलीं- "बेटा कोई फायदा नहीं है। वहाँ नेटवर्क, इंटरनेट एवं बिजली नहीं मिलेगी। तुम कोई भी उपकरण नहीं ले जा सकते। हाँ, गाँव के चौक पर एक टेलीफोन बूथ है जहाँ से तुम हमें फोन कर सकते हो।"

"फोन कर सकते हो? अ......आप नहीं आ रहीं हमारे साथ?" राहुल हकलाकर बोला। "मैं वहाँ रुक नहीं पाऊंगी। एक हफ्ते के बाद वापस आकर तुम लोगों को ले आऊंगी।" राहुल और रश्मि जड़ थे और बाकी बच्चे स्तब्ध। न टीवी, न मोबाइल, न रील्स, न सोशल मीडिया, कैसे रहेंगे हम? इतना सोचते-सोचते वे कब गाँव पहुँच गए पता ही नहीं लगा। शाम हो चुकी थी। यद्यपि गाँव में बिजली चली गई थी पर हर जगह गैस लाइटें थीं तो फर्क नहीं पड़ा। खाना बनते वक्त सारे बच्चे मज़बूरी में मिट्टी के चूल्हे के इर्द-गिर्द माँ और मामी की गप्पें सुन रहे थे। कोई काम नहीं था करने को, तो मामी के बच्चे से दोस्ती कर ली। चूल्हे पर जब रोटी सिंक रही थी तब बच्चों के मुँह में पानी आ गया। क्योंकि शहर की रोटियों में वह सुगंध नहीं आती थी। बच्चे एक की जगह चार रोटियां खा गए। खाने के बाद छत पर तारों के नीचे लेटकर सबने अंताक्षरी खेली। माँ ने भी गाना गाया। रश्मि को एहसास हुआ कि माँ कितना अच्छा गाती हैं। वह तो किचन में रोज़ गाती थीं, लेकिन कानों में लगे तेज़ संगीत के कारण रश्मि ने कभी माँ का गाना सुना ही नहीं था। खेलते-खेलते पता नहीं कब आँख लग गई वरना अपने घर पर तो बिना दो-तीन घंटे फोन देखे नींद आती ही नहीं थी। जल्दी सोए तो बच्चे जल्दी उठ भी गए।

माँ तैयार थीं। माँ बोलीं- “अगले इतवार आती हूँ लेने, तब तक अपना ध्यान रखना।” कहकर माँ निकल गईं और उन्होंने मन में सोचा, “भगवान, बस मैंने जो किया है वह सफल हो जाए।” फिर बच्चों की दिनचर्या शुरू। उन्होंने नाश्ता किया। खेत घूमें। फलों के बाग से फल तोड़कर खाएं। उन्हें धीरे-धीरे मजा आना शुरू हुआ। फिर तो क्या मिट्टी, क्या कीचड़? सभी जगह उन्हें आनंद आने लगा। शाम को थककर फ़िर चूल्हे का खाना खाया और घोड़े बेचकर सो गए। अगले दिन फिर वही दिनचर्या। दो-तीन दिनों के अंदर बच्चों को एहसास होने लगा कि दिन के चौबीस घंटो में कितना मज़ा किया जा सकता है और हम थे कि पूरा दिन मोबाइल, टीवी वगैरह में खर्च कर देते थे। बच्चे समझ गए थे कि माँ ने उन्हें यहाँ क्यों भेजा। आखिर वे भी तो उन्हीं समझदार माँ के बच्चे हैं। अंततः शनिवार आ गया। कैसे? पता नहीं। माँ ने चौक वाले बूथ पर फोन किया, “बच्चों, मैं कल आ रही हूँ।” इस पर राहुल बोला, “नहीं माँ, मैं अपने छोटे भाई-बहनों को लेकर खुद ही आ जाऊंगा। मामाजी से टिकट भी मंगवा लिया है। तुम हमारी आँखें’खोलकर हमें समझदार और ज़िम्मेदार बनाना चाहती थीं न? लो, भगवान ने तुम्हारी सुन ली मेरी मदर इंडिया” कहकर राहुल खिलखिला उठा और दूसरी तरफ माँ भी। माँ ने कहा- “भगवान, तेरा लाख-लाख धन्यवाद। गए थे मेरे पाँच नालायक बच्चे और वनवास से लौटे हैं मेरे पाँच पांडव।”

<u>प्रथम पुरस्कार विजेता</u>

सुश्री आरती प्रिया दर्शनी,

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

चित्र-01 शिक्षा का सवेरा

आज भी हरिया और भोली का दिन रोज़ की तरह अपने खेतों से शुरू हुआ, पर आज ऐसा लग रहा था जैसे कुछ और फैलने वाला है। आसमान में सूरज की रोशनी के साथ शायद एक उम्मीद की किरण या एक नया सवेरा - ननुआ के जीवन में।

भोर से ही हरिया और उसकी पत्नी भोली अपने बेटे ननुआ के साथ खेत पर काम कर रहे थे। बीते दो वर्ष के बाद प्रभु की कृपा से इस साल अच्छी फसल हुई थी। हरिया की दरांती फसल काट रही थी। हाथों की गति से ज़्यादा उसके मस्तिष्क में साहूकार का क़र्ज़ चुकाने की जल्दी थी जो पैसा बीते दो साल में लिया था पेट पालने के लिए, वह रक्तबीज की तरह ब्याज से ब्याज जुड़कर मूलधन से भी कहीं अधिक हो गया था।

भोली कटी हुई फसल को जल्दी पैसों में परिवर्तित होने की कल्पना में मुस्कुराते हुए इतनी देर से देख तो हरिया को रही थी, पर आने वाले कार्तिक में दिवाली अच्छी मनेगी, यह सोचकर कुछ भी थकान नहीं महसूस कर रही थी। इन दोनों की अभिलाषाओं से दूर ननुआ बोझ उठाकर एक से दूसरी जगह डाल रहा था, बिना किसी उमंग, बिना किसी शिकायत के। शायद उसने मान लिया था कि यही उसकी नियति है, रोज़ सुबह उठना और अपने माता-पिता के साथ अपने खेतों पर आना। हाँ, उसे यही लगता था कि खेत अपने हैं जो पिछले दो साल से ज़मींदार मगनदीन के यहाँ गिरवी पड़े थे।

फसल के ढेर जो ननुआ से बहुत बड़ा है पर ननुआ की निराशा और उदासीनता से नहीं गरीबी और कर्ज़ के चलते उसने अपने माता पिता से किसी और चीज़ के बारे में सोचना तो दूर स्वप्न भी नहीं देखा होगा। यदि वह काम नहीं करेगा तो कर्ज़ कैसे चुकाएंगे? अपनी आठ साल की उम्र से ज़्यादा ज़िम्मेदारी का भार हमेशा उसके कंधों को थोड़ा झुकाकर रखता था। परंतु, आज ननुआ के अंतहीन उदास जीवन में एक अंकुर फूटने वाला था।

आज गाँव के प्रधान सेवकराम दौड़े-दौडे हरिया के पास आए और बोले-"सुन, सब बच्चे स्कूल जा रहे हैं, ननुआ यहाँ क्या कर रहा है? उसको भी स्कूल भेज।" हरिया इससे पहले प्रधान जी को जवाब देता कि उसके पास ननुआ को विद्यालय भेजने के लिए दी जाने वाली फीस के पैसे नहीं हैं, उसकी नज़र पड़ोस में रहने वाले किशन के बच्चों पर पड़ी जो पीठ पर बस्ता टाँगे बड़ी तेज़ी से विद्यालय की ओर बढ़े चले जा रहे थे। आश्चर्य से भरकर उसकी

आँखें भोली को देखने लगीं, एक अनकहा सवाल भोली के मुख में जैसे अटक कर रह गया क्योंकि वे दोनों जानते थे कि किशन की हालत तो उनसे भी खराब है। पर आज उसके बच्चों के मुख पर कुपोषण की रेखाओं के बदले एक नई ऊर्जा, एक नया भाव नज़र आ रहा है। विस्मय से प्रधान जी की तरफ देखा तो मानो प्रधान जी उनकी मनोदशा भाँप गए। हँसकर बोले- " ननुआ को विद्यालय भेजो। देखो, किशन के बच्चे भी जा रहे हैं। यहाँ सरकारी विद्यालय खुला है। हर बच्चे को प्राथमिक शिक्षा मुफ्त मिलेगी। प्रधान मंत्री बाल कल्याण योजना के अंतर्गत सरकारी विद्यालय में हर बच्चे को मुफ्त शिक्षा मिलेगी।" प्रधान जी की बात सुनते ही ननुआ की काली आंखों में एक चमक आ गई, वह छोटी सी चमक जो काफी थी एक अंधियारे कमरे में रोशनी की शुरूआत करने के लिए जिसके दरवाज़े ऐसे बंद थे जहाँ रोशनी की कोई उम्मीद भी नहीं की जा सकती हो।

भरी आँखों से हरिया ने कहा- "भोली, जा घर जाकर तैयार कर दे ननुआ को और जीने दे इसको इसका बचपन।" दोनों ने प्रधान जी का धन्यवाद करके घर की राह ली। तैयार होकर आज ननुआ चल पड़ा अपने जीवन के नए सफर पर, एक पहला कदम विद्यालय की ओर जो शायद बदल देगा उसके जीवन की दिशा। आज का सवेरा ननुआ के नाम।

चित्र-02 किनकी का मेला

किनकी आज नई साड़ी पहनकर जल्दी-जल्दी घर का कार्य निपटा रही थी। लग रहा था कि सारी फुर्ती उसके छोटे-छोटे हाथों में आ गई हैं क्योंकि आज उसे बड़े भाई चरणु के साथ मेंला देखने जाना है। माता-पिता के जाने के बाद चरणु ने बाहर की ज़िम्मेदारियों के साथ छोटी बहन किनकी की ज़िम्मेदारी भी उठा ली और किनकी ने घर के काम-काज और रख-रखाव की। चरणु भैया भी जल्दी ही आ गए थे। फिर तो किनकी की खुशियाँ उसकी आँखों में कोई भी पढ़ ले। दोनों भाई-बहन गाँव से बाहर लगे कार्तिक मेले में आ गए। महीनों से बचाए हुए पैसों को अपनी जेब में संभालता चरणु आज सोच रहा था कि किनकी जो बोलेगी उसे ज़रूर दिला दूँगा, मना नहीं करूंगा। आज तो किनकी का दिल तितली की तरह बहुत चंचल हो रहा था, ग्यारह वर्ष की किनकी मानो सात-आठ साल की बच्ची बन गई थी।

मेले में पहुँचते ही उसकी नज़र लड्डुओं पर पड़ी और चरणु को समझने में देर नहीं लगी कि पहले पेट पूजा फिर काम दूजा। दोनों भाई-बहन ने दो-दो लड्डू खाए और आगे बढ़ गए। शाम ढलने लगी थी, जगह-जगह रोशनी और लटकी कंदीले मानो आज हर किसी को ऐसे आकर्षित कर रही थीं जैसे मानो कोई यहाँ आए तो जाने का मन वहींकिसी कंदील में अटककर रह जाए। खेल दिखाने वाले, गेंद घुमाने वाले, करतब दिखाते हुए नट आदि किनकी को सब स्वप्न नगरी जैसे लग रहे थे। दूसरे गाँवों से भी बहुत लोग आए थे। धीरे-धीरे भीड़ बढ़ने लगी तो चरणु ने किनकी का हाथ ऐसे पकड़ लिया कि इस स्वप्न लोक की भूल-भुलैया में अपनी

सबसे कीमती गुड़िया से दूर न हो जाए। तभी चरणु किनकी को लेकर एक कोने में हो रहे नुक्कड़ नाटक की तरफ चल पड़ा। वहाँ जाकर उसे एक तो यह संतुष्टि हुई कि भीड़-भाड़ में किनकी खो न जाए, दूसरे नुक्कड़ नाटक में मनोरंजन के साथ-साथ समाज के लिए कोई न कोई अच्छा संदेश छुपा रहता है जिसे जानना उसके और उसकी बहन, दोनों के लिए उपयोगी होगा।

कुछ समाज-सुधारक और शहर से आए स्वयं सेवी संस्थाओं के लोगों ने समाज की कुप्रथाओं जैसे दहेज, अशिक्षा आदि के बारे में बताते हुए नारी सशक्तीकरण पर अपने विचार बताए। चरणु और किनकी आज मेले में आकर बहुत खुश हुए। आगे बढ़ते हुए उन्हें एक जगह कुछ महिलाएं लोकनृत्य करती हुई मिलीं। किनकी का मन हुआ कि वह भी उनके साथ शामिल हो ले। पर चरणु भला कहाँ किनकी का हाथ छोड़ने वाला था? मन मारकर किनकी चरणु के साथ आगे बढ़ी। जगह-जगह दुकानें सजी हुई थीं, तरह-तरह के सामान और खेल-खिलौने, सड़क के किनारे सजी हुई दुकानें आज ऐसे बुला रही थीं जैसे उनमें रखा सब सामान आपके ही साथ जाना चाहते हों। किनकी के चेहरे की चमक जो नृत्य न कर पाने की वजह से फीकी हो गई थी। वह नए जोड़े कपड़े देखते ही उजागर हो गई जो अभी-अभी चरणु ने उसे दिलाए थे। आज दोनों भाई-बहन ने मिलकर मेले में फिर से अपने बचपन को जिया। किनकी अब भी अपनी गुल्लक से लाए हुए पैसों को मुट्ठी में छुपाकर सोच रही थी कि अपने प्यारे भैया को क्या तोहफा खरीद दूँ? फिर उसे एक घड़ी की दुकान दिखाई दी जिसके पास जाकर चरणु ने सोचा कि किनकी यहाँ क्यों रुक गई? जब किनकी ने घड़ी अपने भाई के हाथ में लाकर दी तो चरणु की आँखों में पानी भर आया। जैसे माँ की ममता, छोटी बहन की भावनाओं से भाई की आँखों में बह जाने को आतुर हो।

दोनों भाई-बहन देर शाम अपने घर की ओर चल पड़े। खूब सारी बातें करते हुए अपनी अच्छी-बुरी यादों के पिटारे में एक और कार्तिक मेले की यादें जोड़कर सहेजे हुए घर पहुँचकर दोनों ने एक साथ कहा- “फिर चलेंगे अगले कार्तिक मेले में” और घर में एक निश्छल हँसी गूँज उठी।

<u>द्वितीय पुरस्कार विजेता</u>

सुश्री प्रतिमा शर्मा,

स्टेशन मास्टर

दक्षिण पश्चिम रेलवे, बेंगलूरु

चित्र-01 शिक्षा का महत्व

बरबसपुर गाँव में रामू नाम का एक किसान रहता था। वह एक झोंपड़ी में अपनी पत्नी माला व पुत्र विनायक के साथ रहता था। रामू तथा उसकी पत्नी एक ज़मींदार के खेत में काम करके जैसे-तैसे अपनी गुज़र-बसर करते थे। विनायक सात-आठ साल का बहुत ही मासूम बालक था। वह अपने माता-पिता को शाम खेत से आते देख अपने छोटे-छोटे हाथों से प्यार से पानी से भरा ग्लास दिया करता था जिसको इस तरह मुस्कुराते देख उसके माता-पिता की थकान उतर जाती थी। एक दिन विनायक ने भी सुबह-सुबह खेत चलने की ज़िद की कि वह भी खेत चलेगा। विनायक के माता पिता को लगा उसे खेत देखने होंगे, खेलना होगा। दिन भर घर पर रहता है तो वे उसे अपने साथ खेत ले जाते हैं। वह वहाँ अपने माता-पिता को काम करते देखता है कि वे कितनी मेहनत कर रहे हैं। विनायक भी कभी कुछ सामान उठाकर अपने पिता को देता, कभी माँ को पानी देता। उनका पुत्र कितना समझदार है रामू व माला यह देखकर खुश हो जाते।

ऐसे कुछ दिन जब विनायक खेत जाने लगा व वहाँ पर घास उठाकर रखने लगा तो एक दिन ज़मींदार ने विनायक को यह काम करते देख लिया। उसके पिता फसल काट रहे थे और माँ मिट्टी साफ कर रही थीं। उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि उनका पुत्र ऐसे काम कर रहा है। जब ज़मींदार आए और उन्होंने रामू व माला को डांटा कि वे इतने छोटे बच्चे से खेत में काम करा रहे हैं। ज़मींदार ने उन्हें समझाया कि- “देखो, विनायक की उम्र के बच्चे विद्यालय जाते हैं, पढ़ाई करते हैं।” क्योंकि ज़मींदार के बेटा-बेटी भी विद्यालय जाते थे पढ़ाई करते थे। ज़मींदार ने समझाया कि हमें बच्चों को विद्यालय भेजना चाहिए। “तुम लोग गरीब हो मुझे पता है। मैं इस बालक के विद्यालय जाने का प्रबंध करूंगा। पर इसे खेत में अब मत लेकर आना। तुम लोग भी नहीं चाहोगे कि वह बड़ा होकर खेत में काम करे, पढ़-लिख कर यह किसी बड़े ओहदे पर जा सकता है। तब तुम्हें मज़दूरी करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।” रामू और माला ज़मींदार से माफी मांगते हैं और विनायक को गले से लगा लेते हैं और उसे विद्यालय भेजने की खुशी में उनकी आँखें भर आती हैं।

सीख:- शिक्षा हमें हर मुश्किल परिस्थिति से निकालने में भले कारगर न हो, परंतु हमें उससे लड़ने की हिम्मत देती है। इसलिए शिक्षा का हक हर किसी को मिलना आवश्यक है, चाहे वह गरीब हो या अमीर।

चित्र-03 सुकून की तलाश

यह कहानी दिल्ली में रहने वाला एक छोटा सा परिवार- जिसमें एक पति, पत्नी (मिश्री और राहुल) और उनके तीन बच्चे सोनू, मोनू व पलक की है। मिश्री तथा राहुल दोनों ही किसी निजी कंपनी में अच्छे पद पर कार्यरत थे और तीनों बच्चे भी अच्छे विद्यालय में पढ़ने जाते थे। मिश्री व राहुल भी घर की ज़िम्मेदारी जैसे-तैसे अपने कार्य के साथ मिल-बांटकर निभाते थे। बच्चे भी सुबह विद्यालय, फिर कोचिंग, नृत्य कक्षाएं, खेल आदि में व्यस्त रहते थे। घर आकर मोबाइल में गेम खेलने के लिए लड़ना, टीवी के रिमोट के लिए झगड़ा करना और फिर माता-पिता के आने पर कभी बाहर का कुछ पिज्ज़ा, बर्गर या कभी घर का खाना खाकर सो जाना- यही दिनचर्या चल रही थी।

यह दिनचर्या बहुत ही थकान भरी होती थी। यह कभी-कभी मिश्री व राहुल में तू-तू मैं-मैं का कारण भी बनती थी क्योंकि वे ठीक तरह से बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते थे जिससे आए दिन विद्यालय से शिकायतें आती थीं। तब राहुल ने निर्णय लिया कि वे लोग कुछ दिन के लिए दादी के गाँव जाएंगे।

बच्चों को इस आरामदायक माहौल से जाने का मन नहीं था। परंतु राहुल ने उन्हें मना लिया। फिर जब ये दादी के गाँव पहुँचे वहाँ का माहौल उन्हें बहुत खूबसूरत लगा। हरे-भरे खेत,

खपरे वाली मिट्टी के घर, हर तरफ हरियाली, चिड़ियों का चहकना, पेड़-पौधे, ये सब देख सोनू-मोनू तथा पलक खुशी से झूम उठे। दादी के घर खाना खाकर ये गाँव भ्रमण के लिए निकल पड़े। उनकी नज़रें जहाँ तक जा रही थीं वहाँ तक खेत ही खेत, हरियाली ही दिख रही थी। इनका शहरी लिबास और बोलचाल देख गाँव के लोग इन्हें देख रहे थे। गाँव में दादी के साथ एक बालक रहता था जिसका नाम राजू था। वह सोनू-मोनू को देख उनके कपड़ों को बड़ी उत्सुकता से निहारता रहा।

जब यह परिवार गाँव घूमने गया तो राजू उन्हें उत्सुकता से देख रहा था और दादी से कहा कि- "मुझे भी ऐसे कपड़े पहनने हैं, मुझे भी ऐसी अंग्रेज़ी में बात करनी है।" फिर दादी ने उसे समझाया कि- "वे लोग तो खुद ही शहर की चमक-दमक छोड़कर गाँव में रहने आए हैं। यहाँ के सुकून भरे वातावरण का आनंद लेने आए हैं। शहर की दिनचर्या, चमक-दमक बहुत आकर्षक ज़रूर होती है बेटा। परंतु सुकून तो ऐसे ही माहौल में मिलता है। यहाँ हम परिवार के साथ दो पल आराम से बिता सकें। हम हमेशा उस माहौल में ही जीना चाहते हैं, जो हमने देखा नहीं, जिया नहीं पर यह चमक-दमक कुछ समय के आकर्षण होते हैं। इसलिए जो कुछ तुम्हारे पास है उसमें खुश रहो।" यह सुनकर राजू मुस्कुराते दादी का हाथ पकड़कर कहता है- "तो चलो दादी, हम भी खेत घूम कर आते हैं।"

शिक्षा- जीवन में हमें चमक-दमक की ओर ज़्यादा आकर्षित न होकर सच्चाई और सुकून की तलाश करनी चाहिए। परिवार और अपनों के साथ जीवन व्यतीत करना भी ज़रूरी होता है। हमें जीवन में दोनों पहलुओं के बीच सामंजस्य बिठाना ज़रूरी होता है, चाहे वह व्यस्ततम शहरी जीवन शैली हो या गाँव की हरियाली वाली सुकून भरी जीवनशैली।

तृतीय पुरस्कार विजेता

सुश्री ऐश्वर्या झरिया,

तकनीशियन बी

परमाणु खनिज़ निदेशालय, बेंगलूरु

चित्र-01 शिक्षा का महत्व

राम नाम का एक बालक था। राम बहुत ही समझदार और अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाला बालक था। उसके माता-पिता बहुत गरीब थे और गाँव के ज़मींदार के खेतों में काम करके अपना गुज़ारा करते थे। राम भी अपने माता-पिता के साथ खेती में मदद करने के लिए ज़मींदार के घर जाया करता था। राम के माता-पिता ने उसे स्कूल में दाखिल नहीं कराया था क्योंकि उनका मानना था कि अगर वह खेती में हाथ बंटाएगा तो घर में अधिक पैसे आएंगे। वे बिलकुल भी अपनी संतान की शिक्षा की अहमियत को लेकर जागरूक नहीं थे। ऐसा नहीं था कि राम को खेती करने में मज़ा आता था। उसका भी बाकी बच्चों की तरह स्कूल जाने का मन करता था। पर अपने माता-पिता से इतना प्रेम करता था कि उसे पता था कि अगर वह अपने माता-पिता से स्कूल भेजने के लिए कहेगा, तो वे दुखी हो जाएंगे क्योंकि घर में पैसा कम आएगा।

ज़मींदार के घर काम करते करते उसके दोनों बच्चे-चिंटू और पिंकी राम के बहुत प्रिय मित्र बन गए थे। जब भी वे दोनों पढ़ाई करते थे तो राम भी बगल में जाकर बैठ जाता था। ज़मींदार के बच्चों को अध्यापक घर में ट्यूशन देने आते थे तो राम भी अध्यापक का पढ़ाया सब कुछ सुनने की कोशिश करता था। एक बार अध्यापक ने दोनों बच्चों से कुछ सवाल पूछे। सवाल गणित के थे और थोड़े कठिन भी थे। दोनों में कोई भी उत्तर नहीं बता पाया। इतने में राम ने धीरे से उत्तर दे दिया। अध्यापक सही उत्तर सुनकर दंग रह गया। तब अध्यापक ने राम से पूछा कि उसने यह सब कहाँ से सीखा। राम ने बताया कि दूर से उनकी कक्षा को सुनकर ही उसे यह सब पता चला।

अध्यापक जान गए थे कि राम एक ऐसा बालक है जो बहुत ही तेज़ बुद्धि का है, जीवन में बहुत कुछ कर सकता है। उन्होंने इस घटना के बारे में ज़मींदार को बताया। ज़मींदार बहुत नेक दिल का था। उसने राम के माता-पिता को समझाने का तय किया। अगले दिन राम के माता-पिता काम पर आए तो ज़मींदार उनके पास गया और शिक्षा का महत्व समझाया। उन्हें समझाते हुए बोला कि आज शिक्षा नहीं प्राप्त करेगा तो दो पैसे घर में ज़्यादा आ जाएंगे। परंतु अगर आज उन दो पैसों को छोड़कर शिक्षा प्राप्त करने जाएगा तो आने वाले समय में अपने परिवार का भाग्य बदल देगा। यही नहीं, स्कूल जाएगा तो मिड-डे मील के ज़रिए उसे पोषण युक्त खाना भी मिलेगा।

उसके बाद ज़मींदार ने उस दिन वाली घटना राम के माता-पिता को बताई। वे भी दंग रह गए कि उनका बच्चा इतना समझदार है और उन्हें एहसास हुआ कि वे राम को शिक्षा न दिलाकर कितना बड़ा अनर्थ कर रहे थे। तभी ज़मींदार ने समझाया कि अभी भी देरी नहीं हुई है। उसने स्कूल जाते हुए अपने बच्चों की ओर इशारा करते हुए कहा कि अब से राम खेती न करके अपने दोस्तों के साथ स्कूल जाएगा। राम खुशी से झूम उठा और पूरा जीवन ज़मींदार के प्रति शुक्रगुज़ार रहा।

शिक्षा है तो प्रगति है।

चित्र-03 उस गाँव के पल

रघु, राजन और रीना मुंबई में रहते थे। तीनों भाई-बहन थे और शहरी तौर-तरीकों से रहना पसंद करते थे। कनव और शीना उनके माता-पिता थे जो बहुत साल पहले रोज़गार की तलाश में गाँव से शहर आए थे। गाँव में उस समय सूखा पड़ा था और रोज़गार के भी ज़्यादा ज़रिए उपलब्ध नहीं थे। कनव और शीना मुंबई आ गए और अपने माता-पिता के लिए पैसे भी भेजने लगे। वे दोनों अपने-अपने कामों में इतने व्यस्त हो गए कि उन्हें एहसास ही नहीं हुआ कि उनके बच्चे कितने बदल गए हैं।

जब एक बार गाँव से कनव के भाई का बेटा अपने तीनों भाई-बहनों से मिलने बहुत साल बाद आया तो वह बहुत दुखी होकर मुंबई से लौटा क्योंकि रघु, राजन और रीना को लगता था कि उनका भाई तो गाँव से आया है, उसे कुछ भी नहीं आता और वह शहरी तौर-तरीकों में रहना भी नहीं जानता। शीना यह सब देखकर बहुत दुखी हुई। उसने यह सब कनव को बताया। कनव भी चाहता था कि उसके बच्चे गाँव की अहमियत को समझें।

उन दोनों ने तय किया कि तीनों बच्चों को दादी के घर कुछ दिन के लिए लेकर जाएँगे। तीनों भाई-बहन जब मुंबई आए थे तब बहुत छोटे थे और गाँव के एहसास को अब वे भूल चुके थे।

कनव और रीना ने अपने-अपने ऑफिस से छुट्टी ली और तीनों को लेकर गर्मी की छुट्टीयों में दादी के यहाँ निकल पड़े। शुरू-शुरू में तो वे किसी से बात भी नहीं कर रहे थे पर धीरे-धीरे वहाँ पर सभी का प्यार पाकर वे थोड़ा बदलने लगे। यह उनके लिए हैरानी की बात थी कि पूरे गाँव से कोई न कोई आकर उनके लिए कुछ भेंट या खाने को कुछ देकर जाते थे

और गाँव का स्वादिष्ट खाना खाकर, जो कि एकदम शुद्ध था, वे शहर के पिज्ज़ा, बर्गर को तो भूल ही गए थे। गाँव की ठंडी हवाओं ने तो उनका मन मोह लिया था। उन्हें ए.सी. की कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई। जब बात दोस्तों की आई तो गाँव के सभी बच्चे तरह-तरह के खेल खेलते थे जिन्हें देखकर रघु, राजन और रीना से रुका नहीं जाता था और वे भी बाकी बच्चों के साथ खेलने लगते थे।

अब उन्हें टी.वी., मोबाइल आदि की भी कोई आवश्यकता नहीं थी। अब रोज़ रात में दादी की कहानियाँ सुने बिना उन्हें नींद नहीं आती थी। कनव और शीना यह देखकर बहुत खुश थे, उनका गाँव आने का मकसद पूरा हो गया था।

अब कनव और रीना ने वापस लौटने का फैसला किया। रघु, राघव, रीना यह सुनकर बहुत दुखी हो गए। अब उनका गाँव छोड़कर जाने का बिल्कुल भी मन नहीं था और वे अच्छे से समझ गए थे कि गाँव की एहमियत क्या होती है।

खैर, स्कूल की छुट्टियाँ भी खत्म हो रही थीं तो तीनों को पता था कि अब वे यहाँ नहीं रुक पाएंगे। पर उन्होंने अपने दोस्तों और दादी से वादा किया कि वे हर साल छुट्टियों में गाँव आएंगे। साथ ही, जाते-जाते उन्होंने अपने भाई से माफी भी मांगी जो कि मुंबई से निराश होकर लौटा था। इसी के साथ सबसे विदा लेकर तीनों अपने माता-पिता के साथ शहर के लिए निकल पड़े।

<u>प्रोत्साहन पुरस्कार-I विजेता</u>

सुश्री रिचा सरदाना,
डाक सहायक,
कर्नाटक सर्कल, बेंगलूरु

चित्र-01 शिक्षा "अनमोल गहना"

मानकपुर नाम का एक गाँव था। इस गाँव में एक किसान सोहन अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता था। यह बचपन से ही अपने पिता के साथ खेती करता। उसने कभी भी विद्यालय की तरफ रुख नहीं किया। वह और उसके परिवार के लोग अशिक्षित थे। वह कभी भी आज के इस दौर में शामिल नहीं हो पाया। उसका एक पुत्र था राजू जो अभी मात्र 6 वर्ष का था। उसकी उम्र के बच्चे अपने भविष्य को संवारने विद्यालय जाते जबकि राजू अपने माता-पिता के साथ रोज़ खेत पर जाकर अपने परिवार की मदद करता।

आजकल गाँव में विद्यालय होने के बावजूद भी लोग अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजते। फिर गाँव में शिक्षकों की नई भर्ती हुई जिसमें प्रताप नाम का एक शिक्षक था। जब प्रताप ने विद्यालय ज्वाइन किया तो देखा बच्चे तो बहुत ही कम संख्या में हैं जबकि इस गाँव की आबादी तो अच्छी खासी है। तो प्रताप ने सोचा चलो गाँव का दौरा किया जाए। जब वह विद्यालय से गाँव के बीचों-बीच जाने लगे तो देखा कुछ बच्चे जिसमें लड़के एवं लड़कियाँ दोनों हैं, विद्यालय की तरफ जा रहे हैं। यह देखकर प्रताप खुश हुआ और आगे बढ़ा। फिर इन्होंने देखा कुछ बच्चे खेल रहे हैं।

प्रताप ने उन बच्चों के माँ-बाप से बात की और उन्हें समझाया कि शिक्षा बहुत ज़रूरी है। सरकार शिक्षित नागरिक बनाने के लिए कई सारी योजनाएं चला रही हैं। बहुत चर्चा करने के बाद वे अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए राज़ी हो गए। प्रताप थोड़ी देर आगे चले तो उन्हें किसान सोहन का परिवार मिला जो अपनी पत्नी एवं बच्चे के साथ खेतों में काम कर रहा था। प्रताप देखकर दंग रह गया कि एक 6-7 साल का बच्चा धान की रोपाई कर रहा है। उसने सोहन से पूछा कि- "आपका बच्चा किस कक्षा में पढ़ता है?" सोहन बोला कि- "हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं कि हम इसे पढ़ने को भेजें और पढ़-लिखकर क्या करेगा?" इस पर प्रताप ने समझाया- "सरकार ने मुफ्त में शिक्षा देने के लिए इतनी योजनाएँ बनाई हैं, खाने के लिए मध्याह्न भोजन जैसी सुविधा दी है, पुस्तकें मुफ्त, पोशाक मुफ्त यहाँ तक कि आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति भी दी जाती है। अपने भविष्य के साथ तो खिलवाड़ कर लिया, कम से कम अपने बच्चे के साथ तो मत करो।"

फिर उसने राजू (सोहन के पुत्र) से पूछा कि- “पढ़कर क्या बनना चाहते हो?” राजू ने जवाब दिया- “कलेक्टर (जिला पदाधिकारी)।” इतना समझाने के बाद सोहन ने अपने पुत्र का नामांकन कराया और इसी तरह इस गाँव के हर एक घर से सब धीरे-धीरे शिक्षित हुए।

कहते हैं न शिक्षा एक अनमोल गहना है जिसे आपसे कोई भी चुरा नहीं सकता। बस इसी तरह फिर राजू ने अपने सपनों की उड़ान भरकर इसे पूरा किया और आज वह अपने ही जिला में जिला पदाधिकारी के पद पर कार्यरत है। वह कई गरीब बच्चों को मुफ़्त में शिक्षा प्रदान करता है और उसने कई अच्छे काम किए। आज उस जिले में कोई भी अशिक्षित नहीं है। बस इसी तरह हमें भी हर किसी को शिक्षा के मार्ग पर लाना है जिससे हमारा देश एक उन्नत देश कहलाएगा। एक शिक्षक के साथ-साथ हम पूरे नागरिकों का यह कर्तव्य है कि हम अपने आस-पास के लोगों को बुरी संगति और बुरी लत से अच्छे मार्ग पर लाएं।

कहते हैं न- “पढ़ेगा इंडिया तभी तो आगे बढ़ेगा इंडिया।”

चित्र-02 मेले का दृश्य

यह एक मेले का दृश्य है। यहाँ घूमने वाले और व्यापारी, दोनों ही खुश हैं। इस मेले में कोई भेदभाव नज़र नहीं आता, चाहे उसका लिंग, जाति, धर्म कुछ भी हो। इससे सब आनंदित हो रहे हैं। मेले में नाटक भी होते हैं जिससे हमें सीखने को भी मिलता है। इस तस्वीर में स्त्रियाँ कला दिखा रही हैं। कुछ लोग नृत्य कर रहे हैं। कितनी खुशी का दिन होता है न? आज कल तो यह मेला शहरों से गुम सा हो गया है। बच्चे हों या बूढ़े, हर कोई मेले की रंग-बिरंगी दुनिया में खो जाना चाहता है। इसमें चाट, गोलगप्पे, मिठाइयाँ, झूला सबकी बात ही अलग है।

आजकल हम आधुनिकता के दौर में इतने खो गए हैं कि गाँव का रुख तो सेवानिवृत्ति के बाद ही करते हैं, तब याद आता है कि वह भी एक दिन था। हम क्यूँ भूल जाते हैं कि जो भी जीवन है वह अभी ही है न ही वह कल था न ही वह परसों आएगा। इसलिए जो है वह आज ही है। आज को सँवारे, आज अच्छा होगा तब ही तो कल अच्छा होगा।

यह तस्वीर हमें सिखा रही है कि वो भी क्या दिन थे जब हमें हर पर्व पर नए कपड़े दिए जाते थे, पिताजी के साथ मेला घूमने जाते थे, उनके कंधों पर बैठकर मेला देखते और ऐसा अनुभव होता था कि हमने तो पूरी दुनिया की ही सैर कर ली। कुछ खिलौने लेना, नाटक

देखना। मेला हमें यही तो समझाता है कि हमने तो तुम सब में कोई भेदभाव नहीं किया है तो तुम सब खुद में क्यों करने लगे। यही एक दिन का मेला हमें इतनी खुशियाँ देता था जिसका इंतज़ार हम फिर एक वर्ष करते थे।

आज के दौर में पर्व आते हैं और जाते हैं। पर अब उतनी उत्सुकता नहीं रही। पहले लोग एक दूसरे से मिलकर बधाइयाँ देते थे, परंतु अब मोबाइल की आधुनिकता ने ज़िंदगी को एक कमरे में कैद कर दिया है। मैं यह नहीं कहती कि आधुनिकता ज़रूरी नहीं है। ज़रूरी है, किंतु इसका सदुपयोग करें न कि दुरुपयोग। क्योंकि ज़िंदगी एक बार ही मिलती है, इसलिए इसे खुलकर जिएँ, न कि व्यर्थ करें एवं अंत में सोच के पछताएं कि काश हमने अपने जीवन को आनंदमय तरीके से जिया होता।

आधुनिकता का यह दौर बहुत ज़रूरी है किंतु इतना नहीं। मेला हर बार आए, खुशियाँ लाए। एक फिल्म का गाना है - “मेला दिलों का आता है, एक बार आके चला जाता है।” और फिर हम इसका इंतज़ार पूरा वर्ष करें तो क्यों न हर एक दिन इसी दिन की तरह खुशियों से जिए? हर किसी से सौहार्दपूर्व तरीके से मिलें।

हर किसी से प्यार बाँटे। हर किसी की मदद करें। हम उनकी मदद करें वे हमारी मदद करें, इसे ही तो ज़िंदगी कहते हैं। मेला का मतलब ही है मिलजुलकर रहना।

<u>प्रोत्साहन पुरस्कार-II विजेता</u>

सुश्री खुशबू कुमारी,
वरीय लिपिक,
मंडल रेल प्रबंधक, बेंगलूरु

चित्र-03 गाँव का जीवन

सुरेश कुमार मांड्या जिले के श्रीरंगपट्टना तालुक में पैदा हु। कॉलेज में उत्तीर्ण होने के बाद बेंगलूरु शहर में नौकरी करने लगा। कुछ साल बाद शादी हुई और आठ साल में तीन बच्चे भी हुए। शहर की भगदड़ से उसका तन और मन निराश हो गया था। सुबह से शाम तक तनाव की ज़िंदगी बिता रहा था। न मन को सुकून और न तन को आराम। मनोरंजन के स्रोत से वह तंग आ गया था।

संयोग से उसके गाँव के मित्र रमेश ने उसे गाँव आने का निमंत्रण दिया। इस मौके का फायदा उठाकर सुरेश अपने बीवी और बच्चों के साथ गाँव पहुँचा। गाँव में लहराते खेत, पुराने मित्रों से मिलकर पुरानी यादें ताज़ी करके सुरेश बहुत खुश हुआ। बेंगलूरु की तनाव भरी ज़िंदगी को छोड़कर गाँव की तनाव रहित शैली का आनंद उठाते हुए सुरेश और उसका परिवार बहुत खुश हुआ। इससे साबित हुआ कि भारत गाँव में बसता है तथा गाँवों में लोग खुशहाल जीवन व्यतीत करते हैं।

चित्र-01 उज्ज्वल भविष्य

हनुमंतप्पा एक गरीब मज़दूर है जो अपने, अपनी पत्नी और बच्चे का पेट पालने के लिए ज़मींदार रामप्पा के खेत में मज़दूरी करता है। पूरे दिन की मज़दूरी करने पर उसे कुल ₹800/- ही मिलते हैं जिससे उसका खर्च निकालना बहुत मुश्किल होता है।

एक दिन गाँव की पाठशाला के प्राध्यापक रमेश कुमार ने हनुमंतप्पा के बेटे को खेत में काम करते हुए देखा तो बहुत मायूस हुए। उन्होंने हनुमंतप्पा को समझाया कि चंद पैसों के लिए अपने बच्चे का भविष्य खराब न करें और उसे पाठशाला में दाखिल कर, शिक्षित करें और उसका भविष्य उज्ज्वल करें। प्राध्यापक की बात मानकर उस बालक ने अच्छी शिक्षा प्राप्त की और आज किसी प्रतिष्ठित कंपनी में उच्च पद पर कार्यरत है।

प्रोत्साहन पुरस्कार-III विजेता
श्री मोहन राव सी ए,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्र.नि.लेप.(कें.), बेंगलूरु

नराकास (का.-2) की अंतर-कार्यालयीन हिंदी प्रतियोगिताओं के परिणाम

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2) के तत्वाधान में संयुक्त हिंदी दिवस के अवसर पर अक्टूबर-नवंबर 2024 के दौरान विभिन्न सदस्य-कार्यालयों की ओर से आयोजित अंतर-कार्यालयीन हिंदी प्रतियोगिताओं के तीनों कार्यालयों के विजेता निम्न हैं:

क्र. सं.	पुरस्कार विजेता के नाम पदनाम व कार्यालय (श्री/सुश्री)	प्राप्त पुरस्कार	प्रतियोगिता का नाम
1.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, कर्नाटक	प्रथम	राजभाषा लिखित प्रश्नोत्तरी
2.	आरती प्रिया दर्शनी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, बेंगलूरु	प्रथम	चित्र कहानी लेखन
3.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, कर्नाटक	द्वितीय	टिप्पण व आलेखन
4.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, कर्नाटक	द्वितीय	सामान्य ज्ञान लिखित प्रश्नोत्तरी
5.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, कर्नाटक	प्रोत्साहन पुरस्कार-II	स्मृति परीक्षण
6.	मोहन राव सी ए, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, बेंगलूरु	प्रोत्साहन पुरस्कार-III	चित्र कहानी लेखन
7.	मयंक कुमार 'मयंक', लेखापरीक्षक प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, कर्नाटक	प्रोत्साहन पुरस्कार-III	तस्वीर क्या बोलती है

प्रधान महालेखाकार (लेप.-I), कर्नाटक, प्रधान महालेखाकार (लेप.-II), कर्नाटक एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), बेंगलूरु के कार्यालयों के हिंदी पखवाड़ा- 2024 की विजेता सूची

प्रतियोगिता का नाम	पुरस्कार	विजेता के नाम, पदनाम व कार्यालय का नाम
एकल कविता पाठ (हिंदी भाषी)	प्रथम	सुश्री आरती प्रिया दर्शनी, व.लेप./प्र.नि.लेप.(कें.)
		श्री मयंक कुमार 'मयंक', लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	द्वितीय	श्री कपिल शर्मा, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	तृतीय	श्री दीपक कुमार, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	प्रोत्साहन	श्री विजय कुमार, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
एकल कविता पाठ (हिंदीतर भाषी)	प्रथम	सुश्री साईकृपा नाल्कुर, व.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	द्वितीय	श्री तेजस कुलकर्णी, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	तृतीय	सुश्री मेर्लिन पॉल, सहा.पर्य./प्र.नि.लेप.(कें.)
	प्रोत्साहन	सुश्री प्रियंका कर्माकर, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)
अनुवाद (हिंदी भाषी)	प्रथम	श्री मयंक कुमार 'मयंक', लेप./ प्र.म.ले.(लेप.-I)
	द्वितीय	सुश्री ओमना, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	तृतीय	श्री संजीव चंद्र पाठक, स.लेप.अ./ प्र.म.ले.(लेप.-II)
	प्रोत्साहन	सुश्री आरती प्रिया दर्शनी, व.लेप./प्र.नि.लेप.(कें.)
अनुवाद (हिंदीतर भाषी)	प्रथम	श्री मोहनराव सी.ए., व.लेप.अ./प्र.नि.लेप.(कें.)
	द्वितीय	सुश्री एम.वी.एस. रमालक्ष्मी, व.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.- II)

	तृतीय	श्री शिव शंकर मुखोपाध्याय, स.लेप.अ./प्र.नि.लेप.(कें.)
	प्रोत्साहन	श्री तेजस एस कुलकर्णी, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)
तंबोला (हिंदी भाषी)	प्रथम पंक्ति	श्री नीरज कुमार, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	द्वितीय पंक्ति	श्री नीरज कुमार, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-II) श्री जतन वधावन, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	तृतीय पंक्ति	श्री अनिल कुमार, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-II) सुश्री ओमना, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	पूर्ण हौज़ी	श्री रितेश, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
तंबोला (हिंदीतर भाषी)	प्रथम पंक्ति	सुश्री वीणा जोस, सहा.पर्य./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	द्वितीय पंक्ति	सुश्री शांतला देवी, सहा.पर्य./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	तृतीय पंक्ति	सुश्री रूपा पी, लिपिक/प्र.नि.लेप.(कें.)
	पूर्ण हौज़ी	सुश्री मरगतवल्ली एम, व.लेप.अ./प्र.नि.लेप.(कें.)
स्मृति परीक्षण (हिंदी भाषी)	प्रथम	श्री मयंक कुमार 'मयंक', लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	द्वितीय	श्री अरुण समाधिया, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	तृतीय	श्री हर्षवर्धन, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	प्रोत्साहन	सुश्री त्वरित तिवारी, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
स्मृति परीक्षण (हिंदीतर भाषी)	प्रथम	सुश्री वीणा जोस, सहा.पर्य./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	द्वितीय	सुश्री एन कविता कुमारी, सहा.पर्य./प्र.नि.लेप.(कें.)

	तृतीय	सुश्री शांतला देवी, सहा.पर्य./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	प्रोत्साहन	सुश्री एम.वी.एस. रमालक्ष्मी, व.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.- II)
वार्तालाप (हिंदी भाषी)	प्रथम	श्री मयंक कुमार 'मयंक', लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I) श्री उत्कर्ष यादव, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	द्वितीय	श्री गौरव सिंह, स.लेप.अ./ प्र.म.ले.(लेप.-I) श्री नीलेश, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	तृतीय	सुश्री सायमा सिदरा, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I) सुश्री ओमना, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	प्रोत्साहन	सुश्री निहारिका सेहरावत, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I) श्री विजय कुमार, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
वार्तालाप (हिंदीतर भाषी)	प्रथम	सुश्री एम.वी.एस. रमालक्ष्मी, व.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.- II) सुश्री साईकृपा नाल्कुर, व.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II)
	द्वितीय	श्री तेजस एस कुलकर्णी, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I) सुश्री अजिता जयदेवन, व.लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	तृतीय	सुश्री नीता मडिमन, सहा.पर्य./प्र.म.ले.(लेप.-II) सुश्री वीणा जोस, सहा.पर्य./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	प्रोत्साहन	सुश्री हेना टी.एस., स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-II) श्री किरण ए.एम., व.लेप./प्र.नि.लेप.(कें.)
लिखित प्रश्नोत्तरी (हिंदी भाषी)	प्रथम	श्री मयंक कुमार 'मयंक', लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	द्वितीय	सुश्री साधना सिंह, व.लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)

	तृतीय	सुश्री आरती प्रिया दर्शनी, व.लेप./प्र.नि.लेप.(कें.)
	प्रोत्साहन	श्री हर्षवर्धन, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
लिखित प्रश्नोत्तरी (हिंदीतर भाषी)	प्रथम	सुश्री आशा सुरेंद्रन, व.लेप.अ./प्र.नि.लेप.(कें.)
	द्वितीय	श्री सुप्रियो मंडल, लेप./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	तृतीय	श्री तेजस एस कुलकर्णी, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)
	प्रोत्साहन	सुश्री रोहिनी राय, स.लेप.अ./प्र.म.ले.(लेप.-I)

प्रधान महालेखाकार (लेप.-I), कर्नाटक, प्रधान महालेखाकार (लेप.-II), कर्नाटक एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), बेंगलूरु के वर्ष 2024-25 के दौरान सेवा-निवृत्त कार्मिक

क्र.सं.	नाम (श्री/सुश्री)	पदनाम	दिनांक	अभ्युक्तियाँ
1	उषा एस	व.लेप.अ.	30.04.2024	सेवा-निवृत्ति
2	शांतमूर्ती एस	पर्यवेक्षक	30.04.2024	सेवा-निवृत्ति
3	रुबेन	एमटीएस	30.04.2024	सेवा-निवृत्ति
4	निंगराजू	सहा. पर्यवेक्षक	30.04.2024	सेवा-निवृत्ति
5	रमेश डी	पर्यवेक्षक	30.04.2024	सेवा-निवृत्ति
6	रवि एस	व.लेप.अ.	31.05.2024	सेवा-निवृत्ति
7	केशवन के	व.लेप.अ.	31.05.2024	सेवा-निवृत्ति
8	मंजूनाथ सिंह एस पी	व.लेप.अ.	31.05.2024	सेवा-निवृत्ति
9	स्वर्णलता जी के	व. लेखापरीक्षक	31.05.2024	सेवा-निवृत्ति
10	सोमशेखर पी	निदेशक	24.06.2024	वीआरएस
11	शिवशंकर एल	सहा. पर्यवेक्षक	28.06.2024	सेवा-निवृत्ति
12	वेंकटेश	एमटीएस	28.06.2024	सेवा-निवृत्ति
13	श्रीनिवास ए	व.लेप.अ.	28.06.2024	सेवा-निवृत्ति
14	सुरेश अइतल एन	व.लेप.अ.	28.06.2024	सेवा-निवृत्ति
15	हरीश बी वी	व.लेप.अ.	04.07.2024	वीआरएस
16	सदाशिवशंकर आर	व.लेप.अ.	31.07.2024	सेवा-निवृत्ति
17	मोहन डी	पर्यवेक्षक	31.07.2024	सेवा-निवृत्ति
18	गोविंदराजू टी एन	सहा. पर्यवेक्षक	31.07.2024	सेवा-निवृत्ति
19	शिवराजू बी	सहा. पर्यवेक्षक	31.07.2024	सेवा-निवृत्ति
20	चिक्कण्णा एम	एमटीएस	31.08.2024	सेवा-निवृत्ति
21	राघवेंद्र बी एम	व.लेप.अ.	31.08.2024	सेवा-निवृत्ति
22	हरीप्रसाद आर	स.लेप.अ.	30.10.2024	सेवा-निवृत्ति
23	हनुमंतराजू वी	पर्यवेक्षक	30.10.2024	सेवा-निवृत्ति
24	ज्योति एच के	स.लेप.अ.	29.11.2024	सेवा-निवृत्ति
25	बलराम	व.लेप.अ.	31.12.2024	सेवा-निवृत्ति
26	श्रीनिवास मूर्ती के आर	व.लेप.अ.	20.01.2025	वीआरएस
27	गंगाधर एन ई	एमटीएस	31.01.2025	सेवा-निवृत्ति
28	अरुणा कुमारी आर	व.लेखापरीक्षक	31.01.2025	सेवा-निवृत्ति
29	विश्वनाथ वी	व.लेप.अ.	31.01.2025	सेवा-निवृत्ति
30	अनुपमा नारायण	व.लेप.अ.	19.02.2025	वीआरएस
31	जॉर्जकुट्टी फ्रॉंसिस	व.लेप.अ.	28.02.2025	सेवा-निवृत्ति
32	कंदस्वामी ज्ञानेश्वर	सहा. पर्यवेक्षक	31.03.2025	सेवा-निवृत्ति
33	दिलीप के हनगंडी	पर्यवेक्षक	31.03.2025	सेवा-निवृत्ति

प्रधान महालेखाकार (लेप.-I), कर्नाटक, प्रधान महालेखाकार (लेप.-II), कर्नाटक एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), बेंगलूरु में वर्ष 2024-25 के दौरान दिवंगत कार्मिक

स्व. श्री एम के उतप्पा, व.लेप.अ.

देहावसान की तिथि- 13.07.2024

स्व. सुश्री रंजीता बेहरा, व.लेप.अ.

देहावसान की तिथि-16.07.2024

स्व. श्री विवेक, लेखापरीक्षक

देहावसान की तिथि- 16.10.2024

स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर ऑडिट परिवार

कार्यालय में योग दिवस का आयोजन

कुवैत से आए प्रतिनिधियों के साथ बैठक

ऑडिट दिवस 2024 का उद्घाटन समारोह

ऑडिट दिवस 2024 के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएँ

कार्यालय प्रांगण में आयोजित
रक्तदान शिविर 2024

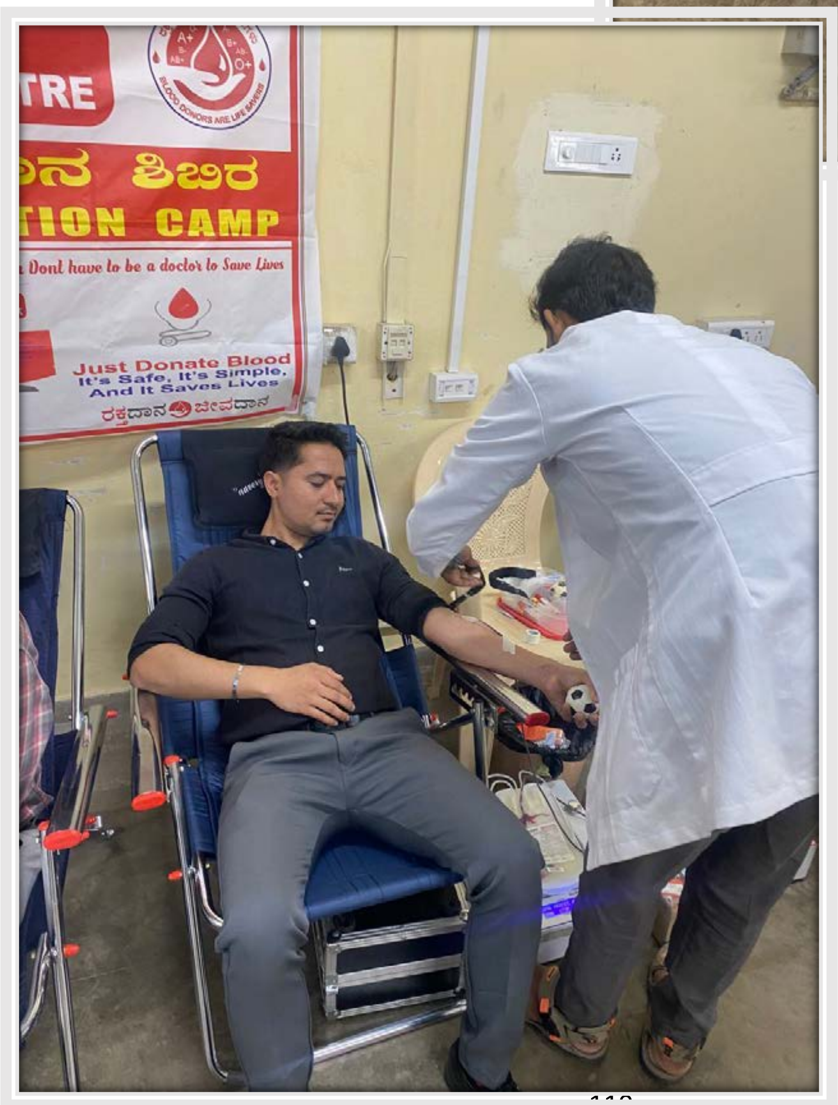

आईए एण्ड एडी साउथ ज़ोन हॉकी प्रतियोगिता

हिंदी पखवाड़ा 2024 का उद्घाटन करते हुए समूह अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा 2024 के उद्‌घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करते हुए सहायक निदेशक (राजभाषा)

हिंदी पखवाड़ा 2024 का शुभारंभ

सभा को संबोधित करते हुए उप महालेखाकार महोदय

मानननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी संदेश पढ़ती हुईं सहायक निदेशक (राभा.)

पखवाड़ा में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम

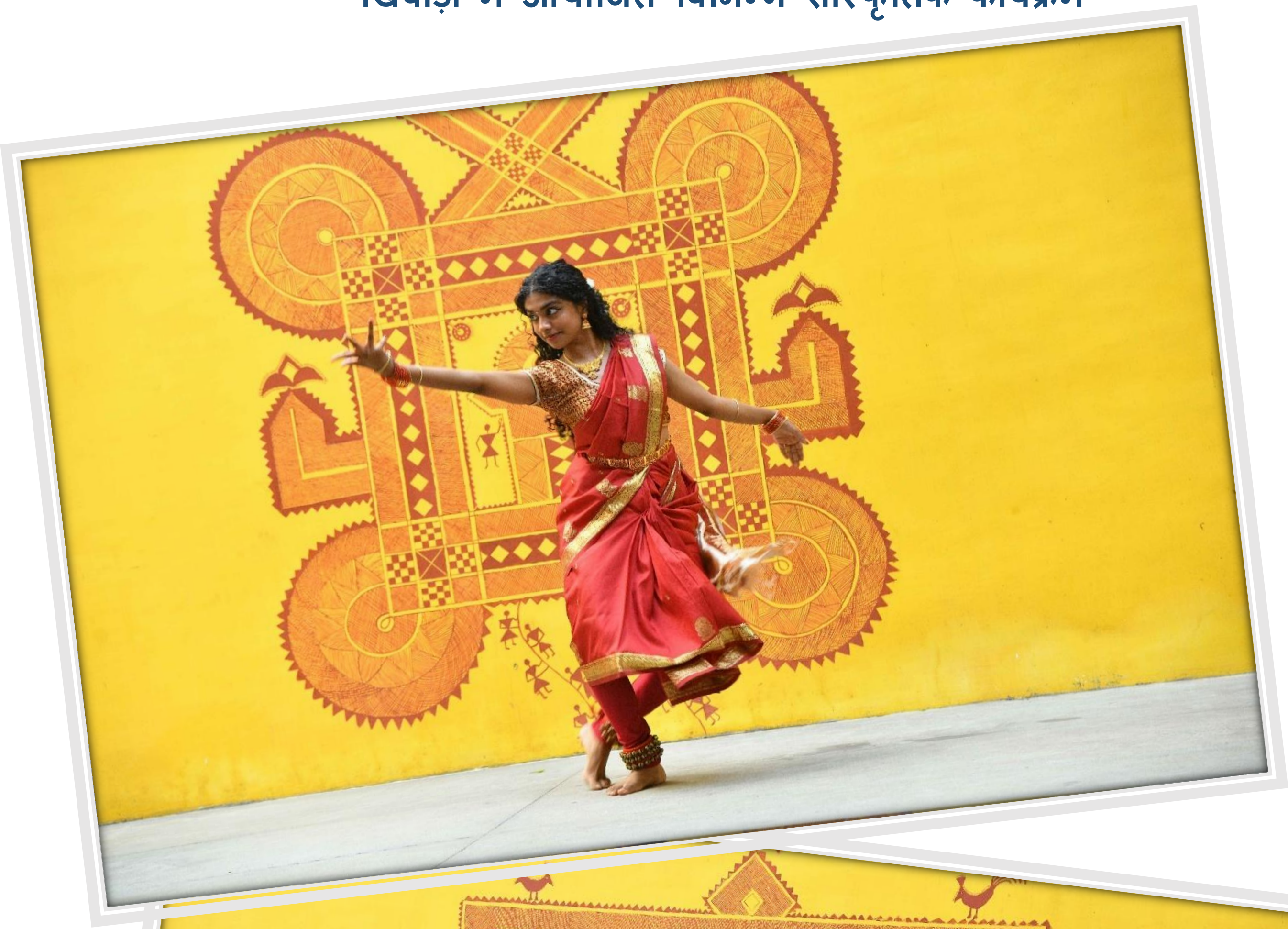

मंच संचालन

सुश्री नर्मदा कुमारी
वरिष्ठ अनुवादक

डॉ. वंदना एस.
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री माशुकी अख्तर
कनिष्ठ अनुवादक

श्री यश शर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी पखवाड़ा 2024 में पुरस्कार वितरण समारोह

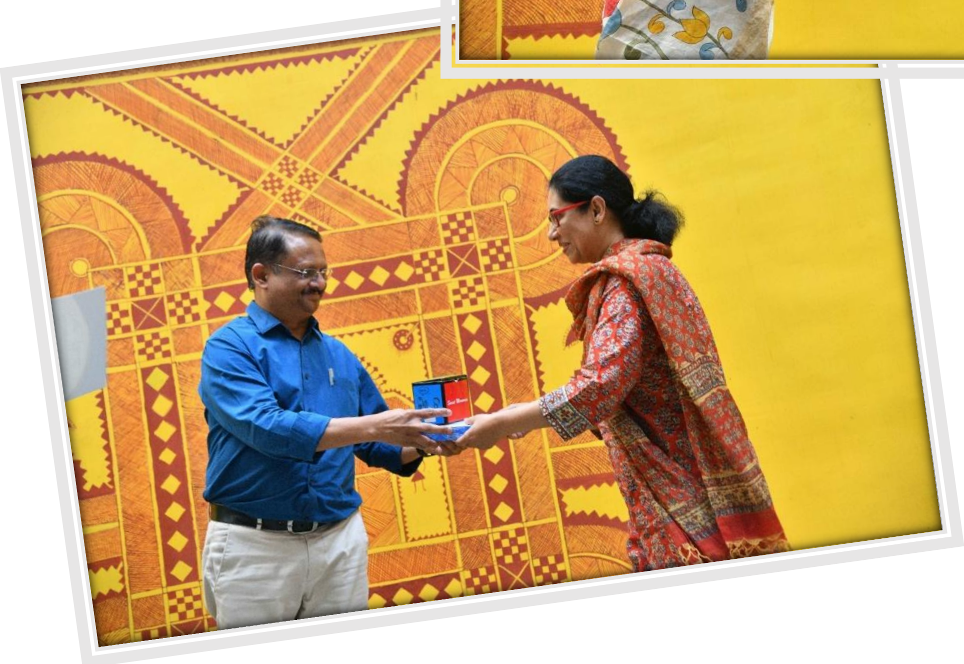

भाषा संगम
नमोनमः
తెలుగు
नमस्ते
নমস্কাৰ
ગુજરાતી
जोहार
آداب

संयुक्त राजभाषा परिवार